वार्षिक रिपोर्ट

1967—68

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्

परिचय

सितम्बर 1961 में स्थापित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् का काम है – शिक्षा संबंधी अनुसन्धान करना, इनमें सहायता देना, इन्हें बढ़ावा देना तथा इनमें समन्वय स्थापित करना, सेवा पूर्व और सेवा कालीन प्रशिक्षण व विस्तार कार्यक्रमों की व्यवस्था करना और शिक्षा की नवीन-तम तकनीकों और पद्धतियों से सम्बन्धित जानकारी देना। परिषद् द्वारा शिक्षा सबन्धी राष्ट्रीय महत्त्व के सर्वेक्षणों का आयोजन भी किया जाता है।

प्रस्तुत रिपोर्ट में राष्ट्रीय परिषद् तथा इसके अनुभागों—राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के ग्यारह विभाग और चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के उद्देश्यों के निमित्त हुए कार्यों को दिखाया गया है। इसे अनुसन्धान, प्रशिक्षण और विस्तार इन तीन मुख्य क्षेत्रों में बाँटा गया है। इसके अतिरिक्त परिषद् एक सूचना केन्द्र के रूप में भी कार्य करती है और आदर्श शैक्षिक साहित्य का प्रकाशन भी करती है।

गत वर्ष कुछ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों ने परिषद् को सहायता दी और इसके कार्य-क्रमों में भाग भी लिया। रिपोर्ट के अन्तिम अध्याय में उनके प्रति आभार प्रकट किया गया है।

परिषद् के अब तक हुए कार्यक्रमों की समीक्षा के लिए योजना आयोग के सदस्य (विज्ञान), डा. बी. डी. नागचौधरी की अध्यक्षता में भारत सरकार द्वारा संस्था के ज्ञापन-पत्र और नियमावलि के अनुच्छेद 6 के नियमों के अनुसार इस आलोच्य वर्ष की अवधि के दौरान एक समिति की नियुक्ति हुई जो एक महत्त्वपूर्ण विकास-कार्य है और पुनर्विकास के लिए सन्दर्शित रेखाएँ खींचता है। इस समिति के संगठन और इसके सन्दर्भ के नियम परिशिष्ट 10 में हैं।

विषय-सूची

परिचय — पृष्ठ

1. संगठन और प्रशासन — 1
2. अनुसन्धान, अध्ययन और अन्वेषण — 9
3. प्रशिक्षण — 24
4. विस्तार : क्षेत्रीय सेवाएँ — 36
5. हमारे स्कूलों में विज्ञान — 49
6. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का पुस्तकालय — 53
7. शैक्षिक साहित्य और साधन-सामग्री — 53
8. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय संपर्क — 57

परिशिष्ट

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंन्धान और प्रशिक्षण परिषद्—सदस्य — 60
2. शासी निकाय के सदस्यगण — 63
3. वित्त समिति के सदस्यगण — 64
4. शैक्षिक अध्ययन मण्डल के सदस्यगण — 65
5. स्थायी अनुसंन्धान समिति के सदस्यगण — 67
6. विस्तार और क्षेत्र सेवा समिति के सदस्यगण — 69
7. केन्द्रीय शैक्षिक साहित्य समिति के सदस्यगण — 70
8. 1968-69 के लिए बजट अनुमान — 71
9. 1967-68 में प्रकाशित व प्रकाशनाधीन पुस्तकों की सूची — 72
10. समीक्षा समिति के सदस्यगण — 77
11. समिति के सन्दर्भ नियम — 78

1. संगठन और प्रशासन

इस वर्ष बुनियादी शिक्षा विभाग को पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग में मिला दिया गया। अब राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में नीचे लिखे विभाग हैं :

1. विज्ञान शिक्षा विभाग
2. केन्द्रीय विज्ञान कारखाना
3. पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग
4. मनोवैज्ञानिक आधार विभाग
5. शिक्षा आधार विभाग
6. अध्यापक शिक्षण विभाग
7. शैक्षिक प्रशासन विभाग
8. श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभाग
9. क्षेत्र सेवा विभाग
10. प्रौढ़ शिक्षा विभाग
11. शैक्षिक सर्वेक्षण विभाग

इनके अतिरिक्त परिषद् में केन्द्रीय शिक्षा संस्थान और प्रकाशन विभाग है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के संगठन के चार्ट से परिषद् की प्रशासनिक कार्यविधि को समझा जा सकता है।

इस वर्ष के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभाग ग्रीन पार्क क्षेत्र में चले गए जिससे कि वे राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के कैम्पस के निकट हों। विज्ञान शिक्षा विभाग, मनोवैज्ञानिक आधार विभाग और पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग हौज खास के निकट राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की इमारतों में स्थित है। छः मंजिला विभागीय ब्लाक जो अभी बन रहा है, जुलाई, 1969 तक आवास के लिये तैयार हो जाएगा। क्षेत्र सेवा विभाग, शिक्षा सर्वेक्षण विभाग, अध्यापक शिक्षण विभाग, शैक्षिक प्रशासन विभाग और शिक्षा आधार विभाग इस समय हौज खास और ग्रीन पार्क क्षेत्र में किराए की इमारतों में काम कर रहे हैं। इन्हें कैम्पस में भेज देने का विचार है।

पहली अगस्त 1967 से राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के कैम्पस में और ग्रीन पार्क क्षेत्र में स्थित सभी विभागों के शासकीय और लेखा कार्यों को रजिस्ट्रार के पर्यवेक्षण में केन्द्रित किया जा चुका है।

इमारतें

शासी निकाय द्वारा स्वीकृत इमारत-कार्यक्रम के प्रथम चरण में निम्नलिखित निर्माण-कार्य होते थे—विज्ञान ब्लाक के लिये इमारत, अधिकारियों के लिए चौमंजिला होस्टल, व्याख्यान कक्ष, सभाभवन, गोष्ठी एवं क्लब के लिए ब्लाक, और दो गोदामघर और कैम्पस का विकास। इस निर्माण

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
शासी निकाय
वित्त समिति
शैक्षिक अध्ययन मण्डल
संस्थान
राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान
नई दिल्ली
केन्द्रीय शिक्षा संस्थान
दिल्ली
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर
और मैसूर
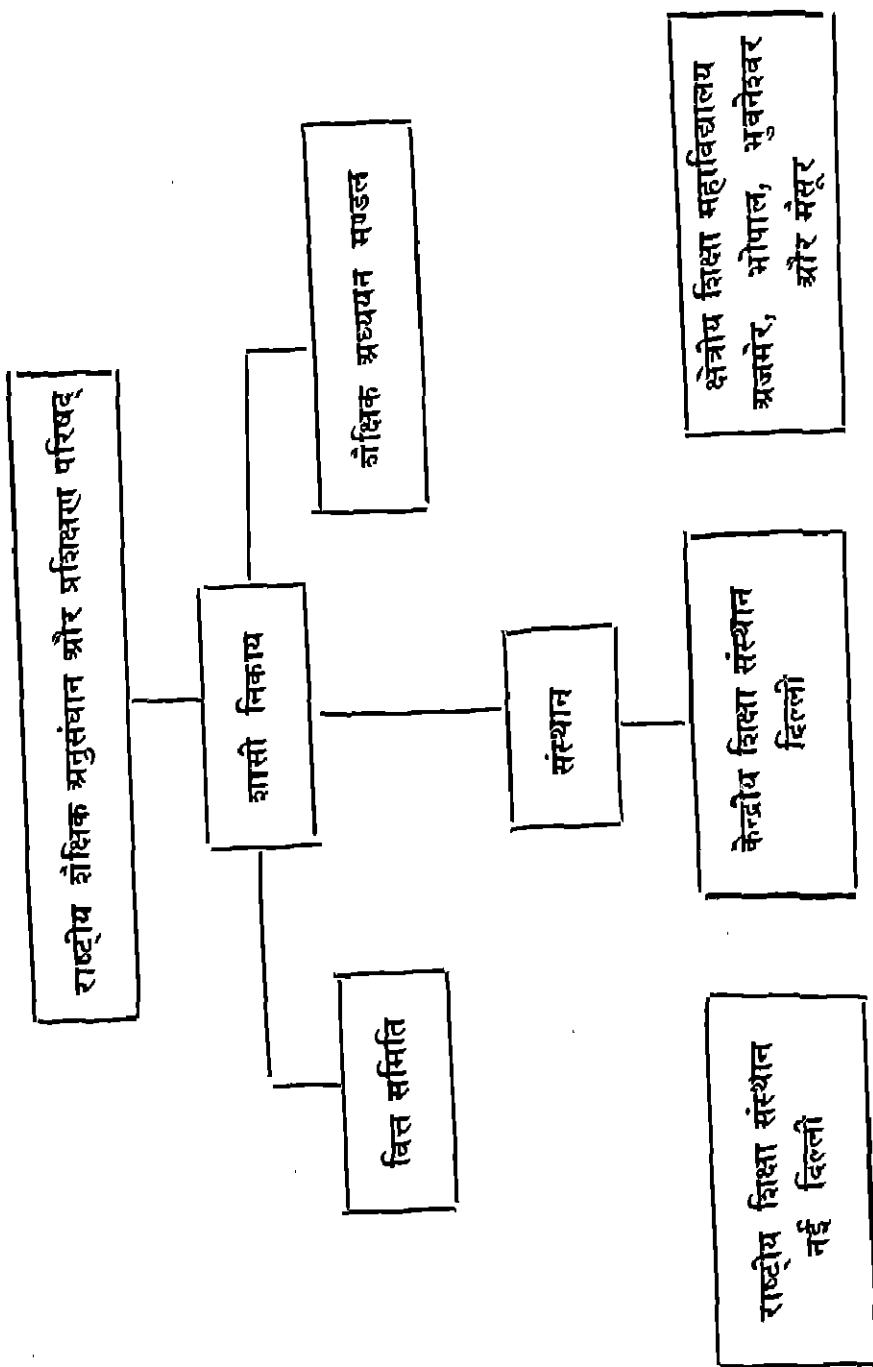
के लिए 37.07 लाख रुपयों के अनुमानित व्यय को मंजूर किया गया था। ये सारे भवन बन चुके हैं और इस्तेमाल में आ रहे हैं।

दूसरे चरण में 25 लाख रुपए की अनुमानित लागत पर छः मंजिला विभागीय ब्लाक, अधिकारियों के होस्टल पर दो और मंजिलें, केन्द्रीय विज्ञान कारखाना के लिये लाईघर और टाइप 1 किस्म के क्वार्टर 16 बनाने की मंजूरी दी गई है। ढलाई ब्लाक अधिकारियों के होस्टल के लिए दो अतिरिक्त मंजिलें और टाइप 1 किस्म के क्वार्टर बन गए हैं। विभागीय ब्लाक का निर्माण हो रहा है।

म्युनिसिपल जल संभरण इस समय कैम्पस में उपलब्ध नहीं हैं और इसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं। जल जमा करने के लिए एक टंकी का निर्माण कैम्पस में हो चुका है जिसमें 50,000 गैलन पानी आ सकेगा। जल-संभरण की उपलब्धि के हेतु दो नल कूप खोदे गए हैं। अभी तक हुए जल विश्लेषण के आधार पर यह पानी मानव-उपभोग के योग्य नहीं है।

परिषद् की वित्तीय स्थिति

परिषद् की निधियों में ये सम्मिलित हैं :

1. परिषद् के उद्देश्यों के प्रवर्तन के लिये भारत सरकार द्वारा दिए गए अनुदान।
2. अन्य स्रोतों से मिलने वाले अंशदान ।
3. परिषद् की परिसम्पत्ति से होने वाली आय और
4. अन्य स्रोतों से प्राप्तियां।

1967-68 में भी गत वर्षों के समान ही परिषद् की मुख्य निधियों के मुख्य स्रोत भारत सरकार से प्राप्त अनुदान ही थे।

1967-68 के लिए बजट और संशोधित अनुमान नीचे दिए गए हैं :

	बजट अनुमान 1967-68	संशोधित अनुमान 1967-68
योजनेतर	150.49 लाख रुपए	143.49लाख रुपए
योजना	174.58 लाख रुपए	171.58 लाख रुपए

रिक्त स्थानों की पूर्ति पर रोक लगे होने के कारण वर्तमान वित्त वर्ष की समाप्ति पर परिषद् को 10 लाख रुपए समर्पित करने होंगे। परिषद् के बजट अनुमान का ब्यौरा 1968-69 के लिए परिशिष्ट 8 में दिया गया है।

पद स्थापना और स्थानान्तरण

डा. शिव के. मित्रा ने 2 अक्टूबर, 1967 से संयुक्त निदेशक के कार्यभार को ग्रहण किया।

श्रीमती म्यूरिअल वसी और श्री एच. बी. मजूमदार ने अपने पैतृक विभाग में पुनर्प्रवेश के लिये परिषद् की सेवाएं छोड़ दीं। अपनी नियुक्ति की अवधि की समाप्त पर, डा. एस. एन. मुकर्जी ने परिषद् की सेवाएं 17 जनवरी, 1968 से छोड़ दीं।

परिषद् उनके द्वारा की गई सेवाओं के परिबोध को अपने रिकार्ड में रखना चाहती है।

कल्याण

प्रथम और द्वितीय श्रेणी के अधिकारियों के लगभग 250 पदों को स्थायी बना देने की क्रिया अपने अंतिम रूप में है। शेष बचे पदों के स्थायित्व पर भी काम हो रहा है।

सामान्य भविष्य निधि-सह-पेंशन सह-उपदान अंशदान भविष्य निधि-सह उपदान की योजना

योजना का मसौदा पूरा हो गया है। वित्त मंत्रालय भारत, सरकार ने अनुदर्शी प्रभाव से कर्मचारियों के लिए योजना के आरम्भ की मंजूरी 1 सितम्बर 1961 से दी है। इस विषय में अनिवार्य अधिसूचन निकाला जा रहा है।

वेतनमान में संशोधन

श्रेणी एक और दो के अधिकांश कर्मचारियों के, जिनके वेतनमान 1-11-1965 से संशोधित हुए थे, संशोधित वेतनमानों में स्थिरता के लिये आज्ञा-पत्र निकल चुके हैं। हालांकि कुछ मामले वित्त मन्त्रालय के सन्दर्भ में हैं।

अनुग्रह-पूर्वक-अदायगी

सेवा कालीन कर्मचारियों से देहावसान पर जिनके परिवार गरीबी की परिस्थितियों में रह जाते है, परिषद् ने अनुग्रह - पूर्वक-अदायगी की योजना की मंजूरी दी है। इस योजना के अन्तर्गत चार कर्मचारियों के परिवारों को 60 रुपए से 100 रुपए तक प्रतिमास अनुग्रह-पूर्वक-अदायगी देने की मंजूरी दी गई।

बैठकें

परिषद्

परिषद् की छठी सामान्य वार्षिक बैठक 29 अप्रैल, को 1967 को नई दिल्ली में हुई। लेफ्टिनेण्ट गवर्नर या मुख्य आयुक्त अथवा उनके प्रतिनिधि को संघीय राज्यों से परिषद् के सदस्यों के रूप में सम्मिलित करने का निर्णय किया गया तथा परिषद् के सदस्य बनाने हेतु उनका आवेदन किया गया।

शासी निकाय

वर्ष में शासी निकाय की दो बैठकें 27 अप्रैल, 1967 और 21 नवम्बर 1967 को हुईं। निम्नलिखित विषयों पर विचार किया गया :

(1) राष्ट्रीय परिषद् के नियमों के संशोधन के मसौदे पर विचार करने के लिए,

(2) परिषद् पर संघीय राज्यों के प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर विचार करने के लिए,

(3) नियुक्ति सभा में नए सदस्यों को मिलाने के प्रश्न पर विचार करने के लिए,

(4) कला शिक्षा के सुधार पर सभा द्वारा की गई सिफारिशों के प्रश्न पर विचार करने के लिए,

(5) परिषद् के सामान्य भविष्य निधि-सह/सामान्य भविष्य निधि-सह-पेन्शन से संबंधित नियमों के मसौदे पर विचार करने के लिए,

(6) (i) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के कर्मचारियों की नियुक्ति की आयु पर और (ii) राष्ट्रीय परिषद् के अन्तर्गत नियुक्त लोगों की वेतन-वृद्धि के अनुदान पर विचार करने के लिए,

(7) केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के भविष्यत निर्माण के लिए अंतिम निर्णय लेने के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए और

(8) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के निर्माण और विकास के लिए अध्यापक महाविद्यालय, कोलम्बिया विश्वविद्यालय के द्वारा सहायता की अधिप्राप्ति के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए ।

शैक्षिक अध्ययन मंडल

मंडल की बैठक 20 अप्रैल, 1967 को हुई ।
निम्नलिखित विषयों पर विचार किया गया :

(1) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के एसोसिएटशिप कोर्स के निर्देशित अध्ययनों की पाठ्यचर्या पर विचार करने के लिए,

(2) विकास के लिए नेहरू फाउण्डेशन अहमदाबाद और विज्ञान शिक्षा के सुधार के लिए दल को अनुदान देने के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए ,

(3) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण विभाग अमरीका की सात नई परियोजनाओं पर विचार करने के लिए,

(4) 1967-68 के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के विभागों के कामों के प्रोग्राम पर विचार करने के लिए और

(5) शिक्षा अनुसंधान परियोजना के लिए अनुदान के नियमों में संशोधन के अनुमोदन के लिए ।

वित्त समिति

वित्त समिति की दो बैठकें 23 अप्रैल, 1967 और 10 नवम्बर, 1967 को हुईं । निम्न-लिखित विषयों पर विचार किया गया :

(1) 1967-68 के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के बजट अनु-मान के लिए विस्तरित विनिधान पर विचार करने के लिए,

(2) 1967-68 के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के बजट अनुमान के पुनरीक्षण के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए ,

(3) परिषद् के सेवा-रत कर्मचारियों के देहावसान पर उनके परिवारों को अनुग्रह-पूर्वक-अदायगी के प्रश्न पर विचार करने के लिए,

(4) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के अन्तर्गत कामों की मंजूरी की नवीन प्रक्रिया पर विचार करने के लिए,

(5) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर द्वारा खर्च किए गए 52,711.54 रुपयों के व्यय को नियमित करने के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(6) खुली प्रतियोगिता द्वारा नियुक्ति सभाओं द्वारा चुने हुए राजकीय सरकारी कर्मचारियों के सम्बन्ध में पेन्शन और छुट्टी-वेतन अंशदान के शोधन के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(7) चार क्षेत्रीय महाविद्यालयों के पूर्ण विकास के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(8) पाठ्यचर्याओं में भाग लेने वाले सेवा-रत कर्मचारियों के लिए मुफ्त भोजन और निवास देने के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(9) चार क्षेत्रीय महाविद्यालयों में चिकित्साधिकारी के पद की आय दर के पुनरीक्षण पर विचार करने के लिए,

(10) मनोविज्ञान में प्रदर्शक के पद को मनोविज्ञान में लेक्चरर के पद में बदलने के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(11) (i) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के कर्मचारियों की रिटायर होने की आयु और (ii) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के अन्तर्गत नियुक्त व्यक्तियों के लिए वेतन वृद्धि के अनुदान के प्रस्तावों पर विचार करने के लिए,

(12) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के लेखा-कक्ष में अतिरिक्त कर्मचारियों के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(13) चार क्षेत्रीय महाविद्यालयों में अतिरिक्त स्टाफ के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(14) "भारतीय समाज में संस्थानों के रूप में प्रारंभिक और माध्यमिक स्कूलों के अध्ययन", मार्गदर्शी प्रायोजन से संबंधित प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(15) विशेष कला के कार्य के लिए कलाकारों को पारिश्रमिक देने की दर के संबंध में प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(16) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के जर्नल और भारतीय शैक्षिक समीक्षा में पुस्तक समीक्षा और उनके अंशदान के लिए परिषद् के कर्मचारियों के लिए मानदेय के अनुदान के लिए प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(17) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रकाशनों के विदेशी मुद्रा में मूल्य के निर्धारण के प्रस्ताव पर विचार के लिए,

(18) नर्सरी स्कूल के लिए इमारत के निर्माण के लिए मंसा गंगोत्री शैक्षिक समाज के लिए दिए जाने वाले सुमेलन अनुदान के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(19) उपयोग के सर्टीफिकेट के प्रचलन के संबंध में प्रक्रिया को सरल बनाने पर विचार करने के लिए,

(20) अनुसंधान परियोजना की रिपोर्टों की समीक्षा के लिए पारिश्रमिक देने के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(21) शैक्षिक योजना और प्रशासन के एशियाई संस्थान पर प्रतिनियुक्त हुए डा० एस० शुक्ला के संबंध में पेन्शन और छुट्टी वेतन अंशदान की वसूली की छूट के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(22) प्रवर आशुलिपिक और सहायक के पदों की आय-दर के युक्तिसंगत प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(23) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों से संबंधित निदर्शन बहुधंधी स्कूलों में प्राइमरी स्कूलों के खोलने के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(24) क्षेत्रीय महाविद्यालयों और उनसे संबंधित निदर्शन बहुधंधी स्कूलों के 3 और 4 श्रेणी के कर्मचारियों को वर्दी देने के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(25) श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभाग में श्रव्य-साधन कार्यभारी और प्रक्षेपी की पदसंज्ञा और आय मात्रा के पुनरीक्षण के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(26) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के कैम्पस में अधीक्षक के पद के सृजन के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(27) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान क विभागों के कर्मचारियों को निवास-स्थान देने के लिए प्राइवेट घरों को किराए पर देने के लिए वित्त-समिति द्वारा लिए गए निर्णय की रिपोर्ट के लिए,

(28) बी० एड० उपाधि से संबंधित ग्रीष्म कालीन स्कूल एवं पत्र व्यवहार पाठ्यचर्या में संलग्न गाइडों के पारिश्रमिक दरों की बढ़ोत्तरी के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(29) केन्द्रीय विज्ञान कारखाने में स्थित तकनीकी उपाधियों के पुनर्अभिधान के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(30) गुजराती और मराठी में कुछ चुने हुए विषयों में नैदानिक परीक्षणों के विकास के लिए सहकारी अनुसंधान परियोजना के लिए निधि के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(31) राष्ट्रीय इमारत संगठन द्वारा पुनःस्थापित "निम्न आय दल के लिए प्रायोगिक गृह" की योजना के अंतर्गत कर्मचारी वर्ग के सदस्यों को निवास-स्थान देने के लिए; राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के कैम्पस में मैदानों के ब्लाक के निर्माण के लिए प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(32) प्रो० डी० के० दातार, दिल्ली प्रशासन के सेवा निवृत प्रिंसिपल और उनकी परिषद् में पुनर्नियुक्ति पर आय के पुनर्नियतन के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(33) 1967-68 के लिए राष्ट्रीय परिषद् के संशोधित अनुमानों और वित्त वर्ष 1968-69 के लिए बजट अनुमानों पर विचार करने के लिए,

(34) प्राइमरी और माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में विस्तार सेवा केन्द्रों के लिए आवर्त्तक अनुदान की अधिकतम वृद्धि के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए,

(35) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के कैम्पस में एसोसिएटशिप पाठ्यचर्या के विद्यार्थियों के लिए हॉस्टल-मैस और चिकित्सा की सुविधा के लिए प्रबन्धों पर विचार करने के लिए,

(36) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के कुछ पदों के वेतन-मान के पुनरीक्षण के लिए, और

(37) दिल्ली प्रशासन द्वारा निर्धारित परिषद् की पाठ्यपुस्तकों की मात्रा और अंशदान के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए ।

इन समितियों के सदस्यों के नाम परिशिष्ट 1 से 7 तक में दिए गए हैं ।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और दिल्ली में केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के द्वारा कार्य करती है ।

2. अनुसन्धान, अध्ययन और अन्वेषण

भारत में शैक्षिक अनुसन्धान का प्रारम्भ हाल ही में हुआ है । इस उपेक्षा का कारण है—अंशतः तकनीकी जानकारी की कमी और अंशतः पैसे की कमी । अब यह बात स्वीकार कर ली गई है कि शिक्षा एक प्रकार का निवेश है और हमारे सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए शिक्षा का सुविचारित योजनाओं के आधार पर आयोजन किया जाना चाहिए और इसे शैक्षिक अध्ययनों, अन्वेषणों और अनुसन्धान से समृद्ध किया जाना चाहिए ।

शैक्षिक अनुसन्धान के क्षेत्र में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् को स्पष्ट रूप से एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करनी है । इसने अवबोधन और चिन्तन जैसी आधार-भूत प्रक्रियाओं की जांच का कार्यभार उठाया है और अनुसन्धान कार्य के सहकारी पक्ष पर जोर देने की नीति अपनाई है । इसी नीति के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों में अनुसन्धान कार्य को बढ़ावा दिया गया है और अन्य भारतीय संस्थाओं को भी, जो स्वतंत्र रूप से अथवा राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् के सहयोग से ऐसे कार्य शीघ्र करने में समर्थ है, अनुसन्धान-कार्य सौंपा गया है । परिषद् ने अनुसन्धान कार्यों के लिए धन दिया है और शैक्षिक अनुसन्धान के विकास के लिए आवश्यक तकनीकी जानकारी उपलब्ध करने के लिए नियमित पाठ्यक्रम द्वारा अनुसन्धान कर्त्ताओं का एक दल प्रशिक्षित किया है ।

शैक्षिक अध्ययन मंडल, जो कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् का शैक्षिक सलाहकार निकाय है, के अधीन दो स्थायी उप-समितियां हैं । पहली समिति है—स्थायी अनुसन्धान समिति जिसका 1967-68 में पुनर्गठन किया गया है । इस समिति का कार्य है अनुसन्धान के प्रमुख क्षेत्रों का निर्धारण करके विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों (राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान सहित) में शैक्षिक अनुसन्धान को बढावा देना और चुनी हुई संस्थाओं को अनुसन्धान-परियोजनाएं देना ।

अमरीकी सरकार के शिक्षा कार्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी अनुसन्धान कार्यक्रम के अन्तर्गत 1963-64 वर्ष में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् ने 9 महत्त्वपूर्ण विषयों पर अनु-सन्धान परियोजनाएं हाथ में ली है । सभी 9 परियोजाओं पर काम पूरा हो गया है और इनकी रिपोर्टें प्राप्त हो गई है । ये परियोजनाएं निम्नलिखित है :

(1) भारत में माध्यमिक स्कूलों के सर्वेक्षण की योजना ।

(2) हाई स्कूलों में उपलब्धि की अभिप्रेरणाओं का पता लगाना और उसके लिए प्रशिक्षण देना ।

(3) श्रेणी 8 और 11 के लिए हिन्दी में शैक्षिक अभिरुचि का पता लगाने के लिए परीक्षण की योजना ।

(4) माध्यमिक स्कूलों के निरीक्षण और पर्यवेक्षण के लिए मूल्यांकन के मानदण्ड निर्धारित करना ।

(5) भारत में प्राथमिक और मिडिल स्कूलों में अधूरी शिक्षा छोड़कर चले जाने से होने वाली हानि और गत्यावरोध (अगली कक्षा में न चढ़ सकना) के कारणों का पता लगाना ।

(6) स्कूल शिक्षा के तीनों स्तरों पर गणित विषय में उपलब्धि का सर्वेक्षण ।

(7) 1951-61 की अवधि में भारत में शिक्षा की लागत के बारे में अध्ययन करना ।

(8) प्रारम्भिक और माध्यमिक स्कूलों में प्रतिभावान छात्रों और प्रतिभाओं का पता लगाना ।

(9) उच्च माध्यमिक स्कूलों में गणित के पाठ्यक्रम और अध्ययन कार्य के विषय में अनुसन्धान करना ।

दूसरे चरण में अमरीकी सरकार के शिक्षा कार्यालय के सहयोग से निम्नलिखित परियोजनाओं पर कार्य आरम्भ हुआ लेकिन जुलाई 1968 से आगे अमरीकी सरकार से वित्त सहायता की स्वीकृति न मिलने के कारण इन परियोजनाओं पर कार्य बन्द कर देना पड़ा :

(1) स्कूल स्तर पर संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं द्वारा द्वितीय और तृतीय भाषाओं के सीखने के प्रभाव का अध्ययन ।

(2) सामाजिक विज्ञानों में अनुक्रमिक परीक्षणों का निर्माण और मानकीकरण ।

(3) प्राकृतिक विज्ञानों में अनुक्रमिक परीक्षणों का निर्माण और मानकीकरण ।

(4) भारत में स्कूल स्तर पर एककों में लागत का अध्ययन ।

(5) माध्यमिक स्कूलों के आदर्शों के विकास के लिए अध्ययन ।

शैक्षिक अध्ययन मंडल की द्वितीय स्थायी समिति, विस्तार और क्षेत्र सेवाओं की स्थायी समिति है ।

शैक्षिक सर्वेक्षण विभाग

द्वितीय सर्व-भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण पूर्ण हो चुका है और रिपोर्ट शिक्षा मंत्रालय को दे दी गई है । रिपोर्ट प्राइमरी, मिडिल और माध्यमिक स्तर की शिक्षा का स्कूल-सुविधाओं, स्कूल-इमारतों, प्राइमरी कक्षाओं के लिए खेल-मैदानों, अध्यापकों आदि के विशेष संदर्भ में व्यापक अध्ययन प्रदर्शित करती है । सर्वेक्षण से पता चलता है कि कुछ क्षेत्रों में जहाँ स्कूल की सुविधाएं सार्थक है, प्रवेश अक्षांक सबसे निम्नतम हैं ।

(1) **सर्वेक्षण की सामग्री के आधार पर शिक्षा के लिए जिला विकास योजनाओं की तैयारी**

अध्ययन का ध्येय प्रयोगात्मक स्तर पर शिक्षा के लिए जिला विकास योजनाओं की तैयारी के लिए सामग्री एकत्र करना है । यह कार्य विभिन्न राज्यों और संघीय राज्यों में आरम्भ हो गया है ।

(2) **चुने हुए ब्लाकों में शिक्षा का गहन अध्ययन**

सर्वेक्षण के दूसरे चरण का ध्येय अन्य बातों के साथ-साथ चुने हुए स्कूलों में शिक्षा के लिए मार्गदर्शी अध्ययन के रूप में गहन अध्ययन का है । अध्ययन का आयोजन काम नगर तालुक में हो चुका है ।

(3) शारीरिक शिक्षा के संस्थानों और विद्यालयों का सर्वेक्षण

सर्वेक्षण का ध्येय शारीरिक शिक्षा में हर वर्ष भाग लेने वाले अध्यापकों की गिनती और इन अध्यापकों को प्रशिक्षण देने वाले संस्थानों की दशाओं का अध्ययन करना है । इसके साथ-साथ ग्रहण शक्ति की क्षमता का ज्ञान करना, पाठ्यचर्या का विषय, मूल्यांकन विधियां, वजीफ़े और मुफ़्त लाभ, साधन-सुविधाएँ, अध्यापित कर्मचारी वर्ग और शारीरिक शिक्षा के प्रशिक्षित अध्यापकों की नियुक्ति का पूर्वेक्षण करना आदि का अध्ययन भी सर्वेक्षण का ध्येय है ।

(4) बहुधन्धी उच्च और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों, जिनमें कृषि और क्रियात्मक सरिता हैं, का सर्वेक्षण करना

अध्ययन का ध्येय स्कूल स्तर पर कृषि और क्रियात्मक शिक्षा का सुधार करना है । बिहार के अतिरिक्त सभी राज्यों में अध्ययन आरम्भ हो चुका है ।

(5) शारीरिक रूप से अक्षम्य बच्चों के लिए स्कूलों व संस्थानों का सर्वेक्षण

सारे देश में अन्धे, मूक और बहिरों के लिए संस्थानों में सर्वेक्षण का कार्य आरम्भ हो चुका है । अध्ययन का ध्येय शारीरिक सुविधाओं की खोज, पाठ्यक्रम उपकरण विषय, विधि-तन्त्र, कर्मचारियों की योग्यताएँ, कर्मचारियों पर कार्य-भार, कर्मचारियों की उपलब्धि, संस्थानों की वित्तीय दशा और प्रशिक्षण लेने वालों के लिए नियुक्ति के अवसर, पाठ्यचर्या की समाप्ति पर और इन संस्थानों में प्रचलित दशाओं के लिए साधारण सुझाव देना है ।

(6) लड़कियों की शिक्षा के विषय में विशेष अध्ययन

देश में लड़कियों की शिक्षा के विशेष महत्त्व को ध्यान में रख कर दो अध्ययन (क) क्षेत्रों में महिला अध्यापकों का सर्वेक्षण (ख) लड़कियों की शिक्षा के विशेष कार्यक्रम के सर्वेक्षण का काम आरम्भ हो चुका है ।

(7) भारत में माता-पिता और अध्यापक संस्थाओं का सर्वेक्षण

योजना-आयोग के निर्देशन पर स्कूलों में माता-पिता और अध्यापक संस्थाओं के अध्ययन का कार्य आरम्भ हो चुका है ।

मनोवैज्ञानिक आधार विभाग

(1) गेसेल की माला के अनुकूलन की सहायता से अढ़ाई से पाँच वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए मानक तैयार किए जा रहे हैं । इस प्रयोजन के अन्तर्गत व्यक्तिगत सामाजिक सामग्री और प्रेरक सामग्री का सारणीकरण हो चुका है ।

देशान्तरिक अध्ययन तीव्र गति से उन्नति कर रहा है । चार और साढ़े चार वर्ष की आयु तक के दो परीक्षण हो चुके हैं और तीसरा पाँच वर्ष की आयु में परीक्षण हो रहा है ।

(2) प्रतिपुष्टि के द्वारा अध्यापन व्यवहार का परिवर्तन और शैक्षिक मानक

इसका ध्येय शैक्षिक व्यवहार के मानकों से सम्बन्धित अध्ययन-भागों का अध्ययन करना है क्योंकि यह मानक अध्यापक-शिष्यों के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन मानकों के विकास के उपायों के प्रयोग का है।

(3) सहकारी परीक्षण विकास परियोजना

इस परियोजना में प्रादेशिक भाषाओं में दो परीक्षणों का विकास है; (i) बुद्धि का मौखिक परीक्षण 7 से 16 वर्ष की आयु वालों के लिए और (ii) व्यवसाय रूचि-सूचि 14 से 25 वर्ष तक की आयु के लिए। ये शैक्षिक अनुसन्धान में साथ ही साथ विद्यार्थियों के निर्देशन में सहायक होंगे। परियोजना का आयोजन विभिन्न राज्यों में स्थापित केन्द्रों के द्वारा हो रहा है। दोनों परीक्षणों के लिए विषय लिए जा चुके हैं। केन्द्रों के अवैतनिक निर्देशकों के साथ सभा में प्रयोग के लिए विषय चुने गए और उनकी समीक्षा हुई। पर्याप्त उचित विषयों के न मिलने के कारण और विषय लिए जा रहे हैं।

(4) श्रेणी 8 और 9 के लिए हिन्दी में शैक्षिक अभिरूचि का पता लगाने के लिए परीक्षण: राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान/स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण विभाग अमरीका की परियोजना

इस परियोजना का उद्देश्य श्रेणी 8 और 11 के अन्त में शैक्षिक अभिरूचि की परख करने के लिए मानक परीक्षणों का विकास करना है। परियोजना की सामग्री का विश्लेषण हो चुका है और ताजे विषय-आंकड़े मानक और विश्वसनीयताऐं उन पाँचों राज्यों के लिए अलग-अलग बनाए गए हैं जहाँ हिन्दी का प्रयोग दोनों वर्ग स्तरों पर मातृ-भाषा के रूप में होता है। स्तर के जोड़ मानक अब तैयार हो रहे हैं और मानविकी सम्बन्धी कुछ सामग्री का विश्लेषण हो रहा है।

(5) प्रारम्भिक और माध्यमिक स्कूलों में प्रतिभावान छात्रों का पता लगाना—राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान/स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण विभाग अमरीका की परियोजना

इस योजना का लक्ष्य हिन्दी भाषी क्षेत्रों के प्रारम्भिक और माध्यमिक स्कूलों में प्रतिभावान छात्रों का पता लगाने के लिए क्रमबद्ध ढंग से परीक्षणों और उपकरणों का विकास करना है। रिपोर्ट अब तैयार हो गई है।

(6) राजस्थान और गुजरात राज्यों में शैक्षिक विकास की स्थिति का अध्ययन

परियोजना का ध्येय शैक्षिक विकास में शासिक व्यवहार के कार्य का और शासी प्रक्रिया से सम्बन्धित तत्वों का अध्ययन है। प्रथम चरण के लिए सामग्री एकत्रित हो चुकी है।

(7) शैक्षिकता से निपुण बालकों का अध्ययन

इस परियोजना का ध्येय शैक्षिकता से निपुण बालकों को व्यक्ति रूप में समझना है। कक्षा 7 से कक्षा 10 तक के कार्यक्रम की योजना तैयार हो गई है और

कुछ स्थानीय स्कूलों के प्रिंसिपलों को उनकी टिप्पणी के लिए भेजी गई है। अधिस्थापन पाठ्यचर्या और उसकी सभाओं का भाग लेने वाले स्कूलों के कर्मचारियों के साथ आयोजन हुआ और दो स्कूलों में बच्चों का परीक्षण हो चुका है। सामग्री में गुणांक उन्नतावस्था में है।

(8) हाई स्कूल के लड़कों में उपलब्धि अभिप्रेरणाएँ और इनके लिए प्रशिक्षण

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान/स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण विभाग अमरीका की परियोजना के क्रमांक में प्रयोजनों के अध्ययन में, दूसरा परीक्षण कक्षा ग्यारह के लड़कों को प्रशासित किया गया था जिन्होंने प्रशिक्षण लिया था जब वह कक्षा नवीं में जयपुर स्कूलों में थे। एक स्कूल का परिणाम यह प्रदर्शित करता है कि लड़के जो प्रशिक्षण ले रहे थे, उन्होंने रसायन-शास्त्र, भौतिक-विज्ञान और गणित में बोर्ड की दसवीं कक्षा की परीक्षा में उसी कक्षा के दूसरे लड़कों से अच्छा प्रदर्शन किया था। अध्यापकों ने भी दर निकाली कि परीक्षित लड़कों में उत्तरदायित्व की भावना, अभिक्रम और निशानी की निर्दिष्टता अपने सहपाठियों से अधिक है। अध्यापक और लड़के उच्च स्तर उपलब्धि अभिप्रेरणाओं के प्रदर्शन के लिए लगातार प्रशिक्षित हुए थे।

(9) स्कूल शिक्षा के तीन स्तरों पर गणित उपलब्धि सर्वेक्षण

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान/स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण विभाग अमरीका की परियोजना के क्रमांक में, प्राइमरी, मिडिल और हाई स्कूल स्तर के अन्त के गणित उपलब्धि के निर्धारण के लिए अध्ययन का आयोजन हुआ था। एकत्र की गई सामग्री का विश्लेषण हमारी गणित-शिक्षा मे बल और कमियाँ देखने के हेतु से हुआ था और विभिन्न दलों के लिए सांख्यिकी अक्षांक बनाए गए। सर्वेक्षण यह प्रकट करता है कि हमारी गणित शिक्षा में बहुत जरूरतें हैं। कार्यक्रम उच्च ध्येय को प्रतिबिंबित करने वाले विषयों के कार्यक्रम, तर्क और विनियोग के अन्तर्ग्रस्त बहुत निम्न था। सर्वेक्षण पाठ्यचर्या में एकत्रित सामग्री का हाई स्कूल के विद्यार्थियों की सामान्य में शिक्षा की तरफ रूचि और विशेष रूप से गणित में रूचि का अब विश्लेषण हो रहा है। डाएग्नोस्टिक परीक्षण, सर्वेक्षण पर आधारित सामग्री से योजित हो रहे हैं।

(10) भारतीय बच्चों में योग्यताओं और रूचियों का स्थायीकरण

अनुप्रस्थित काट अध्ययन की रिपोर्ट पूर्ण हो चुकी है। मुख्य जाँचें हैं: (1) स्तर और आयु योग्यता का विशेष प्रभाव (2) छः योग्य अध्यापन का आयु विकास घुमाव का अध्ययन विभिन्न विशेषताओं को प्रदर्शित करता है (3) योग्यताओं का विभेदीकरण तीव्र बच्चों में ज्यादा उद्घोषित हुआ है और (4) जबकि वर्ग और आयु ने कार्यक्रम के स्तर को प्रभावित करने के लिए परस्पर क्रिया की, ऐसा कोई भी प्रभाव बौद्धिक योग्यताओं के नमूने पर नहीं दिखाई दिया है। देशांतरीय अध्ययन के योग्य सामग्री और सामान्य रुचि सामग्री प्राप्त हो गई है और सांख्यकीय विश्लेषण आरम्भ हो गया है।

(11) समाज-मिति अध्ययन

परियोजना शीर्षक "सामाजिक कुशलता और लौकिक प्रक्रियाएं––उपेक्षित और अस्वीकृत" पूर्ण हो चुकी है। दूसरे अध्ययन "लौकिक, उपेक्षित और अस्वीकृतों की व्यक्तित्व विशेषताएँ शीर्षक के लिए सामग्री एकत्र हो गई है और विश्लेषण हो रहा है। चार स्थानीय स्कूलों में कक्षा में सामाजिक सम्बन्धों के सुधार में कुछ दल-परियोजनों का प्रयोग हो रहा है।

(12) आयु वर्ग 6-11 तक के बच्चों के कुछ चुने हुए लक्षणों का मूल्यांकन

अध्ययन का ध्येय आयु-दल 6-11 तक के प्राथमिक स्कूल के बच्चों के व्यक्तित्व के लक्षणों की जाँच-पड़ताल करना है। इस अध्ययन के लिए बच्चों की बढ़ोत्तरी पर संगत साहित्य और योग्यता क्रम निर्धारण की तैयारी का अध्ययन हुआ था। 42 प्राइमरी स्कूलों से, प्राथमिक शिक्षा में अन्वेषकों और प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों से सामग्री एकत्र हो चुकी है। इस सामग्री के आधार पर, इन लक्षणों की परिभाषा और विशिष्टता, उनकी पहचान के लिए योग्य स्कूल दशाएँ और सुपरिभाषित बिन्दुओं के साथ योग्यता क्रम निर्धारण विकसित हो चुकी हैं।

(13) अधिकार की तरफ किशोर अध्ययन के लिए पैमाने के व्यक्तित्व अन्वेषण का विकास

इस अध्ययन का ध्येय किशोर अवस्था में अनुसन्धान करना है। उपकरण तैयार हो चुके हैं और स्थानीय विद्यार्थियों के प्रयोग के लिए प्रशासित हो गए हैं। विद्यार्थियों की कुछ पृष्ठभूमि सामग्री भी एकत्र हो चुकी है। सामग्री का विश्लेषण हो रहा है। भारत में किशोरों पर होने वाले अध्ययन से सम्बन्धित सूचना भी एकत्र हो रही है और डाइरेक्टरी के लिए संकलित हो रही है।

(14) विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता और अध्यापन इत्यादि में अध्ययन

स्थानीय विद्यार्थी, अध्यापकों, शैक्षिक शासकों और संसद सदस्यों का विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता के प्रत्यक्ष ज्ञान का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए थर्सटीन नमूने पर पैमाने का विकास हो चुका है। पैमाने के प्रयोग के लिए रिपोर्ट और नियम पुस्तक तैयार हो चुकी है।

शैक्षिक प्रशासन विभाग

(1) विभिन्न राज्यों में शैक्षिक प्रणालियों के प्रशासनिक संगठन का अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य है––मुख्यालयों, मंडल और जिला स्तरों पर प्रशासनिक संगठन, सलाहकार और संविधिक निकायों के संगठन-कार्य, शिक्षा के लिए वित्तीय व्यवस्थाएँ, स्कूल निरीक्षण और पर्यवेक्षण, शिक्षा के क्षेत्र में स्वैच्छिक संस्थाओं का कार्य, सहायक अनुदान पद्धति और अध्यापकों की सेवा दशाओं आदि से संबंधित संदर्भ सामग्री को एकत्र करना और उसका विश्लेषण करना। उड़ीसा,

पंजाब और हरियाणा राज्यों के विषय में सामग्री एकत्र हो गई है और उसका विश्लेषण हो रहा है । महाराष्ट्र के विषय में सामग्री एकत्र हो रही है ।

(2) भारत के कुछ नगर निगमों में शिक्षा प्रशासन का अध्ययन

नगर निगमों में शिक्षा के प्रशासनिक संगठन का पुनरीक्षण इसका उद्देश्य है । दिल्ली नगर निगम का अध्ययन पूर्ण हो चुका है । मद्रास नगर निगम के लिए सामग्री एकत्र हो रही है ।

(3) राज्य अनिवार्य प्राइमरी शिक्षा धारा के मुख्य सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन का उद्देश्य — अनिवार्य शिक्षा लागू करने के लिए सांविधिक अधिनियमित करना है । सामग्री एकत्र करने के लिए प्रश्नावली विभिन्न राज्यों को भेजी गई थी और प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण हो रही है ।

(4) विभिन्न राज्यों में सहायक अनुदान योजना का अध्ययन

अध्ययन का उद्देश्य — सहायक अनुदान के नियमों और नियमनों के विषय में बुनियादी सूचना एकत्रित करना और सहायक अनुदान शासन से सम्बन्धित समस्याओं की सामान्यता है । रिपोर्ट का पहला मसौदा तैयार हो गया है ।

(5) भारत में शिक्षा आयोजन स्कूल शिक्षा में मात्रा विरुद्ध गुण

अध्ययन का उद्देश्य है चुने हुए राज्यों में मात्रा पर गुण के बल से सम्बन्धित तत्वों की निश्चियता करना । राजस्थान, पश्चिमी बंगाल, और महाराष्ट्र राज्यों से सामग्री एकत्रित हो चुकी है ।

(6) भारतीय संघ के विभिन्न राज्यों में शिक्षा योजना का शासकीय संगठन

परियोजना का उद्देश्य है शैक्षिक योजना के शासकीय संगठन का परीक्षण । परियोजना के लिए प्रश्नावली का उत्तर दान हुआ और सामग्री एकत्र करने के लिए विभिन्न राज्यों को भेजा गया ।

(7) योजनाव्यय को दिल्ली के माध्यमिक स्कूलों के पुस्तकालयों के लिए प्रयोग करने के सम्बन्ध में एक मार्ग दर्शन अध्ययन

इस जाँच का उद्देश्य है—यह पता लगाना कि योजना व्यय से प्राप्त पुस्तकालय सेवाओं का उचित लाभ उठाया जा रहा है अथवा नहीं । इसके लिए पुस्तक प्राप्ति से सम्बन्धित नीतियों, विभिन्न आयु वर्गों के बच्चों के लिए क्रय की गई पुस्तकों की प्रकृति, अध्यापकों के लिए खरीदी गई पुस्तकों की प्रकृति, स्कूल समय-सूचि में पुस्तकालय के प्रयोग के लिए दिया गया समय, अध्यापकों द्वारा की गई अनुवर्त्ती कार्यवाही आदि का अध्ययन आवश्यक है । अध्ययन पूर्ण हो गया है और रिपोर्ट तैयार हो गई है ।

(8) भारत में प्राथमिक और मिडिल स्कूलों में अधूरी शिक्षा छोड़कर चले जाने से होने वाली हानि और गत्यावरोध के कारणों का पता लगाना

इस अध्ययन के ये उद्देश्य हैं :

(१) शैक्षिक बरबादी और गत्यावरोध की मात्रा निश्चित करना ।

(2) बरबादी के कारणों का विश्लेषण

(3) प्रत्येक कारण का सापेक्षिक महत्त्व निश्चित करना।

इस परियोजना के अन्तर्गत महाराष्ट्र, राजस्थान और पंजाब राज्य तथा दिल्ली और हिमाचल प्रदेश के संघ क्षेत्रों का अध्ययन किया जा रहा है। अध्ययन पूर्ण हो चुका है और रिपोर्ट तैयार हो चुकी है।

पाठक्रम एवं मूल्यांकन विभाग

(1) आन्तरिक मूल्यांकन पर प्रयोगात्मक प्रयोजन

राजस्थान के माध्यमिक शिक्षा के बोर्ड की सहायता से विभाग ने 28 स्कूलों में अन्तर्ग्रस्त आन्तरिक मूल्यांकन की व्यापक योजना के विकासोन्मुख और प्रयत्न के लिए प्रयोजन आरम्भ किया। इस सफलता के फलस्वरूप, बोर्ड ने लगभग 900 माध्यमिक स्कूलों में आन्तरिक मूल्यांकन की व्यापक योजना के अनुवर्ती पैमाने का उपक्रम किया।

(2) परीक्षा सुधार के अनुवर्ती अध्ययन का निदर्शन बहुधन्धी स्कूलों में उपक्रम

1967 की परीक्षा के अनुपरीक्षण अध्ययन के रूप में हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, रसायन-शास्त्र, भौतिक-विज्ञान और जीव-विज्ञान के विषयों में परीक्षा में लगभग 500 प्रश्नपत्रों का विश्लेषण हुआ था और उनकी कठिनाइयों और विवेचन अक्षांक स्कूलों की भविष्य परीक्षा के प्रश्नपत्रों के सुधार के विचार से बनाए गए थे।

(3) विश्वविद्यालय की शिक्षा में परीक्षा सुधार योजना का विकास

अध्ययन का उद्देश्य है—विश्वविद्यालय स्तर पर परीक्षा की व्यापक योजना का विकास। राजस्थान, मेरठ, बंगलौर, सरदार पटेल और दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालयों के डीन, (संकाय अध्यक्ष), रीडर और प्रवर लेक्चररों ने इस योजना के विकास के लिए काम किया।

(4) भारत में विभिन्न राज्यों में अर्थशास्त्र पाठ्यचर्या का स्थिर अध्ययन

इस परियोजना के अन्तर्गत, विभिन्न राज्यों में उच्च माध्यमिक कक्षाओं के अर्थशास्त्र पाठ्यचर्या का विश्लेषण हो रहा है। अध्ययन उन्नतावस्था में है।

(5) माध्यमिक स्तर पर इतिहास अध्यापन की दशा का स्थिर अध्ययन

अध्ययन पूर्ण हो गया है और रिपोर्ट दी जा चुकी है।

(6) कार्य प्रयोग कला और उद्योग में मूल्यांकन का विकास

वर्ग एक से चार तक के लिए कला में मूल्यांकन से सम्बन्धित उद्देश्यों का सूत्रीकरण हुआ। उचित कला प्रक्रियाओं की सूची तैयार की गई। कार्य प्रयोग में कार्य प्रयोग के विचार और मार्गदर्शी रेखाएं पाठ्यक्रम योजना के लिए तैयार किए गए थे।

(7) स्कूल स्तर पर समन्वित पाठ्यक्रम योजना का विकास

सम्पूर्ण स्कूल स्तर के लिए समन्वित विकास योजना के विकास के लिए उपस्थित पाठ्यचर्या,

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों द्वारा तैयार किए गए और पाठ्यक्रम पर शिक्षा आयोजन की सिफारिशों का परीक्षण हुआ । प्राइमरी स्तर पर तत्त्वों की तैयारी का कार्य आरम्भ किया गया ।

(8) भाषा विज्ञानी योग्यताएँ परियोजना

इस प्रयोजन के अन्तर्गत, अध्ययन (1) हिन्दी क्रियाओं का अध्ययन और (2) हिन्दी क्रिया-विशेषणों के अध्ययन पूर्ण हो गए थे ।

(9) भाषा अध्ययन और अनुसन्धान परियोजना

अनुसन्धान परियोजना के शासी निकाय के निर्णयानुसार द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के अध्यापन के लिए निम्नलिखित अनुसन्धान के नमूने तैयार किए गए थे ।

(1) मातृ-भाषा में बच्चों की उपलब्धियों के उपस्थित स्तरों का और चुने हुए परिवर्तनों के साथ निम्न प्राइमरी, उच्च प्राइमरी और निम्न माध्यमिक स्तरों पर इनके सम्बन्धों का अध्ययन ।

(2) विभिन्न राज्यों में स्कूल पाठ्यक्रमों में भाषा की दशा का अध्ययन ।

(3) हिन्दी फोनोलोजी की विविधता का अध्ययन और इसका भाषी विश्लेषण और विस्तार

(10) बुनियादी शिक्षा का विकास

तृतीय पंचवर्षीय योजना में बनाए गए बुनियादी शिक्षा के विकास के प्रयोजन के अन्तर्गत निम्नलिखित उप-अध्ययन पूर्ण हो चुके हैं :

(1) बुनियादी शिक्षा के प्रतिरोध के कारणों का अभिनिर्धारण

(2) 1956 में शिक्षा मन्त्रालय द्वारा विकसित बेसिक विचारों से अन्तर की जाँच परिणामों के विचार से बेसिक स्कूलों की पाठ्यचर्या का विश्लेषण ।

(3) गुजरात के कुछ चुने हुए स्कूलों में जलपान कार्य का अध्ययन

(4) बेसिक शिक्षा पर मूल्यांकन समिति द्वारा बनाई गई सिफारिशों के कार्यरूप का मूल्यांकन और

(5) तृतीय पंचवर्षीय योजना में बुनियादी शिक्षा की उन्नति का अध्ययन

(11) पश्चिमी बंगाल में प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का एक गहरा अध्ययन

प्रशिक्षण संस्थानों के विभागों पर, कर्मचारी प्रतिरूप और देखभाल के विस्तार, पुस्तकालय और अध्यापन के तरीकों पर विश्लेषित सामग्री पूर्ण हो चुकी है । अध्ययन की मसौदा रिपोर्ट तैयार हो गई है ।

(12) गैर बेसिक स्कूलों के बेसिक ढांचे में अभिस्थापन मूल्यांकन कार्यक्रम

गैर बेसिक स्कूलों के बेसिक ढाँचे में अभिस्थापन का मार्ग-दर्शी अध्ययन दिल्ली प्रशासन में पूर्ण हो चुका है । अध्ययन यह प्रकट करता है कि बेसिक शिक्षा के कई प्रमुख तत्त्व जैसे कि उत्पादित मेन्युअल कार्य और सामाजिक जीवन कई स्कूलों में प्रस्तावित नहीं हुआ है ।

प्रौढ़ शिक्षा विभाग

निम्नलिखित अनुसन्धान कार्यक्रम शुरू हुए है :

(1) निकटस्थ क्षेत्रों में रहने वाले चुने हुए क्षेत्रीय समुदाय का समैकित और तुलनात्मक अध्ययन;

(2) सामाजिक शिक्षा के लिए जिम्मेदार जिला अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यचर्याओं का मूल्यांकन अध्ययन;

(3) भारत में अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के सामाजिक शिक्षा की व्याप्ति का अध्ययन;

(4) ग्राम्य-यौवन के लिए स्वास्थ्य शिक्षा-अनुसन्धान कार्य;

(5) कृषि पर मार्ग-दर्शी परियोजना का मूल्यांकन;

कृषि सुधार पर कृषकों के लिए जानकारी विकीर्ण करने के लिए दिल्ली के लगभग 80 गाँवों में अब सचित्र रेडियो सक्रिय हैं। मूल्यांकन प्रयोजन के मुख्य उद्देश्य कार्यक्रमों के प्रभावों का निम्न से (1) सदस्यों द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान, (2) स्थिति में परिवर्तन और (3) टेलीक्लब के सदस्यों के द्वारा वृत्तियों का पोषण, निर्धारण करना है।

(6) जन-जाति लोगों की आवश्यकताओं का विकास;

(7) भारत में चुने हुए संस्थानों में अधिक अवधि शिक्षा के कार्यक्रम का अध्ययन--स्थिर अध्ययन के अनुसन्धान के नमूने को अंतिम रूप दे दिया गया था।

(8) भारत में सफल प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम में अंशदान करने वाले तत्वों का अभिनिर्धारण-- अध्ययन के अनुसन्धान नमूने को अंतिम रूप दे दिया गया था

(9) शिक्षा स्तर से सम्बन्धित कृषि समुदाय के परिवर्तित प्रोननैस का अध्ययन।

(10) विद्यापीठों में भाग लेने वालों की आकांक्षाओं, रुचियों और आवश्यकताओं का अध्ययन।

श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभाग

निम्नलिखित अध्ययन पूर्ण हो चुके हैं:

(1) भारतीय विस्तार सेवा केन्द्रों/दृश्य स्नातकोत्तर प्रशिक्षण महाविद्यालयों के एककों में उपलब्ध श्रव्यसाधन और उपस्कर;

(2) श्रेणी पांच, छ: और सात के बच्चों की फोटोग्राफ में मुकाबले के रूप में फिल्म उपयोग का अध्ययन;

(3) सर्वेक्षण प्रयोजन शीर्षक "फिल्मों/फिल्मपट्टियों के उपयोग का विस्तार मद्रास राज्य के माध्यमिक स्कूलों में अनुदेश के माध्यम के रूप में";

(4) केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी के उपयोग का सर्वेक्षण;

(5) भारत में प्रशिक्षण महाविद्यालयों में श्रव्य-दृश्य शिक्षा की उपस्थित स्थिति का सर्वेक्षण;

अध्यापक शिक्षा विभाग

निम्नलिखित अनुसन्धान अध्ययन आरम्भ हो चुके हैं।

(1) माध्यमिक स्तर पर अध्यापक शिक्षा का द्वितीय राष्ट्रीय सर्वेक्षण

(2) प्राईमरी स्तर पर अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों का सर्व भारतीय सर्वेक्षण

(3) माध्यमिक प्रशिक्षण संस्थानों में मूल्यांकन क्रियाविधियों का तुलनात्मक अध्ययन ।

(4) अध्यापक शिक्षा के कार्य में आत्म-वास्तविकता का अध्ययन
तीन फार्म तैयार और प्रिंट हुए थे और 1100 माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों को प्रेषित हुए थे। केरल, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र से प्राप्त प्रश्नावलियों की सामग्री का विश्लेषण आरम्भ हो चुका है ।

शिक्षा आधार विभाग

निम्नलिखित अनुसन्धान प्रयोजन प्रगतिशील अवस्था में है:

(1) भारत, नैपाल, अमरीका और रूस के शिक्षा विधान के णासी और व्यवस्थित पहलू

(2) भारत में स्कूल स्तर पर एककों में अध्ययन

(3) भाषा विवाद का ऐतिहासिक सर्वेक्षण (अनुदेश के माध्यम से)

(4) आधुनिक भारतीय शिक्षा विचारों का मूल्य

ब्रिटिश काल के आरम्भ से कोठारी आयोजन के अन्त तक मूल्यों का दार्शनिक अध्ययन शिक्षा के विचारों पर है ।

(5) ज्ञान के सिद्धान्त और शिक्षा के सिद्धान्त

(6) शिक्षा का सामाजिक ज्ञान, अन्वेषक और प्राथमिकता की समीक्षा

(7) भारतीय समाज और कालेज विद्यार्थियों के पारम्परित मूल्य

(8) भारत में स्कूल अध्यापक सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ता

(9) अध्यापन व्यवसाय के सामाजिक ज्ञान में अध्ययनों का निरीक्षण

(10) भारत में सैक्स शिक्षा : सामाजिक संदेश

(11) आधुनिकीकरण और शिक्षा के प्रकरण में भारतीय परिवार

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों द्वारा निम्नलिखित प्रयोजन आरम्भ हुए हैं ।

(1) प्रदर्शन स्कूलों में प्रायोगिक त्रैमासिक कार्यक्रम के लिए कृषि और उद्योगविद्या में व्यावसायिक कोर्स के लिए पाठ्यक्रम का विकास हुआ है ।

(2) राजस्थान के स्कूलों में कृषि के लिए अनुदेशित सुविधाओं का और अध्यापकों की प्रकृष्ट आवश्यकताओं का सर्वेक्षण ।

(3) ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्र-व्यवहार कोर्स से सम्बन्धित कोर्स में भाग लेने वाले विद्यार्थियों और अध्यापकों के मूल्यांकन पर आधारित ।

(4) विज्ञान विभाग के आधीन भौतिक-विज्ञान में पाठ्यचर्या का विश्लेषण राजस्थान, दिल्ली और पंजाब में भौतिक-विज्ञान में बुनियादी विचार और उपविचारों की जाँच के लिए, जिसके लिए विशेष अनुदेश सामग्री और अध्यापन पहुँच का विकास, अध्ययन की विद्यार्थियों की खोज में सहायता के लिए होना चाहिए, हुआ था।

(5) राजस्थान राज्य में विभिन्न स्कूलों से विज्ञान शिक्षण के लिए नमूने पाठों का अध्ययन हुआ था जिसके आधार पर पत्रिका 'विज्ञान शिक्षा के लिए योजना' शिक्षा विभाग के द्वारा अध्यापकों के निर्देशन के लिए विकसित हुई है।

(6) विस्तार सेवाएं केन्द्रों ने अनुदेश सामग्री को (1) राष्ट्र संघ संघठन और (2) भारतीय न्याय-पालिका, पर अन्तिम रूप दिया।

(7) रसायन-विज्ञान विभाग में कर्मचारियों के द्वारा तीन पेपरों का प्रकाशन हुआ। (1) और (2) ब्रोमिन, इजेक्यूनोलिन और पियरीडिन के बीच प्रतिक्रिया का प्रकाश और शुद्ध गति विज्ञान और (3) लिथिग्रम सोप के जलीय मेल में बुटेनिटोज और 3 निथिलबुटेने-O1 का विलयन।

(क) एक वर्ष के बी. एड. कृषि कार्यक्रम में

1. कृषि में गृह-प्रयोजन
2. भारत संघठन के भविष्य के कृषक
3. कृषि में प्रौढ़ कृषि शिक्षा
4. कृषि-अध्यापकों के द्वारा अध्यापन के वार्षिक कार्यक्रम की योजना

(ख) चार वर्षीय कोर्स में

(i) अंग्रेजी में ज्ञान को उज्जवल करने के लिए प्रवेशकों के लिए 'नौ दिन का अंग्रेजी में गहरे कोर्स' का प्रयोग हुआ जिसके लिए वह प्रतिदिन उपस्थित अधिवेशन के शुरू में चार घण्टे अंग्रेजी के लिए अभिदर्शित करते थे। यह अंग्रेजी में भाषाओं के अनुसरण में, अंग्रेजी पुस्तकों का अच्छी तरह परामर्श लेने में हुआ और अंग्रेजी में विद्यार्थियों को लिखने और पढ़ने के अवरोधों को दूर करने में सहायक हुआ।

(ii) प्रयोग के आधार पर ग्रीष्मकालीन एवं पत्र-व्यवहार कोर्स के अध्यापकों के लिए बनाए गए स्थानाबद्ध कार्यक्रम के साथ, क्षेत्रीय केन्द्रों में पर्यवेक्षकों के लिए अभिस्थापन देने के द्वारा पर्यवेक्षण इन्तजामों को दृढ़ करने के लिए योजना बनाई गई है।

(ग) भौतिकी-विज्ञान विभाग में

(1) अजैव लवण के माइक्रो और से-माइक्रो विश्लेषणात्मक चार्ट तैयार हो गए हैं और उनका विद्यार्थियों के द्वारा अनुसरण हो रहा है। (2) प्रथम वर्ष बी. एस. सी; बी. एड. के विद्यार्थियों को परमाणु वर्ण और नियत कलित टबल को विस्तृत करते हुए चार्टों को तैयार करना पड़ा। इसी भाँति तृतीय वर्ष में समनुदेशन पहुंच का अनुगरण हो रहा है।

(घ) एक साल का बी. एड. विज्ञान

विद्यार्थियों को पी. एस. एस. सी., रसायन-अध्ययन, बी.एस.सी.एस. और एस.एम.एस.जी. और विभागीय कार्यक्रम के कुछ भाग के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम दी जा रही है।

अनुसन्धान अध्ययन

(9) अध्यापन में स्थान बद्धता के विभिन्न तत्वों से सम्बन्धित अनुसन्धान अध्ययन

व्यावहारिक अध्यापन के प्रभावित मूल्यांकन के लिए साधनों का उत्पादन हो गया है। प्रभावित स्थानबद्धत्ता के अध्ययन के लिए प्रश्नावली प्रशासित हो रही है। सहायक अध्यापकों, विद्यार्थी-अध्यापकों और कालेज के पर्यवेक्षकों के लिए स्थानवद्धता में विद्यार्थी-अध्यापकों, सहायक अध्यापकों और कालेज के पर्यवेक्षकोंके लिए समय-उपयोग पर अध्ययन।

(10) विकासोन्मुख संतोषजनक वरण प्रक्रियाओं पर उद्देशित अनुसन्धान अध्ययन
(11) कैम्पस में चार विभिन्न राज्यों के विद्यार्थियों के सम्बन्धों के अध्ययन का अन्वेषण
(12) दक्षिणी क्षेत्र में व्यवसाय के अध्यापकों की स्थिति पर अध्ययन

अनुसन्धान परियोजनाओं के लिए सहायक अनुदान को योजना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् अपने शैक्षिक अनुसन्धान कार्यक्रमों के अतिरिक्त जिन्हें राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित किया जाता है, विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभागों, राज्यों के शिक्षा संस्थानों, अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों और अन्य संस्थानों एवं संगठनों और व्यक्तियों को भी जो शिक्षा के क्षेत्र में अनुसन्धान करते हों, आर्थिक सहायता देती है। स्वीकृत अनुसन्धान प्रयोजनों का विस्तृत विवरण और 1967-68 में संस्थानों को ऐसे प्रयोजनों के लिए दी गई आर्थिक सहायता आगे दिखाई गई है।

1967-68 के दौरान बाहर के संस्थानों को शैक्षिक अनुसन्धान परियोजनाओं के लिए दी गई आर्थिक सहायता

क्र. सं.	संस्थान	योजना का शीर्षक	स्वीकृत्ति अनुदान की रकम (रुपयों में)
1.	लेडी इरविन कालेज, नई दिल्ली	बी० एस० सी० गृह विज्ञान कार्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम का मूल्यांकन	2620.32
2.	एम० ई० एस० अध्यापक महा-विद्यालय, मलेश्वरम	अंग्रेजी के अध्यापन की सुविधाओं की व्यवस्था में जाँच-पड़ताल / उपकरण साधन और विधि तन्त्र ।	46.50
3.	सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अनु-सन्धान परिषद्, पी० 277 और 278 बंगुर एवन्यू, कलकत्ता- 28	कलकत्ता महानगरी में स्कूल जानेवाले बच्चों में अनुशासनहीनता के मनोविज्ञा-निक निर्धारकों में अन्वेषण ।	2500.00
4.	बी० एम० इन्स्टीट्यूट, आश्रम रोड, नेहरू पुल के निकट, अहमदाबाद-9	छोटे बच्चों के शैक्षिक, सामाजिक और भावात्मक विकास के लिए अनुदैर्घ्य अध्ययन	1500.00
5.	सामाजिक विभाग, कर्नाटक विश्व-विद्यालय, धारवार	अनुसूचित जाति की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन ।	2000.00
6.	भारतीय उद्योग संस्थान, खड़गपुर, पश्चिमी बंगाल	भारतवर्ष में बोर्ड और विश्वविद्यालय की परीक्षाओं का प्रभाव और उनके सुधार के लिए सुझाव	8000.00
7.	एस० एन० डी० टी० महिला विश्व-विद्यालय, 1, नथीभाई ठैंकरसी रोड, क्वीन्स रोड, बम्बई-1	विश्वविद्यालय की विवाहित महिला छात्रों की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि और उनकी शैक्षिक समस्याएँ ।	6400.00
8.	इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद	अधिक, अवर और सामान्य निष्पत्ति के महाविद्यालय के विद्यार्थियों की समस्याएं	6820.00
9.	पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़	प्रतिभा सम्पन्न किशोरों की कुछ विशेष-ताओं का अध्ययन और तदात्मीकरण	5000.00

10. डा० (श्रीमती) लक्ष्मी मिश्रा द्वारा डा० बी० सी० मिश्रा, अध्यक्ष भूगोल विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, राजस्थान	भारत में नारी-शिक्षा के विषय के शोध-पत्र का प्रकाशन	750.00
11. एस० एन० डी० टी० डब्ल्यू० विश्वविद्यालय, 1 नथीभाई ठैकरसी रोड, क्वीन्स रोड, बम्बई-1	'भारत में नारी-शिक्षा पर ग्रन्थसूची' का प्रकाशन	500.00
12. डा० एन० आर० परासनिज, भावेज दागदी भवन, गोखले रोड, थाना (नौषद), महाराष्ट्र	थाना जिले में 'शिक्षा इतिहास और सर्वेक्षण' के विषय के शोध पत्र का प्रकाशन	500.00
13. डा० एस० के० ओद, शिक्षा में रीडर विद्या भवन, अध्यापक महाविद्यालय, उदयपुर	शैक्षिक नीतियों के निर्माण में रूचि लेने वाले वर्गों के कार्यों के सम्बन्धित कुछ आधुनिक शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन (इंगलैण्ड और भारत) विषय के शोध पत्र का प्रकाशन।	500.00
14. डा० एस० के० पाल, शिक्षा में रीडर इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद	"चार विभिन्न व्यवसायों के लिए तैयार होने वाले विद्यार्थियों की वैयक्तिक विशेषताएं" के विषय के शोध-पत्र का प्रकाशन	500.00
15. डा० बी० जी० देसाई, मनोविज्ञान में रीडर और संयुक्त-समन्वयवेत्ता, सामान्य शिक्षा-विभाग, बड़ौदा कानुकुंज का एम० एस० विश्वविद्यालय, सयाजी गंज, बड़ौदा	'उद्गमित यौवन' विषय के शोध-पत्र का प्रकाशन	500.00
	कुल अनुदान (रुपये)	38136.82

3. प्रशिक्षण

जहां तक प्रशिक्षण का सम्बन्ध है, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् का दायित्व दोहरा है। इसे शैक्षिक कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक चलाना पड़ता है और अध्यापकों और अनुसन्धान कर्मिकों को प्रशिक्षित करना पड़ता है। फलस्वरूप राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् ने अनुसन्धान कर्मिकों, शिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों के लिए विभिन्न अल्पकालीन और सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यचर्याओं को चलाने का काम हाथ में लिया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् की संकाय समिति ने इन सब कार्यक्रमों को मंजूर किया। इस कार्य का संक्षिप्त सारांश नीचे दिया गया है :

(1) विज्ञान में ग्रीष्मकालीन संस्थान

1963 से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए जीव-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, भौतिकी और गणित विषयों में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और यू० एस० ए० आई० डी० के सहयोग से विज्ञान में ग्रीष्मकालीन संस्थानों का आयोजन करती आ रही है। प्रत्येक संस्थान में लगभग 40 से 50 व्यक्तियों ने भाग लिया। यह ग्रीष्मकालीन संस्थान लगभग पांच से छः सप्ताह तक चले। इन संस्थानों का संचालन विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के साधकों के दल द्वारा हुआ। संस्थानों में ऐसी अन्वेषित प्रक्रियाओं पर, जिसका प्रयोग भाग लेने-वाले व्यक्ति प्रयोगशाला में प्रयोग के हेतु करते हैं, दत्त सामग्री के संग्रह के लिए और प्राप्त सामग्री के निरूपण पर जोर दिया। इन संस्थानों में प्रयोग की जानेवाली अध्यापन सामग्री वही है जिनका प्रयोग कुछ विकसित देशों में हो चुका है। 1967 वर्ष के दौरान 61 ग्रीष्मकालीन स्कूलों का आयोजन हुआ—जीव-विज्ञान–13, रसायन-शास्त्र–16, भौतिकी–17 और गणित–15। 1967-68 तक अनुमान लगाया जाता है कि लगभग 6700 अध्यापकों को इनके द्वारा प्रशिक्षण दिया जा चुका है। ऐसा प्रस्ताव रखा गया है कि भविष्य में ग्रीष्मकालीन संस्थान, विभिन्न अध्ययन दलों और विभागों द्वारा विकसित नवीन पाठ्यक्रम सामग्री, संस्थानों के कार्यक्रमों के आयोजन का आधार होना चाहिए। 1968 की ग्रीष्म के अन्त तक, 234 ग्रीष्मकालीन संस्थानों का आयोजन हो चुका है और इन पर 1963-67 तक कुल व्यय 65.36 लाख रुपए हो चुका है।

(2) मानविकी और कला में ग्रीष्मकालीन संस्थान

1967-68 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् ने मानविकी और कलाओं में आगे दिए गए ग्रीष्मकालीन संस्थानों का आयोजन किया।

विषय	संस्थान की संख्या	भाग लेने वाले (प्रयोजित)
1. इतिहास	2	100
2. भूगोल	2	100
3. अर्थशास्त्र	1	50
4. शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक पैमाना	1	50
5. अभिप्रेरण-अध्ययन और दल प्रक्रियाएं	1	50

1968 की ग्रीष्म के लिए, परिषद निम्नलिखित विषयों में संस्थान-आयोजन की योजना बना रही है :

विषय	संस्थाओं की संख्या	भाग लेने वाले (प्रयोजित)
1. भूगोल	4	200
2. भाषा विज्ञान और भाषा अध्यापन	1	50
3. भारतीय शिक्षा की समस्याएं	1	50
4. अनुसन्धान विधि तन्त्र और प्रयोगात्मक नमूने	1	50
5. अभिप्रेरण-अध्ययन और दल प्रक्रियाएं	1	50
6. सामाजिक शिक्षा	1	50

(3) प्रयोगात्मक स्कूल अध्यापकों के लिए नवीकर प्रशिक्षण कार्यक्रम

मिडिल स्तर पर विज्ञान के अध्ययन का पृथक अनुशासन के प्रयोगात्मक परियोजना की सफलता के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षित करना और उनका अनुस्थापन करना आवश्यक समझा गया जिससे इनको नवीन विषयों के साथ पर्याप्त परिचय प्राप्त हो । प्रारम्भ में 1966 में पांच सप्ताह की अवधि के ग्रीष्म-प्रशिक्षण के कार्यक्रम का आयोजन इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले 60 अध्यापकों के लिए हुआ था । वर्तमान वर्ष के अन्तर्गत कोई भी ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम का आयोजन नहीं हो सका लेकिन प्रयोगिक और प्रदर्शन की संशोधित प्रक्रियाओं की और विभिन्न विषयों में पढ़ाए जाने के कार्यक्रम सामग्री के विषय, कार्यक्रमों के विचार विमर्श के लिए सारे वर्ष भर में प्रत्येक विषय में मासिक सभाओं का आयोजन हुआ । इस कार्यक्रम ने अध्यापकों की अच्छी सक्षमता प्राप्त करने में और पाठ्यचर्या की सामग्री के सुधार के लिए आवश्यक प्रति-पुष्टि को प्राप्त करने के हेतु विभाग को योग्य बनाने में सहायता दी । 1968 के ग्रीष्म में चार सप्ताह की अवधि की पुर्नग्रीष्म नवीकर पाठ्यचर्या आयोजित होगी ।

(4) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अधिसदस्यता में पाठ्यचर्या

अनुसन्धान विधियों में प्रशिक्षित विशिष्टों को शीघ्र प्राप्त करने के लिए, क्षेत्र में शैक्षिक कार्य-

कर्त्ताओं के क्रियात्मक सामर्थ्य के योजित विकास के लिए, राष्ट्रीय परिषद के शैक्षिक अध्ययन बोर्ड ने 20-4-1967 को हुई सभा में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में निम्नलिखित डिप्लोमा पाठ्यचर्याओं के परिवर्तन के लिए अधिसदस्यता के संस्थान की सिफारिश की :

(1) अनुसन्धान विधि-तन्त्र में डिप्लोमा पाठ्यचर्या
(2) प्राथमिक शिक्षा में डिप्लोमा पाठ्यचर्या
(3) श्रव्य-दृश्य शिक्षा में डिप्लोमा पाठ्यचर्या

परिवर्तीय शासी निकाय ने 13 वी सभा में जो कि 27-4-67 को हुई कार्यक्रम की दीक्षा को 1967-68 के लिए स्वीकृत किया । 1967-68 में निम्नलिखित विशेषज्ञता के क्षेत्र प्रस्तुत किए गए :

(1) शिक्षा का अर्थशास्त्र और शैक्षिक योजना
(2) शैक्षिक प्रशासन
(3) शैक्षिक पैमाना और मूल्यांकन
(4) निर्देशन और परामर्श
(5) अनुसन्धान विधि-तन्त्र और
(6) विज्ञान शिक्षा

अधिसदस्यता की पाठ्यचर्या के प्रत्येक विद्यार्थी को 250 रुपए मासिक वजीफा दिया जाता है । पाठ्यचर्या का आरम्भ 40 विद्यार्थियों से हुआ लेकिन 5 विद्यार्थियों ने इसे पूर्ण किए बिना ही छोड़ दिया है । 30 जून, 1968 को लगभग 35 विद्यार्थी पाठ्यचर्या को पूर्ण करेंगे ।

(5) संशोधित अध्यापक प्रशिक्षण का कार्यक्रम

ऐसा अभिज्ञान हुआ है कि शिक्षा की विधियों और विज्ञान के अन्तर्विषय को सफलतापूर्ण समाकलित करने में रूढ़िवादी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान योग्य नहीं हैं । इस योजना के अन्तर्गत अध्यापक शिक्षा विभाग के सहयोग से भविष्य के विज्ञान अध्यापकों के प्रशिक्षण की व्यापकार्थ योजना तैयार हो रही है । ऐसे विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों, जिनमें दोनों विज्ञान संकाय और शिक्षा संकाय हैं, के द्वारा विज्ञान शिक्षकों के प्रशिक्षण को आरम्भ करने का प्रस्ताव रखा गया है । योजना में विज्ञान और गणित के अध्यापकों के लिए तीन प्रकार के प्रशिक्षण सम्मिलित हैं ।

(1) चुने हुये विज्ञान के उपाधि-महाविद्यालयों में माध्यमिक प्रमाण-पत्रधारियों के लिए दो वर्ष का कार्यक्रम
(2) चुने हुए विश्वविद्यालय केन्द्रों में उच्च और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के बी० एस० सी० ग्रेजुएट के लिए एक वर्ष का कार्यक्रम
(3) प्रशिक्षण संस्थानों के लिए भविष्य के विज्ञान शिक्षकों के लिए और साथ ही साथ माध्यमिक स्कूलों की उत्पादित पाठ्यचर्या के भविष्य के विज्ञान अध्यापकों के लिए दो वर्ष की उच्चतर स्तर की पाठ्यचर्या

यह अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्र अन्त में विभिन्न कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न पदार्थों के सेवारत प्रशिक्षण के निरन्तर कार्यक्रम के आयोजन के लिए उत्तरदायी होंगे । योजना के विस्तृत विवरण तैयार हो रहे हैं ।

(6) राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा की खोज की योजना

निपुण विद्यार्थियों की देखरेख करना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि यह वह विद्यार्थियों की जन-संख्या का वर्ग है जो कि अन्त में उच्च अध्ययनों और विज्ञान में अनुसन्धान के कार्यक्रमों में रत होंगे । ऐसी निपुणता की खोज के महत्त्व का अभिज्ञान हो गया है और मार्गदर्शी आधार पर 1963 में आरम्भ हुई विज्ञान प्रतिभा खोज की योजना अब प्रमुख वार्षिक लक्षण बन गया है । इस योजना के अन्तर्गत हर वर्ष माध्यमिक स्कूल स्तर के अन्त में 350 विद्यार्थियों का चुनाव होता है और बुनियादी विज्ञान कोर्स को चलाने में आर्थिक सहायता दी जाती है । प्रारम्भ में योजना प्रथम उपाधि स्तर तक ही सीमित थी लेकिन 1966 में इस योजना का विस्तार पी० एच० डी० स्तर तक पूर्ण विज्ञान के कोर्स के लिए सुविधाओं को उपलब्ध करने के लिए हुआ । 1964 में चुने गए विद्यार्थियों का प्रथम बन्ध इस वर्तमान वर्ष में इस विस्तारित योजना का लाभ उठा रहा है ।

इसके अतिरिक्त, योजना में पुस्तक अनुदान,लाभ उठाने वालों की ट्यूशन फीस की प्रति पूर्ति का भी प्रबन्ध है । निपुणता के पोषण के लिए वैज्ञानिकों के साथ घनिष्टता से काम करने के अवसरों, चुने हुए छात्रों को विज्ञान के समृद्धशाली कार्यक्रम को प्राप्त करने के योग्य करने के लिए हर वर्ष ग्रीष्मकालीन स्कूलों का आयोजन होता है । ऐसी आशा की जाती है कि इन चुने हुए छात्रों का दल भविष्य के वैज्ञानिक कार्यकर्त्ताओं को स्थायी आश्रय देगा । इस योजना के अन्तर्गत बी० एस० सी० और एम० एस० सी० स्तरों पर 514 छात्रों को वजीफा मिल रहा है और जुलाई, 1967 से आरम्भ होने वाले शैक्षिक वर्ष के लिए 350 छात्रों का चुनाव हुआ है । विभिन्न विश्वविद्यालय केन्द्रों में देश के विभिन्न भागों में वर्तमान वर्ष में 15 ग्रीष्मकालीन स्कूलों का आयोजन हुआ । इस वर्ष से माध्य-मिक स्कूल स्तर के अन्त में गणित प्रतिभा की खोज का कार्यक्रम आरम्भ हो चुका है । इस गणित-ओलम्पिक के लिए समस्याएं निर्मित और प्रिंट हो गई हैं । इनकी कापियां समस्या-सुलझाने की योग्यताओं को अनुपलित करने के लिए, 1968 की राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज की परीक्षा में भाग लेने वालों को भेजी जा रही हैं ।

केन्द्रीय शिक्षा संस्थान

शैक्षिक अधिवेशन 1967-68 में केन्द्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली में बी० एड० ट्रेनिंग के लिए 146 और एम० एड० उपाधि दैनिक पाठ्यचर्या के लिए 22 विद्यार्थी भर्ती किए गए हैं ।

इसके अतिरिक्त, बी० एड० ग्रीष्मकालीन एवं पत्र-व्यवहार पाठ्यचर्या के लिए 143 विद्यार्थी और एम० एड० अंशकालिक पाठ्यचर्या में 25 विद्यार्थी भर्ती हुए हैं । ऐसे उम्मीदवारों की अनुरूप गिनती जोकि वास्तव में इस परीक्षा में प्रवेशित हुए और उत्तीर्ण घोषित हुए अगले पृष्ठ पर दी गई है ।

पाठ्यचर्या	परीक्षा देने वालों की संख्या	उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों की संख्या
(1) सुव्यवस्थित बी० एड० उपाधि कोर्स	135	129*
(2) ग्रीष्म स्कूल एवं पत्र-व्यवहार बी० एड० उपाधि पाठ्यचर्या	137	90**
(3) एम० एड० उपाधि पाठ्यचर्या	22	22
(4) एम० एड० अंशकालिक पाठ्यचर्या	22	16

राष्ट्रीय परिषद् की शासी निकाय ने शैक्षिक काल 1968-69 के प्रारम्भ होने से पूर्व केन्द्रीय शिक्षा संस्थान की अभियुक्ति को दिल्ली विश्वविद्यालय को सौंपने का निर्णय किया। अभियुक्ति के स्थानान्तर के लिए प्रस्ताव की तैयारी विश्वविद्यालय के साथ हो रही है।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

क्षत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् की गतिविधियों का एक महत्त्वपूर्ण अंग हैं क्योंकि ये महाविद्यालय अध्यापक-प्रशिक्षण कार्य में एक नए प्रयोग का प्रतिनिधित्व करते हैं। महाविद्यालय ऐसी कई प्रकार की पाठ्यचर्याएं उपलब्ध करते हैं जिनमें विषय-वस्तु और शिक्षा शास्त्रीय प्रशिक्षण समाकलित कर लिए जाते हैं।

इस समय माध्यमिक स्कूलों में बड़ी संख्या में अप्रशिक्षित अध्यापक हैं। यह सोच कर कि सामान्य साधनों द्वारा इन शेष बचे हुए लोगों को प्रशिक्षण देना संभव नहीं हो सकेगा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद ने चारों क्षेत्रीय महाविद्यालयों में बी० एड० उपाधि के लिए ग्रीष्मकालीन विद्यालय तथा डाक पाठ्यचर्या का कार्यक्रम भी जोड़ दिया है। इस नए कार्यक्रम का उद्देश्य अप्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों के बचे हुए खेप को निपटाना है। इस पाठ्यक्रम की अवधि कुल 14 महीने है। इस अवधि में दो महीने की ग्रीष्मकालीन छुट्टियां दो बार पड़ती हैं जिनके दौरान उम्मीदवारों को गहन शिक्षण-कार्यक्रम के लिए क्षेत्रीय-शिक्षा महाविद्यालय के केम्पस में ही रहना पड़ता है। दो ग्रीष्मकालीन छुट्टियों के बीच दस महीने की जो अवधि बचती है उसे पर्यवेक्षित क्षेत्र अनुभवों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। 1967-68 के दौरान लगभग 1000 अप्रशिक्षित अध्यापक इस पाठयचर्या में प्रशिक्षित हो चुके हैं।

क्षेत्रीय महाविद्यालयों के विकास कार्यक्रम तैयार कर लिए गए हैं और हर महाविद्यालयों के लिए अलग-अलग योजनाएं बना ली गई हैं। यह निर्णय किया गया है कि चतुर्थ पंचवर्षीय योजना काल में, क्षेत्रीय महाविद्यालयों को पूर्वस्नातक और उत्तर स्नातक स्तर के कई प्रकार के प्रशिक्षण उपलब्ध करने होंगे और प्रत्येक महाविद्यालय को यथासम्भव स्थिति तक विकसित करना होगा।

*उपखंडित स्थिति 5
**उपखंडित स्थिति 24

प्रत्येक क्षेत्रीय महाविद्यालय ने माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थियों और वृत्तिक अध्यापकों की सहायता के लिए शैक्षिक सामग्री तैयार करने की जिम्मेवारी संभाली है। जब सामग्री तैयार हो जाएगी और क्षेत्रीय महाविद्यालय उसका संशोधन और परीक्षण कर लेंगे तब उसे मुद्रित किया जाएगा और इसका व्यापक वितरण किया जाएगा।

1967-68 के शैक्षिक सत्र के दौरान में इन चार क्षेत्रीय महाविद्यालयों में प्रवेश के आंकड़े इस प्रकार हैं :

पाठ्यचर्या	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
4 वर्षीय विज्ञान	172	152	187	162
1 वर्षीय विज्ञान	34	38	73	60
4 वर्षीय टैक्नोलोजी	133	50	103	78
3 वर्षीय औद्योगिक शिल्प	25	—	37	—
2 वर्षीय औद्योगिक शिल्प	13	—	—	—
4 वर्षीय अंग्रेजी	—	62	68	65
4 वर्षीय वाणिज्य	—	28	—	~~82~~ 83
1 वर्षीय वाणिज्य	27	24	15	14
1 वर्षीय कृषि (बी० एड०)	26	29	8	9
1 वर्षीय गृह विज्ञान (बी० एड०)	9	—	—	15
1 वर्षीय ललित कला (बी० एड०)	—	12	—	—
एम० एड०	—	9	—	—
कुल :	439	404	~~591~~ ४९१	486

इसके साथ चार क्षेत्रीय महाविद्यालयों द्वारा चलाए गए बी० एड० उपाधि के लिए ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं डाक पाठ्यचर्या में भर्ती होने वालों की संख्या निम्नलिखित है :

अजमेर	312
भोपाल	217
भुवनेश्वर	278
मैसूर	148
कुल योग	955

शैक्षिक मूल्यांकन में तृतीय अल्पकालीन प्रशिक्षण

पाठ्यचर्या का आयोजन मसूरी में 16 मई से 8 जुलाई, 1967 तक हुआ और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजकीय मूल्यांकन एककों, शिक्षा के राजकीय विभागों, अध्यापक महाविद्यालयों, सेना शैक्षिक कोर,

केन्द्रीय स्कूलों और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के बहुधन्धी निदर्शन स्कूलों से 43 व्यक्तियों ने भाग लिया। भाग लेने वालों को पैमाने और मूल्यांकन के सिद्धान्तों में भारत में परीक्षा के इतिहास, परीक्षण प्रतिदर्शन और मूल्यांकन के विभिन्न औजारों के निर्माण पर प्रशिक्षण दिया गया था। प्रशिक्षक अच्छी परीक्षा को बनाने के निर्देशन में और अपनी संस्थाओं और राज्यों में मूल्यांकन की विधियों में काम करेंगे।

मनोवैज्ञानिक आधार विभाग

डिप्लोमा पाठ्यचर्याएं

शैक्षिक और व्यवसायिक निदर्शन में (13 विद्यार्थी), अनुसन्धान विधि तन्त्र में (12 विद्यार्थी) और पूर्व शैशव शिक्षा में (एक दिल्ली में 9 विद्यार्थियों के साथ, और एक चंडीगढ़ में 14 विद्यार्थियों के साथ) डिप्लोमा पाठ्यचर्या वर्ष के दौरान पूर्ण हो गई।

पूर्वयोजित अधिगम

कार्यक्रमित सामग्री के विकास में दल के नेता के प्रशिक्षण के लिए अधिगम अध्ययन की योजना को प्रभावित रूप में उत्तरदान करने के लिए दो मास की अवधि की दो अधिवेशनों (45+15 में बँटी हुई) प्रशिक्षण पाठ्यचर्या-शीर्षक 'पूर्वयोजित अधिगम में अनुक्रमिक अध्ययन' का आयोजन हुआ था। कोर्स में विभिन्न विश्वविद्यालयों, राजकीय शिक्षा संस्थानों और प्रशिक्षण महाविद्यालयों से 25 लोगों ने भाग लिया। रक्षा सेवाओं और टाटा उद्योगों ने प्रत्येक के लिए एक-एक सदस्य नामित किया।

इस कोर्स के अतिरिक्त, विभाग, राजकीय शिक्षा संस्थान, पूना को अनुक्रमिक पाठ्यचर्या के आयोजन में (हर दस दिन के अधिवेशनों में भंगित) प्राइमरी स्कूल स्तर पर सामग्री विकास में कार्य करने वालों के प्रशिक्षण के लिए सहयोग दे रहा है।

प्रौढ़ शिक्षा विभाग

प्रौढ़ शिक्षा विभाग ने निम्नलिखित पाठ्यचर्याओं का आयोजन किया :—

(1) गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन केन्द्रीय सीमा सिपाही बल की प्रौढ़ साक्षरता के लिए दो प्रशिक्षण पाठ्यचर्याएं हुईं। बारहवीं प्रशिक्षण पाठ्यचर्या अप्रैल 18, 1967 को आरम्भ और 13 मई, 1967 को समाप्त हुई। 20 प्रौढ़ साक्षरता प्रशिक्षकों ने इसमें भाग लिया। तेरहवीं पाठ्यचर्या मई 15, 1967 को शुरू और 10 जून, 1967 को समाप्त हुई। इस पाठ्यचर्या में 1 प्रौढ़ साक्षरता प्रशिक्षक ने भाग लिया।

(2) हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा प्रतिनियुक्त किए गए अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए प्रौढ़ शिक्षा में प्रशिक्षण पाठ्यचर्या का आयोजन नवम्बर 23, 1967 से 8 दिसम्बर, 1967 तक हुआ। इस पाठ्यचर्या में हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों और अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं से 13 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया

(3) कृषि शिक्षा के क्रियात्मक साक्षरता कार्यक्रम में पर्यवेक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यचर्या और क्रियात्मक साक्षरता परियोजना फरवरी 12, 1968 से फरवरी 24, 1968 तक आयोजित हुई थी । कुल 18 पर्यवेक्षकों जिसमें पंजाब, उत्तर प्रदेश और मैसूर राज्यों से 6-6 ने पाठ्यचर्या में भाग लिया ।

(4) सामाजिक शिक्षा में प्रशिक्षण के लिए, यूनेस्को अफ्रीका आयात कार्यक्रम के अधीन जो कि इस विभाग से संलगित है, भारत सरकार की शिक्षा वृत्ति धारण करने वाले सोमालिया के श्री एच० एच० अब्दि के लिए प्रशिक्षण और अध्ययन पर्यटन का कार्यक्रम।

(5) प्रौढ़ शिक्षा में अभिस्थापन कार्यक्रम श्रीमति सी० के० दाण्डिया, सहायक निदेशक, प्रौढ़ शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के लिए मार्च 27, 1967 से अप्रैल 1, 1967 तक ।

क्षेत्र सेवा विभाग

(1) शिक्षा विस्तार में दो मास की प्रशिक्षण पाठ्यचर्या

पिछले तीन वर्षों के दौरान, क्षेत्र सेवा विभाग विस्तार के कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यचर्याओं का आयोजन करता रहा है । यह प्रशिक्षण पाठ्यचर्या साधारणतः तीन सप्ताह की अवधि की थीं । इन पाठ्यचर्याओं के फलस्वरूप शिक्षा क्षेत्र में विस्तार कार्य के सिद्धान्त और व्यवहार में शैक्षिक कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए पाठ्यचर्या का विकास हुआ । शैक्षिक विस्तार कार्य (राजकीय विज्ञान संस्थान, राजकीय मूल्यांकन एकक, आदि-आदि) से सम्बन्धित राज्यों में कई एजेन्सियों के संस्थापन से, शिक्षा क्षेत्र में विस्तार कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण के विशेष कार्यक्रम की आवश्यकता का विचार आया । विभाग ने 40 भाग लेने वालों के लिए दो मास की अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया । 280 से अधिक अध्यापक शिक्षकों ने और दूसरे विस्तार कार्यकर्त्ताओं ने इस पाठ्यचर्या में भर्ती होना चाहा । कुछ राज्यों ने 10 विस्तार कार्यकर्त्ताओं की सिफारिश की । 40 व्यक्तियों का चुनाव हुआ था । प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत (क) भारत में शैक्षिक विस्तार के विकास और बढ़ोत्तरी, (ख) अध्यापकों का शैक्षिक विस्तार और सेवा-रत शिक्षा, (ग) माध्यमिक स्कूलों और प्राइमरी स्कूलों में विस्तार कार्य, (घ) शैक्षिक विस्तार की प्रक्रियाएं और विधियां (ङ) दल-विमर्श के आयोजन की प्रक्रियाएं, दल-गतिशीलता और मानव सम्बन्ध, (च) परिवर्तन की प्रक्रिया, परिवर्तित अभिकर्ताओं की विशेषताएं, परिवर्तन के मूल्य के स्तर के लिए आवश्यक दशाएं, (छ) सेवारत शिक्षा और क्रिया विधि अनुसन्धान की विधियों की प्रक्रिया, (ज) यू० के०, यू० एस० एस० आर०, अमरीका और फिलिपाइन्स में सेवारत शिक्षा, (झ) पाठ्यक्रम विकास के द्वारा सेवारत बढ़ोत्तरी,और (न) शैक्षिक विस्तार क्षेत्र में विभिन्न एजेन्सियां और उनका कार्य आदि प्रोग्राम आते हैं ।

(2) अनुदेश सामग्री को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण वर्कशाप

(क) क्षेत्र सेवा विभाग ने भुवनेश्वर और भोपाल में दो प्रशिक्षण वर्कशापों का संगठन चुने हुए अध्यापकों और इतिहास, भूगोल, गणित, भौतिक-विज्ञान, रसायन-शास्त्र और जीव-विज्ञान में अनुदेश सामग्री के विकास में अध्यापक शिक्षकों को अभिस्थापन प्रशिक्षण देने के लिए किया । अध्यापन

एककों के विकास में इन प्रशिक्षण वर्कशापों के द्वारा 44 व्यक्ति प्रशिक्षित हो चुके हैं ।

(ख) क्षेत्र सेवा विभाग ने पाठ्यक्रम विभाग और विज्ञान शिक्षा विभाग के सहयोग से तीन और प्रशिक्षण वर्कशापों का हैदराबाद, चंडीगढ़ और मद्रास में चुने हुए अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों का प्राइमरी और माध्यमिक स्तरों पर अनुदेश सामग्री के विकास में आयोजन किया । इन वर्कशापों द्वारा प्रशिक्षित अध्यापक विभिन्न विस्तार क्षेत्रों की सहायता विकसित अनुदेश सामग्री में राष्ट्रीय कार्यक्रम के आधीन राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान द्वारा आरम्भ हुए राष्ट्रीय कार्यक्रम के आधीन कर रहे हैं ।

(3) कक्षा प्रयोगात्मकता के क्षेत्र में कर्मचारी वर्ग साधन का प्रशिक्षण

(क) यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पिछले तीन वर्षों से चल रहा है । वर्तमान वर्ष के दौरान, कुछ व्यक्ति पहले प्रशिक्षित हो गए हैं और कक्षा प्रयोगों के क्षेत्र में प्रशिक्षण वर्कशापों के लिए कुछ दूसरों को न्यौता दिया गया था । प्रशिक्षण पाठ्यचर्या के अन्तर्गत निम्नलिखित पहलू आते हैं :

(i) अभिकल्पित कक्षा प्रयोग

(ii) कक्षा प्रयोगों की अभिपूर्ति

(iii) कक्षा प्रयोगों का मूल्यांकन

(iv) प्रयोगों की रिपोर्टों को तैयार करना

प्रशिक्षण कोर्स में विकसित स्कूल प्रयोजनों, प्रयोगात्मक प्रयोजनों और क्रिया अनुसन्धान कार्यक्रमों के विकास पर विचार-विमर्श किया ।

(ख) द्वितीय अभिस्थापन कार्यक्रम का शिक्षा के क्षेत्रीय महाविद्यालयों के चुने हुए लेक्चररों के और क्षेत्र एककों के समन्वय कर्त्ताओं के लिए आयोजन विभाग के द्वारा हुआ था । इस कार्यक्रम का प्रमुख विचार विभिन्न राज्यों और देश के क्षेत्रों में कक्षा प्रयोगात्मक क्षेत्र में नेतृत्व तैयार करने का था ।

इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के फलस्वरूप क्षेत्र सेवा विभाग के प्रयोगात्मक परियोजना के कार्यक्रमों को बड़ा संवेग प्राप्त हुआ । लगभग 500 से 600 स्कूल अब कक्षा अभ्यास के संशोधन के विचार से परियोजना और प्रयोगों के कार्यक्रम को शुरू कर रहे हैं ।

विस्तार सेवा विभागों के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

(क) विभाग ने प्राइमरी और माध्यमिक स्तर पर विस्तार सेवा विभागों को समन्वित करने वाली 8 कान्फ्रेंसों का आयोजन किया । ये कान्फ्रेंसें विस्तार केन्द्रों के उन समन्वयकर्त्ताओं के काम में अन्तर्दृष्टि के विकास से सम्बन्धित थी जो देश में विस्तार कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए मुख्य व्यक्ति हैं । इस वर्ष के दौरान, मूल्यांकन में अध्यापकों के अन्तग्रस्त और देश के स्कूल में परीक्षित विशेष अच्छे व्यवहारों के विकरण और विसरण पर विशेष बल दिया गया है । ये कान्फ्रेंसें विभाग के कार्यक्रमों के नित्य के लक्षण बन गए हैं ।

स्थानबद्धता द्वारा प्रशिक्षण

(ख) क्षेत्र सेवा विभाग ने स्थानबद्धता द्वारा समन्वयकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम को चालू रखा। हर समय एक नया समन्वयक नियुक्त होता है। उसको क्षेत्र सेवा विभाग में स्थानबद्धता के द्वारा अथवा संस्थापन विस्तार सेवा विभाग में विस्तार क्षेत्रों के कार्यों में प्रेरणा दी जाती है। इस वर्ष समन्वय क्षेत्र सेवा विभाग में एक वर्ष के लिए स्थानबद्ध हुए। प्रशिक्षण का ध्येय—विस्तार सेवा विभागों के संगठन, कार्यक्रमों की योजना, स्कूलों के साथ सम्बन्धों का अनुरक्षण और स्कूलों की सेवाएं प्राप्त करना है।

क्षेत्र सेवा विभाग द्वारा आयोजित वर्कशाप और सेमिनार

1967-68 के दौरान क्षेत्र-सेवा विभाग के द्वारा अल्पकालीन अवधि के निम्नलिखित वर्कशाप और सेमिनारों का आयोजन हुआ।

(1) गहन स्कूल सुधार के क्षेत्र में उच्च/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के प्रिंसिपलों का सेमिनार, ऐसे 5 सेमिनारों का आयोजन हुआ।

(2) शैक्षिक विस्तार में प्रशिक्षण सामग्री के लिए कार्य दल।

(3) प्रयोगात्मक परियोजना के कार्यक्रम के लिए निर्देशन रेखाओं के विकास कार्य दल।

(4) प्रयोगात्मक परियोजना की सहायता के लिए स्कूलों से प्राप्त प्रस्तावों के शोधन के लिए चार कार्य दलों का आयोजन हुआ।

(5) शिक्षा आयोजन द्वारा सिफारिश किए गए, प्राइमरी स्तर पर अवर्गित कक्षाओं के कार्य-क्रमों की योजना के लिए कार्य दल का संगठन हुआ था।

श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभाग

(1) विभाग ने भारत में 22 मई से 21 जून, 1967 तक अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों से स्नातक लेक्चररों के लिए एक मास की अवधि की श्रव्य-दृश्य अल्पकालीन प्रशिक्षण पाठ्यचर्या का संकलन किया। 22 उम्मीदवारों ने भाग लिया। सारे कोर्स में श्रव्य-दृश्य सस्ती सामग्री के उत्पादन और उपयोग की आवश्यकता पर प्रतिबल दिया गया। सम्पूर्ण कोर्स सैद्धान्तिक और व्यवहारिक भाषणों में भंगित था।

(2) दिल्ली के उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के 58 अध्यापकों के लिए उपकरणों के प्रचालन में 8 मई से 12 मई तक 5 दिन की अवधि के श्रव्य-दृश्य वर्कशाप का संचालन हुआ।

(3) नई दिल्ली में 15 से 17 मई, 1967 तक भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित पंत नगर में, उत्तर प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय में पुस्तकालय विज्ञानों और अध्यापन साधनों पर वर्कशाप में विभाग ने 'कृषि उत्पादन में श्रव्य-दृश्य साधन' पर कार्य पेपर प्रस्तुत किए। वर्कशाप में विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, पुस्तकालयों विस्तार केन्द्रों से लेक्चररों सहित 90 लोगों ने भाग लिया।

(4) बिरला शिक्षा ट्रस्ट, पिलानी से 6 अध्यापकों के लिए, एक सप्ताह की अवधि का विभाग

के द्वारा अभिस्थापन पाठचर्या का 10 से 15 जुलाई तक आयोजन हुआ । भाग लेने वालों को पट्ट आवरण प्रक्रिया, लेखाचित्रीय और श्रव्य-दृश्य जुगतों के प्रचालन में प्रशिक्षण दिया गया ।

(5) विभाग ने दिल्ली नगर निगम के 34 स्कूल अध्यापकों के लिए सामाजिक अध्ययन के अध्यापन पर सेमिनार में भाग लिया ।

(6) पब्लिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए 21 दिसम्बर, 1967 से 6 जनवरी, 1968 तक श्रव्य-दृश्य शिक्षा पर वर्कशाप का संचालन हुआ । देश के विभिन्न भागों के पब्लिक स्कूलों से 20 उम्मीदवारों ने भाग लिया । कार्यक्रम में लेक्चर और व्यावहारिक अधिवेशन सम्मिलित थे ।

(7) प्राइमरी और नर्सरी स्कूलों से स्थानीय अध्यापकों के लिए 3 से 12 जनवरी, 1968 तक विभाग ने सृजनात्मक नाटक और कठपुतली में प्रयोगात्मक वर्कशाप का आयोजन किया । वर्कशाप का ध्येय सृजनात्मक नाटक और कठपुतली का शिक्षण के माध्यम के रूप में प्रयोग करने की संभवताओं का गवेषण था । व्यावहारिक अधिवेशन के दौरान सुगमता से प्राप्त होनेवाली सामग्री से सादी कठपुतलियों को तैयार करने की विभिन्न प्रक्रियाओं में प्रशिक्षण दिया गया ।

उपरोक्त के अतिरिक्त सारे भारतवर्ष भर में विभिन्न शैक्षिक संस्थानों के लिए प्रशिक्षण पाठ्य-चर्याओं, वर्कशापों और सेमिनारों का आयोजन हुआ ।

विभाग में निम्नलिखित प्रतिरूप और सामान उत्पादित हुए :

(1) भारत के रेल मार्ग
(2) पैरिस पलस्तर के सहायक प्रतिरूप
(3) 'हमारा भारत'—अध्ययन सामान
(4) परिवार नियोजन
(5) बीज अंकुरण के लिए सामान
(6) किट डिब्बे के लिए फिल्मपट्टी
(7) द्रव ध्वनियों की सम्पत्ति के अध्ययन के लिए आयात विज्ञान उपकरणों का अध्ययन
(8) मिट्टी और पेरिअर मैके से कठपुतली
(9) संसार के समय किट्ज
(10) श्याम पट्ट घूर्णक
(11) रंग नमूने
(12) अप्रक्षिप्ति सहायक सामान

अध्यापक शिक्षा विभाग

(1) प्रारंभिक अध्यापकों के शिक्षकों के लिए 9 महीने की डिप्लोमा पाठ्यचर्या

यह पाठ्यचर्या 22 अगस्त, 1966 को आरम्भ और 22 मई, 1967 को पूर्ण हुई । सभी 21 भाग लेने वालों ने अपनी अनुसन्धान रिपोर्ट पेश करी है और अन्तिम परीक्षा मई, 1967 में दे दी । श्री एल० एस० चन्द्रकान्त, पूर्व के संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण

परिषद् ने विदाई समारोह को अध्यासीन किया और प्रशिक्षकों को प्रमाण पत्र और इनाम पत्र दिए ।

(2) एस० आई० ई० कार्यकर्त्ताओं के लिए अनुसन्धान विधि तन्त्र में तृतीय कोर्स

मनोवैज्ञानिक आधार विभाग की सहायता से एक मास की अवधि की पाठ्यचर्या का आयोजन पूना में 19 जून, 1967 से हुआ ।

(3) प्रारंभिक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रिंसिपलों के लिए तीन मास की अवधि की पाठ्यचर्या

इस प्रशिक्षण पाठ्यचर्या का आरम्भ 10 नवम्बर, 1967 को हुआ था । यहां गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, मद्रास, पश्चिमी बंगाल, मध्य प्रदेश, पांडिचेरी और मणीपुर के संघीय राज्यों से 11 व्यक्तियों ने भाग लिया । इसका चालन राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के सभी विभागों के सहयोग से हो रहा है । सप्ताह में एक बार शैक्षिक फिल्में दिखाई जाती हैं और प्रसिद्ध शिक्षक अतिथि अध्यक्षों के रूप में आमन्त्रित किए जाते हैं ।

शैक्षिक प्रशासन विभाग

(1) माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों–पूर्वी क्षेत्र के प्रिंसीपलों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यचर्या

प्रशिक्षण पाठ्यचर्या का आयोजन भुवनेश्वर में हुआ था । इसका प्रयोजन प्रिंसिपलों के लिए व्यावसायिक सूचना प्रदान करना और नवीन विचारों के विचार-विमर्श के लिए उनको क्षेत्र प्रदान करना था ।

(2) मई-जून 1967 के दौरान शिमला में प्रशिक्षण कालेजों के लेक्चररों, रीडरों और प्रोफेसरों के लिए अनुसूचित शैक्षिक प्रशासन में ग्रीष्मकालीन संस्थान का आयोजन हुआ था ।

पाठ्यक्रम एवं कार्य गोष्ठियां मूल्यांकन विभाग

पुस्तिकाओं की तैयारी

(1) उच्च माध्यमिक कक्षाओं के इतिहास के अध्यापकों के लिए पुस्तिका के विभिन्न पाठों की समीक्षा के लिए और उनको अन्तिम रूप देने के लिए वर्कशाप का इलाहाबाद में आयोजन हुआ ।

(2) कोएम्बतोर में वर्कशाप का, पूर्व तैयार किए गए मसौदे की पाठ्यचर्या के आधार पर प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों के लिए पुस्तिका की तैयारी के लिए, आयोजन हुआ था ।

(3) हिन्दी व्याकरण के अध्यापन के नए दृष्टिकोण का विकास

आगरा में हिन्दी व्याकरण के अध्ययन की नवीन पहुंच के विकास के लिए वर्कशाप का आयोजन हुआ था । इस वर्कशाप में उत्पादित सामग्री अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों में परिचालित हुई थी ।

(4) विभिन्न भाषा योग्यताओं में निष्पत्ति के अनुमानित स्तर का निश्चय

उदयपुर में वर्कशाप का आयोजन हिन्दी—मातृभाषा के रूप में कक्षा 9 और 11 के शिष्यों के लिए विभिन्न भाषा योग्यताओं में निष्पति के अनुमानित स्तरों के निर्धारण के लिए हुआ था ।

(5) परीक्षण सामग्री का विकास

(क) दो भारतीय वर्कशापों का आयोजन एक, विभिन्न उद्देश्यों के लिए परीक्षण सामग्री की तैयारी के लिए और दूसरी अंग्रेजी, गणित और हिन्दी में शोधक उपादानों और नैदानिक परीक्षणों की तैयारी के लिए हुआ ।

(ख) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने विभागों के साथ कक्षा 10 और 11 के लिए अनिवार्य और उन्नतशील अंग्रेजी और हिन्दी में नमूने के प्रश्न पत्रों की तैयारी के लिए कार्यकारी दलों का आयोजन किया । विभाग के अधिकारियों के निर्देशन में कुल 6 नमूने के प्रश्न पत्र तैयार हुए ।

(ग) व्यापारिक-अभ्यास, बही खाता, बैंक व्यापार, व्यापारिक भूगोल आशुलिपि की और गृह-विज्ञान एकक परीक्षणों और प्रश्न पत्रों के नमूने पर विवरणिका की तैयारी के लिए विभाग के सहयोग से राजस्थान बोर्ड ने कार्यकारी दलों का आयोजन किया ।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान—अनुसन्धान सेमिनार

अनुसन्धान सेमिनारों की नवीन योजना जिसमें राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान के सदस्य और बाहर की एजेन्सियों के लोग पेपर प्रस्तुत करते हैं जिनका अनुगमन विचार विमर्श द्वारा होता है, का आरम्भ हुआ । इन सेमिनारों का ध्येय राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान में कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रमुख शैक्षिक समस्याओं पर विचार विनिमय के लिए और उनमें पत्र-व्यवहार की सुविधाओं के लिए स्थल प्रदान करना है । श्री सी. वी. पद्मनाभ, अर्थशास्त्री, शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, जिन्होंने 'शिक्षा अर्थशास्त्र अनुसन्धान में हुए तत्काल विकास' भाषण दिया था, के भाषण से क्रमांकों का आरम्भ 25 अगस्त, 1967 को हुआ । अभी तक राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान के कार्यकर्त्ताओं के द्वारा 21 पेपर और बाहर के लोगों के द्वारा 2 पेपर राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान के अनुसन्धान सेमिनारों में प्रस्तुत हुए हैं ।

राष्ट्रीय शैक्षिक के विभिन्न विभागों के प्रतिनिधित्व में 8 सदस्यों की एक समिति 'राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान अनुसन्धान सेमिनार समिति' शीर्षक से बनाई गई । अभी तक समिति की दो सभाओं का आयोजन हो चुका है ।

विस्तार : क्षेत्रीय सेवाएं

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अनुदेश सामग्री के उत्पादन में और स्कूल पुस्तकालयों के प्रयोग के सुधार में विस्तार कार्यकर्ताओं को विशेष प्रशिक्षण दिया गया है । हैडमास्टरों और शैक्षिक प्रसाशकों के चुने हुए दलों के साथ प्रशिक्षण सेमिनारों का प्रबन्ध किया गया । जबकि अनुसन्धान और प्रशिक्षण का सम्पूर्ण ध्येय अध्यापक की सहायता के द्वारा शैक्षिक विचारों और व्यवहारों में वृद्धि का उपयोग है, हम अपनी नीतियों की सफलता का अनुमान मुख्य रूप से क्षेत्र में कार्यक्रमों के संघठन के द्वारा लगा सकते हैं ।

क्षेत्र सेवा विभाग

97 माध्यमिक विस्तार केन्द्र/एकक चुने हुए विश्वविद्यालयों के विभागों और माध्यमिक प्रशिक्षण कालेजों में और 45 प्राथमिक विस्तार केन्द्र प्रारंभिक अध्यापक संस्थानों और राज्य शिक्षा संस्थानों में स्थापित किए गए है । इस वर्ष की रिपोर्ट की अवधि में शैक्षिक विस्तार क्षेत्र

में बहुत बड़ा विकास हुआ । दोनों केन्द्रों के—माध्यमिक और प्राथमिक कार्यक्रमों का समाकलन क्षेत्र सेवा विभाग में हो गया है जो अब कार्यक्रमों का प्रशासन कर रहा है । स्कूल शिक्षा के सुधार में विस्तार सेवाओं के महत्त्व की भावना से राजस्थान सरकार ने 10 नए प्राथमिक विस्तार सेवा केन्द्र आरम्भ किए हैं । सदृश कार्यक्रम अब दूसरे राज्यों में चालू हुआ है । आन्ध्र प्रदेश के विस्तार कार्यक्रम अब राजकीय सरकार द्वारा अवतरणित महान कार्यक्रमों में समाकलित हो गए हैं । छ: समाकलित अध्यापक वर्कशाप राजकीय शिक्षा संस्थान और क्षेत्र सेवा विभाग के संयुक्त निर्देशन में आयोजित हुईं । आन्ध्र प्रदेश में सात विस्तार सेवा विभागों ने जिला शिक्षा अधिकारियों के सहयोग से इन कार्यक्रमों का संगठन किया और 300 से अधिक अध्यापकों और हैडमास्टरों ने भाग लिया । बिहार, मैसूर और महाराष्ट्र राज्यों में विस्तार सेवाओं के कार्यक्रम अच्छे प्रकार चालू हो रहे हैं ।

विस्तार सेवा विभागों का निम्नतर सामान्य कार्यक्रम

क्षेत्र सेवा विभागों द्वारा देश के सब विस्तार केन्द्रों के लिए बताए गए सुझावों का निम्नतर सामान्य कार्यक्रम सब केन्द्रों ने अनुसरण किया । इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विस्तार सेवा केन्द्र निम्न कार्य कर रहे हैं :

(1) शिक्षण सामग्री का विकास

(2) आजमाई हुई अच्छी कार्य-प्रणालियों का संकलन

(3) स्कूल पुस्तकालयों का ज्यादा अच्छा प्रयोग

(4) स्कूलों में प्रयोगों और कार्यों का अनुसन्धान

(5) स्कूल सुधार के गहन कार्यक्रम

सम्पूर्ण देश भर में विस्तार सेवा विभागों ने भिन्न-भिन्न विषयों में कार्य दल स्थापित किए हैं ।

(क) कक्षा अध्यापकों के प्रयोग के हेतु शिक्षण के विकास के लिए अलजब्रा, ज्योमैट्री, ट्रिगनोमेट्री, इतिहास, भूगोल, नागरिकता, अर्थशास्त्र, भौतिक-विज्ञान, जीव-विज्ञान और रसायन-विज्ञान के विषयों में विस्तार सेवा विभागों के द्वारा लगभग 150 अध्यापन एककों का विकास हुआ है ।

(ख) आजमाई हुई अच्छी कार्य-प्रणालियों का संकलन

क्षेत्र सेवा विभाग, विस्तार सेवा विभागों और क्षेत्र-एककों के सहयोग से स्कूलों में परिक्षित अच्छे अभ्यासों के संग्रह और संकलन को चालू रखने में और विज्ञप्तियों 'स्कूल अभ्यासों में नवीन प्रवृत्तियों' के द्वारा उनके प्रसार करने में समर्थ हुआ है ।

(ग) स्कूल पुस्तकालयों के क्रियात्मक प्रयोग में सुधार

अजमेर, मेरठ, फिरोजपुर, पूना और अहमदाबाद के स्कूल अब दूसरे रूप में स्कूल पुस्तकालयों के प्रयोग के सुधार के कार्यक्रम में प्रवेश कर रहे हैं । मेरठ के स्कूलों में प्रायोजित इस प्रयोजन के मूल्यांकन ने यह दिखा दिया है कि इस प्रयोजन के फलस्वरूप स्कूलों के द्वारा पुस्तकालय की सुविधाओं के प्रयोग

में महान सुधार हुआ है। बहुत बड़ी संख्या में विस्तार केन्द्रों ने यह कार्यक्रम दूसरे, अन्य स्कूलों के साथ उपक्रमित किया है। दिल्ली, गुजरात, और मैसूर के कुछ स्कूलों का विशिष्ट वर्णन दिया जाए।

(घ) स्कूलों में प्रयोगों और कार्यों का अनुसन्धान

देश में अध्यापकों और स्कूलों में यह कार्यक्रम ज्यादा-से-ज्यादा प्रशंसनीय हो रहा है। बहुत बड़ी संख्या में स्कूल और अध्यापक कक्षा प्रयोगात्मक और क्रिया प्रशिक्षण के प्रयोग के लिए आगे बढ़े। इस वर्ष वित्त अनुदान के लिए लगभग 400 से अधिक प्रयोजन प्रस्ताव उपलब्ध हुए। अब तक देश में लगभग 1000 स्कूलों ने इस कार्यक्रम से लाभ उठाया और ज्यादा स्कूलों में कार्यक्रम का संस्थाकरण अच्छे अध्यापन के एक आवश्यक अंग के रूप में हुआ। बड़े पैमाने पर उत्पादन के हेतु विभाग ने अब दो विज्ञप्तियाँ तैयार की है। इन विज्ञप्तियों में एक कक्षा के प्रयोगों की प्रक्रियाओं से सम्बन्धित है जहां कि दूसरे स्कूलों द्वारा पिछले चार से पांच वर्षों से संचालित प्रयोजनों का सारांश देती है।

सेमिनार-पठन

माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों को उनके अनुभवों के प्रचार में सहायता देने के उद्देश्य से 1962-63 में सेमिनार पठन का एक कार्यक्रम आरम्भ किया गया था। 1967-68 के दौरान राज्यों और संघीय-प्रदेशों से 142 लेख प्राप्त हुए। इस वर्ष विभाग ने राजकीय शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित इनामों के विजेताओं के राष्ट्रीय अधिवेशन का मद्रास में आयोजन किया। इस वर्ष के दौरान इनाम विजेताओं द्वारा लिखित प्रस्तावों से युक्त 'दि टीचर्स स्पीक्स' का तीसरा और चौथा वाल्यूम प्रकाशित हुआ।

सेमिनार-पठन का यह कार्यक्रम स्कूलों के अध्यापकों के लिए भी आरम्भ हो गया है। इस कार्यक्रम का सूत्रपात राज्यों में राजकीय शिक्षा संस्थानों द्वारा हो रहा है।

स्कूल-सुधार का राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम

शिक्षा आयोग ने स्कूल सुधार के राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम को स्वीकृत किया। शिक्षा निदेशकों/लोक अनुदेश निदेशकों की एक अनौपचारिका समिति ने अगस्त के मास में सिफारिश की कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् ऐसे कार्य के लिए 'ब्ल्यू प्रिन्ट' का विकास करे और सब राज्यों में उसका प्रचार करे। क्षेत्र सेवा विभाग ने राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान के अन्य विभागों की सहायता से स्कूल-सुधार के लिए राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम के लिए 'ब्ल्यू प्रिंट' का विकास किया। 'ब्ल्यू प्रिंट' अब तैयार है और शीघ्र ही सब राज्य सरकारों को टिप्पणीयार्थ हेतु भेजें जाएँगें।

अध्यापक अभिप्रेरणा

क्षेत्र सेवा विभाग के कार्यों में से एक राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान द्वारा अनुद्धित अनुसन्धानों की जांच परिणामों का विकीर्णन है, प्रशिक्षण प्रेरणा का अध्ययन पूर्ण हो गया है। इस अनुसन्धान ने यह दिखा दिया है कि यदि अध्यापक शिष्यों की प्रेरणा की प्रक्रियाओं में प्रशिक्षित हों तो अध्ययनों का शैक्षिक प्रदर्शन महत्त्वपूर्ण रूप से बढ़ेगा। क्षेत्र सेवा विभाग, मनोविज्ञान विभाग की सहायता से इन अनुसन्धानों के जांच परिणामों को क्षेत्रों में ले गया है। प्रेरणा-प्रशिक्षण के क्षेत्र में नागपुर के

आसपास के कुछ स्कूलों में इस कार्यक्रम का सूत्रपात हुआ है । कक्षा अध्यापकों और प्रशासकों तक इस महत्वपूर्ण अनुसन्धान को पहुंचाने के हेतु एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है। बिहार राज्य में प्रेरणा प्रशिक्षण में कुछ अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के लिए व्यवस्था की गई है।

क्षेत्र एककों की स्थापना

आन्ध्र प्रदेश और राजस्थान के राज्यों में दो क्षेत्र एकक स्थापित हुए। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों तथा राज्य सरकारों के विभागों और अन्य एजेंसियों के क्षेत्र-कार्यक्रमों में बेहतर समन्वय की सुविधा उपलब्ध करने के लिये क्षेत्र एककों की स्थापना हुई है। दोनों क्षेत्र एककों ने राज्यों में संगठित आधार पर कार्य आरम्भ किया है। इन क्षेत्र एककों ने राज्यों में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के कार्यक्रमों के विकास के हेतु अपना कार्य आरम्भ कर दिया है। दोनों एककों ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा उत्पादित पाठ्यपुस्तक से प्रशिक्षण कालेजों और राजकीय शैक्षिक विभागों के मुख्याधिकारियों को परिचित कराने के लिए कार्यक्रमों को आरम्भ कर दिया है। यह काम प्रशिक्षण कालेजों में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद की पाठयपुस्तकों की प्रदर्शनियों के विशिष्ट भ्रमण समिति के द्वारा सम्पादित हुआ है।

क्षेत्र एककों के प्रयत्नों द्वारा, आन्ध्र-प्रदेश सरकार ने विभिन्न स्कूल विषयों में शैक्षिक सामग्री के उत्पादन के हेतु बड़े पैमाने पर कार्यक्रम का आयोजन किया। राजस्थान में राजकीय शिक्षा विभाग ने अनुसन्धान रीतिविधान में व्यक्तियों के दल के प्रशिक्षण की आवश्यकता का अनुभव किया। क्षेत्र एककों के प्रयत्नों से अनुसन्धान रीतिविधान में प्रशिक्षण संस्थानों के भाषकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का संगठन राजस्थान में हुआ। आन्ध्र प्रदेश में राजकीय विभाग क्षेत्र एककों के पास अनु-देशिक सामग्री के विकास के मुख्य व्यक्तियों के प्रशिक्षण के लिए पहुंचे, जिसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान द्वारा संगठित हुआ।

राजस्थान में क्षेत्र एककों ने राजकीय शिक्षा विभाग के 12 अधिकारियों के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में एक सप्ताह के लिये भ्रमण के कार्यक्रम का आयोजन किया। क्षेत्र एककों के प्रयत्नों से राजकीय शिक्षा विभाग, राजस्थान ने राज्य में नए उप शिक्षा अधिकारियों और उप शिक्षा निदे-शकों के लिए अभियान कार्यक्रम का संगठन किया।

केन्द्रीय विद्यालयों को सहायता

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के सहयोग विभाग ने केन्द्रीय स्कूलों में कार्यक्रम का आरम्भ किया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत हरेक राज्य में राज्यों में स्थापित केन्द्रीय स्कूलों की आवश्यक-ताओं की देख भाल के लिए एक-एक केन्द्र चुना गया है। राज्यों में चुने हुए ये केन्द्र, केन्द्रीय स्कूलों के अध्यापकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित करेंगे।

विभाग दिल्ली केन्द्रीय स्कूलों का भी व्यापक मूल्यांकन आरम्भ कर रहा है। इस मूल्यांकन से स्कूलों की दुर्बलताओं की व्यापक तस्वीर का और उनको दूर करने के संशोधित कार्यक्रम का विकास होगा। क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय से सम्बन्धित विस्तार केन्द्रों द्वारा भी इन अध्ययनों का आरम्भ होगा।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के परामर्श से ग्रीष्म-कालीन स्कूलों के अध्यापकों के लिए 5 ग्रीष्म-कालीन स्कूलों का अंग्रेजी, हिन्दी, भौतिकि-विज्ञान, रसायन-शास्त्र और मानविकी में कार्यक्रम का नक्शा खींचा है।

श्रव्य-दृश्य शिक्षा

केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी

आलोच्य अवधि में और 285 फिल्में केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी में रखी गई। 51 फिल्म पट्टियां और आ गईं और फिल्म पट्टियों का नम्बर 2327 तक पहुंच गया। चलते-चलते सिनेमा एकक ने 78 फिल्में प्रदर्शित कीं और विभिन्न शैक्षिक संस्थानों के लिए विभिन्न विषयों पर 580 फिल्में दिखाई गईं।

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

(1) बलगेरिया की जनता के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत विभाग को बुलगैरिया की दो फिल्मों की पूर्व प्रति सामग्री उपलब्ध हुई है।

(2) दो पालिश फिल्मों की पूर्वप्रति सामग्री (1) आवर प्लैनेटरी सिस्टम और (2) 'लाइफ अण्डर दि सरफेस आफ वाटर', पोलैण्ड की गणतन्त्र जनता के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राप्त होने वाली है।

(3) चैकोस्लावाकिया, यू. एस. एस. आर., युगोस्लेविया और डैनमार्क के साथ शैक्षिक फिल्मों के विनिमय की बातचीत क्रियाशील उन्नति में हैं।

(4) कोलम्बो योजना के अन्तर्गत स्कूल पाठ्यक्रम से सम्बन्धित 29 विज्ञान फिल्में विभाग को भेंटस्वरूप प्राप्त हुई। प्रयोग करने के विचार से उनको सेन्सर करने के लिए आवश्यक कदम उठाये जा रहे हैं।

रूसी फिल्मपटटी प्रेक्षेपी

भारत में यू. एस. एस. आर. के व्यापार प्रतिनिधित्व के द्वारा विभाग ने रूस कार्यगोष्ठी से 1500 फिल्मपट्टी प्रेक्षेपियों का क्रय किया है। यह फिल्म पट्टी प्रेक्षेपी प्राप्त हो गए हैं और न लाभ न हानि के आधार पर स्कूलों में और भारत में स्थित दूसरे शैक्षिक संस्थानों में बांटे जाएंगे। स्कूलों के द्वारा इस साधन का अभिग्रहण बहुत बड़ी हद तक उनके कक्षा अध्यापन के प्रभावात्मक रूप में मौलिक बनाने में सहायक होगा।

अध्यापक शिक्षण विभाग

(1) विद्यार्थी अध्यापन और मूल्यांकन पर माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए सेमिनार और वर्कशाप का आयोजन केरल में त्रिचूर में 6 जुलाई से 22 जुलाई, 1967 तक हुआ। 5 साधक व्यक्तियों के अतिरिक्त कैरला के 20 प्रशिक्षण महाविद्यालय से 91 अध्यापक शिक्षकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

(2) विद्यार्थी अध्यापन और मूल्यांकन पर द्वितीय सेमिनार भुवनेश्वर में 6 नवम्बर से

28 नवम्बर, 1967 तक आयोजित हुआ। इसमें उड़ीसा, बिहार, पश्चिमी बंगाल, आन्ध्र प्रदेश और पूर्वी मध्य प्रदेश से 15 व्यक्तियों ने भाग लिया।

(3) तृतीय सेमिनार विद्यार्थी अध्यापन और मूल्यांकन पर बड़ौदा में 26 दिसम्बर, 1967 से 7 जनवरी, 1968 तक आयोजित हुआ। गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान और मध्य-प्रदेश के प्रशिक्षण कालेजों से 35 प्रिंसिपलों ने भाग लिया।

(4) 12 सितम्बर, 1967 को राजकीय शिक्षा विभाग राजस्थान के 12 उच्च अधिकारियों ने अध्यापक शिक्षा विभाग का भ्रमण अपने 2 क्षेत्रों से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के हेतु किया।

(5) अध्यापक शिक्षकों के लिए सेवाकालीन शिक्षा की योजना और व्यापक कार्यक्रम की तैयारी करने के लिए एक समिति गठित हो चुकी है।

शैक्षिक प्रशासन विभाग

कुछ संस्थानों को परामर्शीय सेवाएं विभाग की देन हैं। वर्कशाप और कान्फ्रेन्स जो कुछ शैक्षिक अभ्यासों के सुधार में संलग्न थी उनमें कुछ कर्मचारी वर्ग ने साधकों के रूप में कार्य किया।

प्रौढ़ शिक्षा विभाग

प्रौढ़ शिक्षा में विश्वविद्यालय के कार्य पर सेमिनार

तीन विषयों पर जैसे कि विश्वविद्यालय और प्रौढ़-शिक्षा, विश्वविद्यालय और अविच्छिन्न शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षकों का व्यावसायिक विकास और विश्वविद्यालय पर विचार-विमर्श हुआ।

कृषक-शिक्षा और शैक्षिक साक्षरता पर कार्यगोष्ठी

अन्न और कृषि, सूचना और प्रसारण और शिक्षा मन्त्रालयों द्वारा संयुक्त रूप से यूनेस्को और अन्न और कृषि संगठन के सहयोग द्वारा विज्ञापित कृषि-शिक्षा और क्रियाशील साक्षरता पर कार्य गोष्ठी का संयोजन राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रौढ़ विभाग और शिक्षा मन्त्रालय के द्वारा 9 से 11 जनवरी 1968 तक हुआ। समिति में मैसूर, पंजाब और उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि और मैसूर राज्य-प्रौढ़ शिक्षा परिषद् के प्रतिनिधि, साक्षरता भवन, लखनऊ और पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के प्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्य-गोष्ठी के द्वारा प्रयोजन कार्यशील साक्षरता भाग के लिए समय-सूचि बनाई गई। इस प्रयोजन में क्रियाशील साक्षरता का अर्थ कृषक शिक्षा कार्य से सम्बन्धित साक्षरता से है। यह एक नया प्रयोग है और लोगों को शिक्षित करने के हेतु किए गए पूर्व प्रयत्नों से प्रस्थान है।

श्रमिक विद्यापीठ

श्री के. मिलिनकेविक, यूनेस्को विशेषज्ञ ने विभाग में जुलाई, 1967 में प्रवेश किया। उन्हें भारत में श्रमिक विद्यापीठों को स्थापित करने का कार्य सौंपा गया है। एक श्रमिक विद्यापीठ बम्बई में स्थापित हुआ है, एक दूसरे श्रमिक विद्यापीठ की दुर्गापुर में शीघ्र ही स्थापना होने की सम्भावना है।

केन्द्रीय मन्त्रालयों, राजकीय विभागों, आकाशवाणी और योजना आयोग आदि को सहायता

योजनाओं को बनाने के लिए और जनजाति-शिक्षा, प्रौढ़ साक्षरता और सामाजिक शिक्षा से सम्बन्धित कार्यक्रमों के मूल्यांकन में विभाग ने विभिन्न मन्त्रालयों, राजकीय शिक्षा विभागों, आकाशवाणी और योजना आयोजन की सहायता की।

मनोवैज्ञानिक आधार विभाग

शैक्षिक टेक्नोलोजी पर परिसंवाद

शैक्षिक उद्योगकला शैक्षिक विधियों को प्रभावकारी और उत्पादनकारी बनाने के लिए, व्यावहारिक विज्ञान के अनेक जांच-परिणाम लागू करने के लिए और अध्यापन अधिगम प्रक्रिया के लिए एक क्रियात्मक पहुंच कही गई है। अन्य सामग्री के अतिरिक्त इसमें – शिक्षण कार्यक्रम, स्वतः चालित अनुदेश, अध्यापन की मशीनें, श्रव्य-दृश्य शिक्षा, शैक्षिक मनोविज्ञान और ऐसे ही अन्य विषय सम्मिलित हैं।

इस विज्ञान और उद्योगकला के युग में, जब कि शैक्षिक विधियों की मांगें अपूर्व निर्णय मूल्य पर बढ़ रही हैं और जब कि उद्योगीकरण और शिक्षा के लोकतंत्रात्मक विकास की चुनौतियों का सामना करना है, स्थिर पाठ्यक्रम और प्राचीन अध्यापन विधियों का प्रतिस्थापन, प्रयोगात्मक नींव वस्तु निष्ठ, प्रभावकारी पाठ्यक्रम और अध्यापन की विधियों के द्वारा होना चाहिए।

भारत में उपस्थित शैक्षिक समस्याओं के प्रसंग में शैक्षिक उद्योगकला के अभिप्रेत अर्थ पर विचार करके भारतीय पूर्वयोजित अधिगम संस्था के सहयोग से दो दिन के परिसंवाद (मार्च 2 और 13, 1968) का आयोजन हुआ।

इसका उद्घाटन शिक्षा मन्त्री के द्वारा श्रव्य-दृश्य केन्द्र, इन्द्रप्रस्थ इस्टेट, रिंग रोड, नई दिल्ली में 2 मार्च को हुआ। डा. बी. एस. झा ने उद्घटित अधिवेशन को अध्यासीन किया सम्पूर्ण भारत से, विश्वविद्यालयों से, सिविल और रक्षा संगठनों और उद्योगों इत्यादि से बुलाए गए विशिष्ट शिक्षक परिसंवाद में उपस्थित हुए। परिसंवादों के चार अधिवेशनों के नेता, डा. एस. के. मित्रा, संयुक्त निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् और आई. ए. पी. एल. के. उप राष्ट्रपति; श्री अशोक मित्रा, सचिव, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय; श्री जे. सी. माथुर, अन्न और कृषि के अतिरिक्त सचिव और डा. बी. डी. नागचौधरी, सदस्य योजना आयोजन, थे।

संघीय शिक्षा मन्त्री ने अपने उद्घटित उत्साहवर्धक भाषण के द्वारा प्रभावकारी अध्यापन विधियों के विकास के हेतु और अधिक गतिज पहुंच के लिये बल दिया। पारम्परिक विधियां आधुनिक संसार की मांगों की पूर्ति के लिए अपर्याप्त हैं और नई प्रक्रियाओं का प्रयोग और मूल्यांकन आवश्यक है। उन्होंने पूर्वयोजित अधिगम भारतीय संस्था के सदस्यों को विवर्तित शैक्षिक आचार्यों के श्रमिकों के रूप में बधाई दी।

इस परिसंवाद में अनुदेश की पुस्तकों की प्रदर्शनी, पूर्वयोजित पाठ्यचर्या और कुछ शैक्षिक उद्योगकला के उपकरणों का भी आयोजन हुआ।

बीकानेर में क्षेत्र एकक के उपक्रम से विभागाधिकारियों ने राजकीय शिक्षा संस्थान के कर्मचारियों के लिए अनुसन्धान विधि तन्त्र में पाठ्यचर्या का आयोजन किया और कोर्स में साधकों के रूप में सेवा की। उन्होंने पूना में अनुसन्धान विधि तन्त्र पाठ्यचर्या में भी साधकों के रूप में काम किया।

पूर्व शैशव शिक्षा

प्रायोगिक नर्सरी स्कूल जो कि विभाग, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के स्थान पर चल रहा था, गत ग्रीष्म में विभाग के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के नए कैम्पस में विवर्तन के कारण स्थगित हो गया। स्कूल में बच्चों की संख्या 23 थी और नित्य-क्रियाओं के अतिरिक्त बच्चों के लिए विज्ञान-अभ्यास के कार्यक्रम के लिए प्रयत्न किया जा रहा था। वर्तमान स्कूल वर्ष के दौरान, विभाग ने हौज खास में भारतीय उद्योगकला संस्थान द्वारा चालू नर्सरी एवं प्राथमिक स्कूल को संभाल लिया है। आई. आई. टी. के कार्यकर्त्ताओं के अतिरिक्त विभाग के कर्मचारी दल के तीन सदस्य सारा समय स्कूल में काम करते हैं और स्कूल के कार्यक्रमों की देखभाल विभाग के द्वारा होती है। इस स्कूल में जूनियर नर्सरी से कक्षा 3 तक 6 कक्षाएं हैं जिन में लगभग 100 बच्चे हैं।

पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग

पठन परियोजना

प्राथमिक कक्षाओं में विभाग के पठन प्रायोजना द्वारा तैयार की गई नव साक्षरों की सामग्री को लेने वाले दिल्ली और बिहार दो पहले राज्य हैं। इस सामग्री के प्रयोग में साधकों के प्रशिक्षण के हेतु विभाग ने चार भागों का संगठन दो अलग से बिहार के लिए, एक दिल्ली और बिहार के लिए संयुक्त रूप में और एक दिल्ली के लिए अलग से किया और बड़ी संख्या में साधकों को प्रशिक्षित किया, जो बदले में इस सामग्री के अध्यापन करने वाले अध्यापकों को प्रशिक्षित करेंगे। विभाग ने प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए अनुपरीक्षण कार्यक्रम की योजना बनाने के लिए दिल्ली निदेशालय की भी सहायता की।

सामाजिक अध्ययन परियोजना

दिल्ली निदेशालय ने अपने स्कूलों और केन्द्रीय स्कूलों के लिए सामाजिक अध्ययन पाठयपुस्तकें कक्षा 1-5 तक के लिए दत्तक कर ली हैं। दिल्ली के प्राथमिक स्कूलों के पर्यवेक्षकों और केन्द्रीय स्कूलों के अध्यापकों के लिए अभिस्थापन पाठयचर्या का आयोजन, उनको सामाजिक अध्ययन पुस्तकों के मुख्य लक्षणों से विवरणित करने के लिए हुआ। प्रशिक्षित कर्मचारी साधकों के रूप में अपने क्षेत्रों में काम करेंगे।

अनुदेश सामग्री परियोजना

शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए विभाग में पिछले वर्ष स्कूलों में अध्यापकों और शिष्यों के प्रयोग के लिये गुणात्मक अनुदेश सामग्री की तैयारी के लिए प्रयोजना का आरम्भ हुआ। विभिन्न स्कूल विषयों में अध्यापन एककों की तैयारी में प्रशिक्षण के लिए वर्तमान वर्ष के दौरान निम्न कार्यक्रमों का संगठन हुआ।

(1) पांच वर्कशाप हैदराबाद, चंडीगढ़, मद्रास, पटना, और करनूर में संगठित हुई और

इनमें इतिहास, भूगोल, नागरिकता, सामाजिक ज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, भौतिक-ज्ञान, रासायनिक-ज्ञान और जीव-ज्ञान में अध्यापन एककों के बनाने में बड़ी संख्या में साधन प्रशिक्षित हुए । इन विषयों में अध्यापन एकक भी बनाए गए ।

(2) राज्य-स्तर की वर्कशाप अध्यापन एककों के बनाने के प्रशिक्षण के लिए जयपुर में संगठित हुई थी जो इतिहास, नागरिकता, अर्थशास्त्र और भूगोल में बनाए गए थे ।

(3) गणित में अध्यापन एककों के बनाने में प्रशिक्षण के लिए वर्कशाप का संगठन सरकारी अध्यापक प्रशिक्षक महाविद्यालय, जम्मू में हुआ । चार अध्ययन एकक इस विषय में तैयार हुए ।

(4) बल्लभ विद्यानगर, शिक्षा महाविद्यालय में सामाजिक ज्ञान में अध्यापन एककों के बनाने में प्रशिक्षण कार्यक्रम का संगठन हुआ ।

(5) पेपर बनाने वाली वर्कशाप में जो केरल और राजस्थान बोर्ड के लिए त्रिवेन्दम और उदयपुर में हुई, अध्यापन एककों को बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें दूसरे विषयों के अतिरिक्त कुछ हिन्दी, मलयालम, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक ज्ञान, इतिहास, भूगोल, नागरिकता और अर्थशास्त्र में तैयार हुए ।

(6) इस वर्कशाप का संगठन शिक्षा विभाग, आन्ध्र प्रदेश के द्वारा हुआ और संचालन पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग, विज्ञान शिक्षा विभाग और क्षेत्र सेवा विभाग के द्वारा हुआ । कार्यक्रम में पाठ्यक्रम के निर्माण के नियम, विचार और मूल्यांकन की प्रक्रिया सम्मिलित थीं ।

पाठ्यक्रम और मूल्यांकन पर अन्तर्विभागीय कार्यक्रम

पाठ्यक्रम और मूल्यांकन से सम्बन्धित विभिन्न प्रकाशित पुस्तकों के विचार-विमर्श के लिए सेमिनार का आयोजन दूसरे विभागों के अधिकारियों के सहयोग से हुआ । पाठ्यक्रम और मूल्यांकन में कुछ नए प्रायोजनाओं के विकास के हेतु यह प्रारंभिक कार्यक्रम था ।

स्कूलों के लिए निर्देशन

दिल्ली में तीन प्राथमिक स्कूलों के हैडमास्टरों और स्कूल अध्यापकों की उनके स्कूल सुधार के कार्यक्रम में समय-समय पर सहायता की गई ।

प्राथमिक शिक्षा में परीक्षा सुधार

दिल्ली शिक्षा निदेशालय के मिडिल स्कूल के अध्यापकों के लिए मिडिल स्कूल की परिक्षाओं में प्रस्तावित परिवर्तनों से उनको विवरणित करने के हेतु जिससे वह अपने विद्यार्थियों को तदनुसार तैयार करें, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, और सामाजिक ज्ञान में 3-3 दिन की अवधि की 25 अभिस्थापित वर्कशाप आयोजित हुईं ।

माध्यमिक स्कूलों में परीक्षा सुधार

(क) आन्ध्र प्रदेश

(1) पेपर्स बनाने वालों का प्रशिक्षण अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, तेलगु और गणित तक विस्तृत किया गया । बोर्ड के द्वारा दो पेपर बनाने वाली वर्कशापों का पाठ्यक्रम

और मूल्यांकन विभाग के सहयोग से संगठन हुआ और प्रश्न-पत्रों के नमूनों पर विवरणिक और एकक परीक्षण तैयार हुए।

(2) पेपरसेटर्स की तीसरी वर्कशाप का संगठन भौतिकी, जीव-विज्ञान, गणित और सामाजिक अध्ययनों के विषयों में हुआ और पेपरसेटर्स को गतिज दल और वर्कशाप प्रक्रियाओं में प्रशिक्षण दिया गया।

(ख) आसाम

गत वर्ष आसाम बोर्ड ने परीक्षा सुधार के कार्यक्रम को बनाया और इन प्रश्न पत्रों में निम्नतर परिवर्तन दिखाए, जिनमें अधिक विधिवर तैयारी की आवश्यकता नहीं है। इसने इन निम्नतर परिवर्तनों से युक्त परीक्षण सामग्री के कुछ नमूनों का भी प्रसारण किया। 1967-68 के दौरान बोर्ड ने विभिन्न विषयों में अपने पेपरसेटर्स के प्रशिक्षण के कार्यक्रम का भी आरम्भ किया। तदनुसार, पाठक्रम और मूल्यांकन विभाग के सहयोग से भौतिकी, रसायन-शास्त्र, जीव-विज्ञान और गणित में दो वर्कशापों का संगठन किया जिसमें पेपर बनाने वालों को अच्छे प्रश्न-पत्र बनाने के सिद्धान्तों और प्रक्रियाओं में प्रशिक्षण दिया गया। पेपर बनाने वाले, एकक परिक्षणों और प्रश्न पत्रों के रूप में नमूने की परीक्षण सामग्री का भी उत्पादन करते हैं जो कि बोर्ड प्रकाशित करेगा और राज्य के सभी स्कूलों में परिचालित करेगा।

(ग) दिल्ली

(1) केन्द्रीय बोर्ड के निरूपण बहुधन्धी स्कूल परीक्षा 1967 के लिए अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, भौतिक-ज्ञान, रसायन-ज्ञान, जीव-विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र और नागरिकता में प्रश्न-पत्र बनाने के हेतु कार्य गोष्ठियां संगठित हुई।

(2) माध्यमिक शिक्षा दिल्ली के केन्द्रीय बोर्ड के लिए जिसने 1968 से परीक्षाओं में एक मौखिक परीक्षा आरम्भ करने का निर्णय किया है, एक वर्कशाप, मौखिक परीक्षा के करने की प्रक्रियाओं में भावी परीक्षकों के आवश्यक प्रशिक्षण के लिए जो कुछ प्रयोगों के पश्चात विकसित होंगे, आयोजित की गई। अध्यापकों और विद्यार्थियों के निर्देशन के लिए अनुदेश तैयार हो गए हैं और स्कूलों में परिचालित हो गए हैं। विभाग ने परीक्षक खण्डों के लिये प्रश्न पत्रों को तैयार करने और दूसरे अनुदेशों को तैयार करने में सहायता की।

(3) हैडमास्टरों के प्रशिक्षण के तीसरे कोर्स में केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली द्वारा आयोजित विचारों और प्रक्रियाओं में मूल्यांकन का अभिस्थापन चार दिन की अवधि में दिया गया था।

(4) केन्द्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली के बी. एड. के विद्यार्थियों (पत्र-व्यवहार पाठ्यचर्या) को मूल्यांकन की प्रक्रियाओं के अवधारण में अभिस्थापन दिया गया था।

(5) भारतीय स्कूल, प्रमाण पत्र परीक्षा के लिए सामाजिक-ज्ञान, विज्ञान, अंग्रेजी और गणित अध्यापन के अध्यापकों के लिए अभिस्थापन दिया गया था।

(घ) गुजरात

(1) पेपरसेटर्स के प्रशिक्षण का विस्तार गणित, जीव-विज्ञान, भौतिकी, रसायन-शास्त्र, मनो-

विज्ञान और स्वास्थ्य विज्ञान तक हो गया और पेपरसेटर्स वर्कशापों का संगठन हुआ। पेपरसेटर्स जो अच्छे प्रश्न पत्रों को तैयार करने के सिद्धान्तों और प्रक्रियाओं में प्रशिक्षित हो गए थे, ने एकक टेस्टों और नमूने के प्रश्न-पत्रों पर उपरोक्त प्रत्येक विषय में विवरणिका तैयार की।

(2) महासना जिला हैडमास्टरों की संस्था ने जिसमें 210 जिला स्कूल सदस्य हैं, परीक्षा-सुधार के कार्यक्रम का आरम्भ किया जिसके अनुसार सर्वप्रथम पेपर बनाने में प्रशिक्षण के लिए वर्कशाप का संगठन संस्थान ने पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग के सहयोग से अंग्रेजी, गुजराती, सामाजिक-ज्ञान, सामान्य-विज्ञान, और गणित में किया। महासना स्कूल के हैडमास्टरों और अध्यापकों के लिए आन्तरिक निर्धारण की विज्ञानिक प्रक्रियाओं में प्रशिक्षण की दूसरी वर्कशाप संगठित हुई।

(ङ) जम्मू और कश्मीर

टी. टी. कालिज जम्मू से सम्बन्धित विस्तार सेवा क्षेत्रों ने पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग के सहयोग से 27 हेडमास्टरों के लिए छः दिन की अवधि की अभिस्थापना वर्कशाप संगठित की।

(च) केरल

केरल बोर्ड के लिए पेपरसेटर्स की दूसरी और तीसरी वर्कशाप मलयालम, अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, विज्ञान और सामाजिक-ज्ञान में संगठित हुई। दूसरे वर्कशाप में नमूने के प्रश्न पत्रों पर विवरणिकाएं और एकक टेस्ट उपरोक्त विषयों में तैयार हुए और तीसरी वर्कशाप में पेपरसेटर्स को वर्कशाप प्रक्रियाओं और गति विज्ञान दल में प्रशिक्षण दिया गया।

(छ) मद्रास

पेपरसेटर्ज की दूसरी वर्कशाप मद्रास बोर्ड के सहयोग से तमिल, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान और इतिहास में संगठित हुई और नमूने के प्रश्न पत्रों पर विवरणिकाएं उपरोक्त हरेक विषय में तैयार की गईं।

(ज) मैसूर

मैसूर बोर्ड ने पेपरसेटर्स के प्रशिक्षण के लिए छः अन्य विषय, भौतिक-ज्ञान, रसायन-ज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, इतिहास और भूगोल लिए और विषयों में पेपरसेटर्स की प्रथम वर्कशाप संगठित की। पेपरसेटर्स को अच्छे प्रश्न पत्र तैयार करने की प्रक्रियाओं में प्रशिक्षण दिया गया और उन्होंने उपरोक्त विषयों में एकक-टेस्टों पर विवरणिका तैयार की।

(झ) पांडिचेरी

पांडिचेरी में सामाजिक अध्ययन और विज्ञानों के अध्यापक मूल्यांकन की प्रक्रियाओं और विचारों का अनुस्थापन शिक्षा विभाग, पांडिचेरी के सहयोग से हुआ।

(ञ) राजस्थान

(1) पेपरसेटर्स की तृतीय वर्कशाप इतिहास, भूगोल, नागरिकता और अर्थशास्त्र के विषयों में राजस्थान बोर्ड के लिए संगठित हुई और वर्कशाप प्रक्रियाओं और गतिज दलों को प्रशिक्षण दिया गया।

(2) राजस्थान बोर्ड के लिए 16 दिन की पेपरसेटर्स की वर्कशाप व्यवसाय, गृहविज्ञान, कृषि और संशोधित कलाओं में संगठित हुई और पेपरसेटर्स को मूल्यांकन के सिद्धान्तों और प्रक्रियाओं में प्रशिक्षण दिया गया। इन सभी विषयों, एकक प्रशिक्षणों और नमूने के प्रश्न पत्रों पर विवरणिकाएं तैयार हुईं।

(3) राजस्थान बोर्ड के 65 माध्यमिक स्कूलों के हैडमास्टरों के लिए आन्तरिक निर्धारण की प्रक्रियाओं में तीन दिन की अनुस्थापन कार्यक्रम का संगठन हुआ।

(4) पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग ने पहले माध्यमिक शिक्षा के राजस्थान बोर्ड की परीक्षा के लिए एक वैज्ञानिक योजना बनाई थी। 1967-68 के दौरान पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग ने बोर्ड द्वारा संगठित चार वर्कशापों के कोर्स में विज्ञान व्यवहारों के 308 परीक्षकों के प्रशिक्षण में सहायता की।

(ठ) पश्चिमी बंगाल

एंग्लो इण्डियन स्कूल, पश्चिमी बंगाल के निरीक्षणालयों के सहयोग से एंग्लो इण्डियन स्कूल के 25 अध्यापकों के लिए 6 दिन का अनुस्थापन कार्यक्रम संगठित हुआ था।

अखिल भारतीय कार्यक्रम

(1) एस.ई.यू. के अधिकारियों और पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग का चौथा संयुक्त वार्षिक सेमिनार

राजकीय मूल्यांकन एकक और विभाग के अधिकारियों का चौथा वार्षिक सेमिनार अप्रैल 10-15, 1968 को राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान के कैम्पस में संगठित हुआ। इसमें 8 राजकीय मूल्यांकन एकक उपस्थित थे जब कि 3 राजकीय मूल्यांकन एककों ने रिपोर्ट भेज दी थीं। सेमिनार ने कार्यकारिणी सलाहकार समिति स्थापित करने के हेतु, परीक्षा सुधार के स्कूल प्रयोजन दल के विकास के लिए, अनुदेश सामग्री के विकास के लिए और चौथी पंचवर्षीय योजना के परीक्षा सुधार के व्यापकार्थ कार्यक्रम की तैयारी के लिए राज्य एककों के कार्यकर्त्ताओं की दृढ़ता के लिये महत्वपूर्ण सिफारिशें कीं।

माध्यमिक शिक्षा के बोर्डों के अध्यक्षों और सचिवों की आठवीं वार्षिक कान्फ्रेंस

राजस्थान बोर्ड के निमन्त्रण से माध्यमिक शिक्षा के बोर्डों के अध्यक्षों और सचिवों की आठवी कान्फ्रेन्स अजमेर में संगठित हुई और परीक्षा के लिए कई महत्वपूर्ण बातों पर विचार-विमर्श हुआ। कान्फ्रेन्स ने स्तरों की समानता, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग के संकलित कार्यक्रमों, माध्यमिक शिक्षा के प्रत्येक बोर्ड में परीक्षण पुस्तकालय के विकास के लिए, प्राथमिक स्तर पर परीक्षा सुधार के कार्यक्रम, परीक्षा-सुधार कार्यक्रम के लिये बोर्डों की वित्त व्यवस्था, बी. एड. और एम. एड. पाठ्यचर्याओं में मूल्यांकन के शीर्षकों के सम्मेलन के लिए, बोर्डों से राज्य मूल्यांकन एककों के सम्बन्ध में, बोर्ड के द्वारा पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के भोगाधिकार के सम्बन्ध में स्वतन्त्रता लेने की संज्ञा, बोर्डों के द्वारा काफी विस्तृत पाठ्यचर्या को तैयार करने के विषय में युवित को अनुदान के लिए अंक की कटौती, भागानुसार प्रमाण-पत्र को निकालने, बोर्डों द्वारा पत्र व्यवहार पाठ्यचर्या के पाठ्यक्रम

और मूल्यांकन संस्थान के कार्यकर्त्ताओं के आवर्धन के लिए, राज्य शिक्षा बोर्डों की स्थापना के लिए और राज्य एककों को स्कूल के राजकीय बोर्ड के शैक्षिक पक्ष में मिलाने के लिए, कई दुर्गम महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किए।

अध्यापक शिक्षण में परीक्षा सुधार

विभाग ने अध्यापक शिक्षण विभाग के सहयोग से अध्यापक-महाविद्यालयों के प्रिंसिपलों, लेक्चररों और विद्यार्थियों के लिए कई अभिस्थापन कार्यक्रम संगठित किए। इन कार्यक्रमों में अध्यापकों के महाविद्यालयों में अध्यापन और मूल्यांकन के कई विषयों पर विचार विमर्श हुआ, अध्यापन शिक्षण में मूल्यांकन की योजना का विकास हुआ, और प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विद्यार्थी अध्यापन सहित कार्य के विभिन्न अंगों के मूल्यांकन के साधन तैयार हुए। ऐसे कार्य क्रमों की सूची इस प्रकार है :

(1) नर्सिंग महाविद्यालय दिल्ली के लिए वर्कशाप,

(2) केरल मे अध्यापक शिक्षण कार्यक्रमों में तीव्र सुधार,

(3) पूर्वी कटिबन्ध के प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रिंसिपलों का सेमिनार,

(4) पूर्वी प्रदेश के प्रशिक्षण महाविद्यालयों के लेक्चररों के लिए अभिस्थापना कार्यक्रम और

(5) पश्चिमी प्रदेश के अध्यापक महाविद्यालयों के लिए विद्यार्थी अध्यापन और मूल्यांकन पर सेमिनार।

विश्वविद्यालय शिक्षा में परीक्षा सुधार

विश्वविद्यालय शिक्षा में पाठ्यक्रम के विकास और मूल्यांकन पर तीन सेमिनार सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बंगलौर विश्वविद्यालय और उत्तरी गुजरात विश्वविद्यालय में, विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रम विकास और परीक्षा सुधार से सम्बन्धित बातों पर विचार विमर्श के लिये और उसके लिये पाठ्यक्रम और मूल्यांकन में निम्नतम आवश्यक संशोधन लाने के हेतु संगठित हुए।

सभाएं और कान्फेन्सें

(1) 1967 की परीक्षा में लागू किए गए संशोधित प्रश्न पत्रों पर डी. एम. एस. के उम्मीदवारों के कामों पर विचार विमर्श के लिए और शिष्यों के संशोधन के साधनों के लिए निगण बहुधन्धी स्कूलों के हैडमास्टरों और पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग के अधिकारियों की संयुक्त सभा आयोजित हुई।

(2) राजस्थान बोर्ड की पाठ्यचर्या समिति (भौतिकी-शास्त्र) में एक अधिकारी ने भौतिकी में संशोधित व्यावहारिक परीक्षा पर विचार विमर्श करने के लिए भाग लिया।

(3) एक अधिकारी ने भारत में भाषा अध्यापन संस्थानों के निर्देशकों की तीसरी और चौथी कान्फ्रेन्स में भाग लिया।

(4) विभाग अध्यक्ष और पाठ्यक्रम के प्रोफेसर ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित विशिष्ट समिति में, पाठ्यक्रम पर शिक्षा आयोग की सिफारिशों पर विचार विमर्श करने के हेतु भाग लिया।

क्षेत्रीय महाविद्यालयों का विस्तार कार्यक्रम

कैम्पस में और क्षेत्रों के चुने हुए केन्द्रों में सेमिनारों का, सामान्य में माध्यमिक शिक्षा के सुधार के लिए और विभिन्न विषयों जैसे गृह-विज्ञान, व्यवसाय श्रव्य-दृश्य साधन, अंग्रेजी शिल्पकला अध्यापन में अध्यापकों की नवीन पहुंचों के लिए अध्यापन विधियों के लिए, महाविद्यलयों के विस्तार केन्द्रों के द्वारा आयोजन हुआ ।

5. हमारे स्कूलों के विज्ञान

प्रारंभ से ही यह परिषद् हमारे विद्यालयों में विज्ञान की शिक्षा की दशा से सम्बन्धित है । विज्ञान-शिक्षा विभाग ने स्कूलों में विभिन्न स्तरों पर विज्ञान शिक्षा के सुधार के लिए अनेक उपाय किए हैं ।

सर्वप्रथम आवश्यकता अच्छी पाठ्यक्रम सामग्री की विकास की थी और इस कार्य में परिषद् ने इस वर्ष में अपने को सम्बोधित किया ।

प्राथमिक स्कूलों के लिए सामान्य विज्ञान प्रायोजना

इस प्रयोजन में प्रारंभिक कार्य पहले से ही हो चुका है जिस के अन्तर्गत उच्च और निम्न विचारों के विकास के रूप में एककों का विस्तृत विश्लेषण देते हुए और ज्ञान अभिवृत्ति और प्रशंसा को बनाने के हेतु कक्षा प्रथम से चौथी तक के लिए सामान्य विज्ञान का पाठ्यक्रम तैयार किया गया था । इसका अनुगमन इस पाठ्यक्रम पर आधारित कक्षा छः से आठ तक के लिए क्रियाओं की पुस्तिका की तैयारी और प्रकाशन के द्वारा हुआ । यह अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के लिए एक अच्छा स्रोत बन गया है । यह हरेक विषय की गहराई और विषय क्षेत्र को सूचित करता है और ऐसी क्रियाओं का जो प्रत्ययों के विकास के लिए आवश्यक हैं—विधिवत् निर्देशन करता है ; इस प्रयोजन पर अन्य कार्य इस वर्ष कक्षा प्रथम से चौथी तक के पाठ्यक्रम में सुधार का था और विभिन्न शीर्षकों में एक संशोधित संकलन प्रकाशित हुआ है । इस पाठ्यक्रम के प्रोत्साहन के लिए अध्यापिकाओं के लिए पुस्तिका तीन भागों में तैयार हो चुकी है जिनमें से एक तो पहले से ही इस वर्ष प्रकाशित हो चुकी है और दूसरी दो प्रेस में है । ये पत्रिकाएं क्रियाओं के विभिन्न-विभिन्न क्षेत्रों को सूचित करती है, जिसमें आवश्यक प्रत्ययों के विकास के हेतु अध्यापक और शिष्य भाग ले सकते है । ऐसे विचार करके कि बहु संख्या में प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों को विज्ञान का वास्तविक ज्ञान शायद न हो, वैज्ञानिक तथ्यों के बुनियादी ज्ञान और वैज्ञानिक तत्वों के गूढ़ ज्ञान की जो कि वह संचारित करने चले हैं, सूचना दी गई है । कक्षा तीन से पांच तक के लिए संशोधित पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तकों को तैयार करने का काम इस वर्ष आरम्भ हुआ है ।

मिडिल स्तर पर विज्ञान और गणित के शिक्षण के सुधार के लिए प्रयोगात्मक प्रायोजना

इस कार्यक्रम का आरम्भ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान प्रशिक्षण परिषद् के निर्णय के फलस्वरूप यूनेस्को योजना मिशन की कुछ सिफारिशों, जिनका पुनः समर्थन शिक्षा आयोग के द्वारा हुआ, को फलीभूत करना था । इन रिपोर्टों की सिफारिशों में सब से प्रमुख सिफारिश थी कि उच्चतर स्तर पर विज्ञान की गहरी और विधिवत् नींव डालने के लिए प्राथमिक अवस्था के पश्चात जीव-विज्ञान,

भौतिकी-शास्त्र, रसायन-शास्त्र और गणित, सामान्य-विज्ञान के स्थान पर पढ़ाए जाने चाहियें। इसी-लिए विज्ञान और गणित शिक्षण के संशोधन के कार्यक्रम का सूत्रपात प्रयोगात्मक पाठ्य सामग्री स्तर पर किया गया। काम तीन चरणों में बंटा हुआ है। प्रथम चरण, संशोधित पाठ्यक्रम का विकास प्रयोगात्मक पाठ्यसामग्री अध्यापक और पाठ्यक्रम संदर्शिका और चुने हुए स्कूलों में प्रयोग के लिए विशिष्ट उपकरण है दूसरा चरण, प्राप्त पुष्टि के आधार पर पाठ्यक्रम सामग्री का अध्ययन और संशोधन है। तीसरी अवस्था भिन्न-भिन्न विषयों में विशेष स्तर पर अनुदेश सामग्री बनाने के हेतु सम्पूर्ण सामग्री का अंतिम संशोधन है। इस काम का सम्बन्ध मिडिल स्कूल की तीन वर्ष के तुल्य तीन वर्ष की पाठ्यचर्या के लिए सामग्री तैयार करना है।

प्रथम अवधि का काफी कार्य पूर्ण हो गया है और अब तक सब विषयों में अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में 18 पाठ्य शीर्षकों से, अध्यापक गाइड के 9 शीर्षकों और पाठ्यक्रम गाइड के 4 शीर्षकों के भाग एक और दो के विचारण संकलन तैयार हो गए हैं और दिल्ली के चुने हुए 31 स्कूलों में प्रयोगात्मक आधार पर प्रयोग हो रहे हैं। कोर्स के तृतीय वर्ष के लिए विचारात्मक पाठ्य की तैयारी 10 शीर्षकों से युक्त और दूसरी निर्देशन सामग्री के 8 शीर्षक तैयार हो रहे हैं। यह मई, 1968 तक पूर्ण हो जाएगी ऐसी आशा है।

इस कार्यक्रम की दूसरी अवधि के सम्बन्ध में भाग एक का संशोधन संकलन, अंग्रेजी और हिन्दी म आठ शीर्षकों और पाठ्यपुस्तक अध्यापक गाइड के चार अंग्रेजी शीर्षक में पूर्ण हो गया है और प्रकाशित हो गया है—इस सामग्री का प्रयोग अब दिल्ली में 31 प्रयोगात्मक स्कूलों में और 110 केन्द्रीय स्कूलों में हो रहा है। कोर्स के द्वितीय वर्ष की सामग्री के लिए जो कि अंग्रेजी और हिन्दी में पाठयपुस्तक के 10 शीर्षकों से युक्त है, पूर्ण हो गई है और प्रेस में भेजी जा चुकी है। जुलाई, 1968 तक अध्यापक गाइड और पाठ्यक्रम गाइड इन पाठ्यपुस्तकों के लिए प्रकाशित हो जाएगा। इन पुस्तकों का प्रयोग उपरोक्त स्कूलों में अगले वर्ष से होगा।

तीसरी अवधि के लिए काम शुरू हो गया है। प्रारंभिक उत्पादित सामग्री की जांच कई राजकीय एजेन्सियों के द्वारा हो गई है और कुछ राज्यों ने प्रयोगात्मक स्कूलों में इस सामग्री के प्रयोग के विचार की इच्छा विस्तृत रूप से अंगीकरण करने के पूर्व प्रकट की है। शिक्षा निदेशालय, दिल्ली शासन, ने जुलाई, 1968 से इसका सब स्कूलों में कक्षा छः से विज्ञान विषयों का अध्ययन के कार्यक्रम के विस्तार का और जुलाई, 1968 से पाठ्यक्रम के गणित विभाग के विस्तार के लिए निर्णय किया है।

विज्ञान शिक्षा के सुधार के लिए व्यापकार्थमत योजना

अप्रैल, 1966 में वैज्ञानिकों और शिक्षकों की हुई सभा ने स्कूलों में विज्ञान शिक्षा सुधार के प्रश्न पर और इस ध्येय की ओर योजना बनाने की विधियों के उत्तरदान के लिये विचार-विमर्श किया। ऐसा निश्चय किया गया कि आवश्यक और पूर्ण पाठ्यपुस्तक बनाने के हेतु विज्ञान के पाठ्यक्रम का संशोधन और विश्लेषण होना चाहिए। यह भी आवश्यक समझा गया था कि वैज्ञानिकों को भिन्न-भिन्न विज्ञानों के बुनियादी विषयों की पहिचान के लिए और उनके तर्क संगत तरीकों से उपस्थित करने के हेतु विश्वविद्यालयों और उच्च अध्ययन केन्द्रों से सम्बन्धित कराया जाए। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिष न 20 अध्ययन दल जिसमें गणित में छः; रसायन-विज्ञान में चार और

जीव-विज्ञान और भौतिक-विज्ञान प्रत्येक में पांच-पांच, अनेक विश्वविद्यालयों केन्द्रों में प्रत्येक विश्वविद्यालय के विज्ञान प्राध्यापक के निर्देशन में स्थापित किए हैं। स्कूल स्तर पर विज्ञान और गणित की शिक्षा के विकास कार्य में भारी संख्या में विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों और वृत्तिक वैज्ञानिकों का सहयोग-हमारे शैक्षिक जीवन की एक बहुत महत्वपूर्ण प्रगति है। यह अध्ययन दल आजकल माध्यमिक स्कूलों के प्रथम स्तर पर आवश्यक पाठ्यक्रम सामग्री तैयार करने में लगे हुए हैं वह माध्यमिक स्कूलों के उच्च स्तर के लिये भी सामग्री तैयार करेंगे। अध्ययन दल शिक्षा आयोग के द्वारा अपेक्षिक सब विद्यार्थियों के लिए आवश्यक विज्ञान के कोर्स का विकास कर रहे हैं।

सर्वप्रथम सामग्री का प्रयोग इलाके (मुहल्ले) के चुने हुए स्कूलों में प्रयोगात्मक मात्रा में दलों के द्वारा किया जाएगा और तब विस्तृत मात्रा में प्रयोग और प्रकाशन के लिए उपलब्ध होगा। अनेक अध्ययन दलों के विकसित और समन्वय कार्य के साथ विभाग का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस अवधि के दौरान रसायन-विज्ञान और जीव-विज्ञान अध्ययन दलों ने माध्यमिक स्कूलों के निम्न स्तर की पाठ्यचर्या के पाठ्यक्रम और अनुदेश सामग्री और पाठ्यक्रम का विकास किया है। भौतिक-विज्ञान दल ने निम्न स्तर पर प्रथम वर्ष की पाठ्यचर्या के लिए दो प्रकार की सामग्री तैयार की है। गणित दल ने दोनों प्राथमिक और निम्न माध्यमिक स्तरों पर काम किया है और इन अवस्थाओं के लिए पाठ्यक्रम सामग्री तैयार की है।

यूनेस्को, यूनिसेफ प्रायोजना

शिक्षा मंत्रालय ने यूनिसेफ के साथ योजना को चालू रखने के लिए समाधान किया है जो कि प्रशिक्षण संस्थानों को सज्जित करने के लिए, सेवा से पूर्व और सेवा कालीन कार्यक्रमों को क्षमतापूर्वक करने के लिए प्रयोगशाला उपस्कर प्रदान करती है। विभाग चुने हुए स्कूलों और कालेजों के द्वारा राज्यों में कार्यक्रमों को संगठित करने वाले कार्यचारियों के प्रशिक्षण की योजना के विकास में कार्यशील है। उपकरणों की सूचियों की योजना व तैयारी और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रारम्भिक कार्य पूर्ण हो चुका है।

अनुदेश सामग्री का विकास: अध्यापन एकक

जबकि पहले वाली पाठ्यक्रम प्रायोजना, प्रयोग और विचार के पश्चात विज्ञान और गणित के पाठ्यक्रम का समाधान करता है, कक्षा के अध्यापकों को उपस्थित पाठ्यक्रम के आधुनिक अध्ययन में सुधार कराना आवश्यक समझा गया था। पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग और क्षेत्र सेवा विभाग के सहयोग से उपस्थित पाठ्यक्रम पर आधारित विभिन्न विज्ञान शीर्षकों पर 'अध्यापन एककों' के विकास का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। विस्तार सेवा क्षेत्रीय केन्द्रों में बहुत सारे लेख दलों का संस्थापन हुआ है और लेख संशोधित संस्थापन हुआ है और लेख संशोधित अध्यापन केन्द्रों में वर्कशाप के कार्यक्रम के द्वारा इन के सदस्यों को प्रशिक्षित किया गया था। इन दलों के द्वारा उत्पादित सामग्री का विभाग में पुनर्दर्शन हुआ है और अन्त में कक्षा के अध्यापकों को सम्बन्धित विस्तार सेवाओं के द्वारा उपलब्ध हुआ है। इन अध्यापन एककों का प्रमुख उद्देश्य पूर्ण विषय सूची और नवीन प्रक्रियाओं, विधियों और अनुदेशों का समावेश है। इस वर्ष ऐसी चार प्रशिक्षण वर्कशापों का आयोजन हुआ।

संशोधित अध्यापन साधन

अच्छी पाठ्यक्रम सामग्री की तैयारी के साथ-साथ, नवीन पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू

करने के लिए सहायक अध्यापन साधनों का उत्पादन आवश्यक है। ऐसा विचार किया गया है कि अध्यापकों के लिए अच्छे निरुपण साधन और सादे देशज साधन अकेले शिष्य के काम के हेतु महत्व-पूर्ण आवश्यकताएं हैं। विज्ञान के प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम के अध्यापन के लिए आवश्यक वैज्ञानिक उपकरणों और साधनों के आदि रूपों के उत्पादन के लिए विभाग केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप के साथ घनिष्टता से कार्य कर रहा है, प्रयोगात्मक और विकसित देशों में प्रयोग किए जाने वाले यन्त्रों और साधनों का भारतीय दशाओं के अनुसार अनुकूलन करता है। विभाग ने यथायोग्य प्रयोगशाला -कक्षा संयुक्त फर्नीचर के अध्ययन का काम भी आरम्भ किया है और निदेशालय को उनके स्कूलों को सज्जित करने के लिए नमूने दिए हैं। साधनों के 30 टुकड़ों से अधिक आदिरूप के नमूने तैयार हो गए हैं और प्रयोगात्मक स्कूलों में प्रयोग के लिए सीमित संख्या में उत्पादन हो गया है। ऐसी आशा की जाती है कि वह राजकीय एजेन्सियों और निर्माताओं के द्वारा बहुत बड़ी संख्या में प्रतिलिपिकरण के लिए उपलब्ध होंगे। उपकरणों और उपस्करों के अतिरिक्त दूसरे अध्या-पन साधनों जैसे, किट्स, फिल्मस्, फिल्मपट्टियों और चार्टों के उत्पादन का कार्य भी आरम्भ हुआ है जो कि नवीन तैयार किए हुए पाठ्यक्रम को प्रोत्साहित करेगा।

केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप

केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप का निर्माण भारत में माध्यमिक स्कूलों के लिए विज्ञान साधनों के स्तर के नमूनों के प्रोटोटाइप उत्पादन करने के विचार से हुआ। धीरे-धीरे ऐसा निर्णय किया गया कि वर्कशाप कुछ विशेष विषयों के सीमित उत्पादन में आगे बढ़े जिनकी इस देश में आवश्यकता है, चाहे प्राईवेट क्षेत्रों में क्षमता की कमी के कारण अथवा विज्ञान शिक्षा के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में स्तरों के साधनों के संभरण को सुनिश्चित करने के कारण। इन विषयों के अनुसरण के हेतु, केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप यूनेस्को विशेषज्ञ के संयोग से माध्यमिक विज्ञान शिक्षण प्रायोजन पर काम कर रही है। इस अवधि के दौरान कक्षा चौथी से आरम्भ करके चार विषयों में काम आरम्भ हो गया है। (रसायन-शास्त्र, भौतिकी-विज्ञान, जीव-विज्ञान, और गणित) छठी कक्षा के भौतिकी और गणित के विषयों में 80 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो गया है।

कक्षा सात और कक्षा आठ के विषयों में विषय विशेषज्ञों के परामर्श से सरल से कठिन को पहले हल करने के नियम पर आधारित जीव-विज्ञान में चुने हुए आधार पर लिए गए हैं। रसायन-शास्त्र में कुछ पूर्ण हो गए हैं लेकिन शीशे के काम करने की सुविधाओं की अनुपस्थिति में विकास में यहां बाधा आ गई है।

दूसरा मुख्य प्रयोजन जो केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप में हो रहा है वह 'शारीरिक विज्ञान अध्ययन समान' है। यह प्रयोजन जिसमें कक्षा नौ से ग्यारह के लिये भौतिकी में 29 प्रयोग हैं, अमरीका की विधियों पर आधारित है और इस का आरम्भ दिसम्बर, 1966 में हुआ पर ठीक प्रकार से यह कार्य जनवरी-फरवरी 1967 में शुरू हुआ। प्रयोजन 2/3 हद तक पूर्ण हो गया है और चार किट्ज के अतिरिक्त अथवा वह जिनको अल्प अंगों की जैसे की बिजली के मूल्य की और डोसी-मीटर (ऊष्म विसर्जनगामी) किट्ज के आवश्यक नम्बर के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ग्रीष्म कालीन स्कूल कार्यक्रम के आरम्भ होने के समय तक उपलब्ध हो जाएगी। इस प्रकार वर्कशाप बहुत

संगठन के साथ किए गए मुख्य वचन को पूर्ण करने के लिए समर्थ है बहुत हद तक यद्यपि अभी तक यह वर्कशाप शैशवअवस्था में है और सभी कक्ष अभी पूर्णत: विकसित नहीं हुए हैं ।

कार्य अनुभव प्रयोजन पर बास जलयान किट पूर्णतः विकसित हो गया है और दिल्ली में चुने हुए स्कूलों में प्रयोग के लिए इन्तजार कर रहा है । दूसरा किट लकड़ी जलयान पर विकसित अवस्था में है और आशा है कि मार्च 1968 तक पूर्ण हो जाएगा । पूर्ण पाठ्यक्रम और प्रारंभिक वर्कशाप अभ्यास के कार्य अनुभव निधाओं से सम्बन्धित प्रयोग दल भी तैयार हो गया है और राज्यों को शीघ्र ही प्रयोग करने के हेतु भेजा जाएगा । प्रारंभिक वर्कशाप अभ्यास की इस क्रिया की अभिव्यक्ति इस प्रमुख टेक्नालोजी के क्षेत्र में आधुनिक बच्चों को अंशित करना है और ज्यादा सावधानी को आकर्षित करना है ऐसी आशा है । जी. ए. आर. पी. योजना के अन्तर्गत निर्मित बुद्धि परीक्षा के लिए सामग्री के उत्पादन पर काम किया गया था ।

आदिरूपों का सीमित उत्पादन और उनके पुर्नउत्पादन केन्द्र का संगठन माध्यमिक शिक्षा क्षेत्रों में और दिल्ली में और उसके आस-पास के क्षेत्रों में है और जिनकी भी प्रदर्शनियां, कान्फ्रेंसों और सेमिनारों का आयोजन होता है इन विषयों के लिए स्वेच्छ मांग होती है । वर्कशाप ने पहले भी दो ऐसी प्रदर्शनियों में 1967-68 में जयपुर और रोहतक में भाग लिया ।

6. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का पुस्तकालय

पहली अगस्त, 1967 से राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के कैम्पस में संस्थान के केन्द्रीय कार्यालय की स्थापना से और विभागों के कैम्पस, हौज खास/ग्रीन पार्क क्षेत्र में चले जाने से (श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभाग और प्रौढ़ शिक्षा विभाग के अतिरिक्त जो अभी तक उस क्षेत्र में नहीं गए) सब विभागों के पुस्तकालयों का विलयन राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय में हो गया है । जब तक पुस्तकालय का अपना भवन नहीं बन जाता उसे दो गोदामों में से एक में स्थान मिल गया है । पुस्तकालय का कुल संग्रह लगभग 80,000 पुस्तकों का है । इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय में 2500 पत्रिकाओं का संग्रह है ।

पुस्तकालय का प्रयोग राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के कर्मचारियों और छात्रों के द्वारा बहुत विस्तृत रूप से होता है । इसके प्रयोग का विस्तार राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में और इसके इर्द-गिर्द काम करने वाले लोगों के लिए भी है ।

पुस्तकालय 10-15 प्रातः से 7-30 रात तक खुला रहता है ।

7. शैक्षिक साहित्य और साधन-सामग्री

1967-68 के दौरान राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् का प्रकाशन-कार्यक्रम बहुत तीव्र गति से बढ़ा । इस कार्यक्रम में पन्द्रह विषय क्षेत्रों की आदर्श पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण-सामग्री, अध्यापकों की पुस्तिकाओं और छात्रों के लिए अभ्यास-पुस्तकों का प्रकाशन सम्मिलित है । इसी कार्यक्रम में शिक्षा के शब्द कोश (शैक्षिक अनुसंधान और माध्यमिक शिक्षा), माध्यमिक स्कूलों के लिए पूरक शैक्षिक सामग्री, अनुसन्धान संबंधी मोनोग्राफ, रिपोर्ट पुस्तिकाएं और विदेशी पुस्तकों के सस्ते संस्करण प्रकाशित करना भी सम्मिलित है ।

पाठ्यपुस्तकें और पूरक शैक्षिक सामग्री

1962 में राष्ट्रीय परिषद् ने आदर्श पाठ्यपुस्तकें तथा अन्य शिक्षण-सामग्री, अध्यापक दर्शिकाएं और छात्रों के लिए अभ्यास पुस्तकें तैयार करने और अपने शैक्षिक सामग्री संबंधी कार्यक्रम को पूरा करने के लिए, केन्द्रीय शिक्षा मंत्री की अध्यक्षता में एक शैक्षिक साहित्य सम्बन्धी केन्द्रीय समिति स्थापित की। इस केन्द्रीय समिति ने आगे स्कूल शिक्षा के स्तर तक की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए कृषि-शास्त्र, जीव-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, वाणिज्य-शास्त्र, सामान्य विज्ञान, भूगोल, हिन्दी, इतिहास, गणित, भौतिकी, संस्कृत, सामाजिक अध्ययन, अध्यापक प्रशिक्षण, माध्यमिक और व्यावसायिक स्कूलों के टैक्नोलोजी के विषयों में नामिकाएं और संपादन मंडल स्थापित किए हैं। राष्ट्रीय परिषद् कुछ उपरोक्त विषयों में पाठ्यपुस्तकों को हिन्दी भाषा में तैयार कर रही है। परिषद् सेन्ट्रल इंस्टीच्यूट आफ इंगलिश, हैदराबाद के सहयोग से स्कूल स्तर की अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तकें भी तैयार कर रही है।

पाठ्यपुस्तकें और अध्यापक पुस्तिकाएं

1967-68 में निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

1. जीव-विज्ञान	जीव-विज्ञान, भाग एक और जीव-विज्ञान, भाग दो माध्यमिक स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक (हिन्दी), मिडिल स्कूलों के लिए अध्यापक संदर्शिका और पाठ्यक्रम संदर्शिका सहित बायलोजी की पाठ्यपुस्तक
2. रसायन-विज्ञान	रसायन-विज्ञान पाठ्यपुस्तक कक्षा 7 के लिए रसायन-विज्ञान पाठ्यपुस्तक कक्षा 6 के लिए (हिन्दी)
3. सामान्य विज्ञान	सामान्य विज्ञान की पाठ्यपुस्तक कक्षा 7 के लिए समान्य विज्ञान—'हैण्ड बुक ऑफ एक्टीविटीज' कक्षा एक से पांच तक (खंड एक)
4. भूगोल	इकोनोमिक ज्योग्राफी फार सैकंड्री स्कूल्ज
5. हिन्दी	कक्षा III के लिए हिन्दी पाठ्यपुस्तक अनुपूरक पुस्तकें. काव्य के अंग और एकांकी संकलन माध्यमिक स्कूलों के लिये, हिन्दी पाठ्यपुस्तक कक्षा छः के लिये
6. इतिहास	मिडिल स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक—मैडिवल इण्डिया।
7. गणित	ज्योमैट्री पाठ्यपुस्तक कक्षा छः के लिये; बीजगणित की पाठ्यपुस्तक कक्षा सात के लिए (हिन्दी); ज्योमैट्री पाठ्य पुस्तक कक्षा सात (हिन्दी)
8. सामाजिक अध्ययन	सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक कक्षा पांच के लिए
9. टैक्नोलोजी	एलीमेन्ट्स ऑफ मेकेनीकल इंजीनियरिंग; एलीमेन्ट्स ऑफ इलैक्ट्रीकल इंजीनियरिंग; वर्कशाप प्रक्टिस—पार्ट एक; इंजिनियरिंग ड्राइंग

निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकें मुद्रित हो रही हैं

1. रसायन-विज्ञान	रसायन-विज्ञान, पाठ्य पुस्तक माध्यमिक स्कूलों के लिए भाग एक
2. वाणिज्य	बुक कीपिंग और एकाउंटैंसी

3. अंग्रेजी	अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक कक्षा तीन के लिए
4. सामान्य विज्ञान	सामान्य विज्ञान--हैण्ड बुक आफ एक्टीविटीज कक्षा एक से पांच खंड दो और तीन
5. भूगोल	फिजिकल ज्योग्राफी
6. हिन्दी	हिन्दी पाठ्यपुस्तक कक्षा 4 के लिए
	,, ,, ,, 5 ,,
	,, ,, ,, 7 ,,
	,, ,, ,, 8 ,,
7. गणित	अलजेब्रा पाठ्यपुस्तक माध्यमिक स्कूलों के लिए भाग एक और दो
8 भौतिकी	माध्यमिक स्कूलों के लिए भौतिकी पाठयपुस्तक
9. संस्कृत	संस्कृतोदय--माध्यमिक कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तक
10. सामाजिक अध्ययन	माध्यमिक स्कूलों के लिए सामाजिक अध्ययन, हमारा देश-भारत कक्षा 3
11. टैक्नोलोजी	वर्कशाप प्रैक्टिस--भाग दो

बहुत-सी राज्य-सरकारों और केन्द्रीय प्रदेशों ने परिषद् की पाठ्यपुस्तकों को स्वीकार कर लिया है। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दिल्ली, केन्द्रीय विद्यालय संगठन और शिक्षा निदेशालय, दिल्ली ने भी इन पाठ्यपुस्तकों को स्वीकार कर लिया है और इनका प्रयोग कर रहे हैं।

अनुपूरक शैक्षिक सामग्री

पाठ्यपुस्तकों के निर्माण-कार्यक्रम के अतिरिक्त राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् ने अनुपूरक शिक्षण सामग्री के निर्माण का कार्यक्रम बनाया है। इस सामग्री का ध्येय बच्चों में ठीक प्रकार की देशभक्ति को प्रोत्साहन देना और परिषद् के सामाजिक अध्ययन पाठ्य विवरण के आधार पर सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम के लिए समृद्धि करना है। विज्ञान पुस्तकमाला के अनुपूरक पाठक भी उपरोक्त कार्यक्रम के अंग हैं। इस पुस्तकमाला का सामान्य ध्येय स्कूल के बच्चों का विज्ञान में रूचि पैदा करना और विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले मुख्य विकासों के साथ उनका सम्पर्क स्थापित करना है। इस अवधि में पुस्तकमाला के अन्तर्गत 'दी कोन्सटीट्यूशन आफ इण्डिया फार यन्ग रीडरर्स' और 'दी फेसिस आफ करेज,' तैयार किए गए हैं। विज्ञान पाठ्यपुस्तक के अनुपूरक पाठकों के अन्तर्गत 'दी यूनिवर्स' और 'वेपन्स नए और पुराने' अभी-अभी तैयार हुए हैं। अब तक जो सामग्री तयार अथवा प्रकाशित हुई है, वह माध्यमिक स्कूल के छात्रों के लिए है, महान भारतीय नेताओं और देशभक्तों की पाठ्यपुस्तक के अन्तर्गत निम्नलिखित की योजना बनाई गई है और काम शुरू कर दिया है--गान्धी जी, जवाहरलाल नेहरू, टैगोर, राजा राम मोहन राय और अकबर। अकबर शीर्षक की पाण्डुलिपि का मूल्यांकन हो गया है और अब प्रकाशित हो रही है। 'फाउंडरस आफ अवर लिविंग फेथस', शीर्षक के अन्तर्गत निम्नलिखित पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई है (1) बुद्ध (2) जीसस क्राइस्ट (3) गुरु नानक। कुछ अन्य शीर्षक जो तैयार हो रहे है, ये है: (1) लाइफ एण्ड वर्क आफ मेघनादसाह (प्रेस में),

(2) दी डिसकवरी आफ ओशनस, (3) रोक्स अनफोल्ड दी पास्ट, (4) बर्ड माइग्रेशन, (5) बर्डस बर्नचिंग, (6) अवर ट्री नेबर्स, (7) दी स्टोरी आफ आयल, (8) दी स्टोरी आफ ट्रांसपोर्ट (9) दी स्टोरी आफ फोसिल्स और (10) दी स्टोरी आफ ग्लास ।

शब्द कोश

प्रथम ईयरबुक आफ एजुकेशन (पुनर्मुद्रण) भाग दो और तृतीय ईयरबुक (एजुकेशनल रिसर्च) इस समय छप रहे हैं और शीघ्र ही उपलब्ध हो जाएंगे ।

पत्रिकाएं

परिषद् 1967-68 में यथावत अर्ध वार्षिक शोध-पत्रिका 'इंडियन एजुकेशनल रिव्यू' और पाक्षिक पत्रिका 'एन० आई० ई० जर्नल' और त्रैमासिक पत्रिका 'स्कूल साइन्स' और 'एन० आई० न्यूज़-लैटर' प्रकाशित कर रही है ।

विदेशी प्रकाशनों का पुनर्मुद्रण

भारत-अमरीकी मानक पुस्तकों के प्रकाशन के संयुक्त कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद् विदेशी पुस्तकों के सस्ते भारतीय संस्करण तैयार कर रही है ।

लगभग एक सौ पांडुलिपियों पर विभाग में काम किया गया है । प्रकाशनों की पांडुलिपियों की सूचि परिशिष्ट 9 में दी गई हैं ।

प्रचार और बिक्री

प्रकाशन विभाग ने इस अवधि में परिषद् के प्रकाशनों की बिक्री को बढ़ाने के लिए कई स्थानों पर प्रदर्शनियों के माध्यम से प्रचार साधनों का प्रभावकारी ढंग से प्रयोग किया । इस वर्ष 20,000 के लगभग प्रतियाँ बिकीं और कुल बिक्री 20.00 लाख रुपए के लगभग हुई ।

8. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय संपर्क

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने अपने उन अधिकारियों के लिए जो विदेश गए हुए हैं, अमरीका अन्तर्राष्ट्रीय विकास एजेन्सी, यूनेस्को तथा दूसरी एजेन्सियों से सहायता प्राप्त की है। यह सहायता विशेषज्ञ जानकारी, साज-सामान और प्रशिक्षण सुविधाओं के रूप में ली गई हैं।

राष्ट्रीय परिषद को जिन प्रमुख क्षेत्रों में विदेशी सहायता प्राप्त हुई है, वे हैं : (1) विज्ञान शिक्षा तथा केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप का विकास, (2) बहुद्देशीय शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय और (3) केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के कार्यक्रम, उदाहरणतः परीक्षा-सुधार और शैक्षिक प्रशासन।

आपरेशनल एग्रीमेंट 99 : राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के प्रोग्राम

टी० सी० सी० यू० के द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के लिए मिलने वाली सहायता का कार्यक्रम 30 जून, 1967 को स्थगित हो गया। टी० सी० सी० यू० के साथ नए सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रस्ताव-पत्र तैयार किए जा रहे है। चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के कार्यक्रमों के लिए विशेषज्ञों के रूप में सहायता देनी चालू रही।

यूनेस्को

माध्यमिक विज्ञान शिक्षण के अन्तर्गत, लगभग आठ विशेषज्ञों की सेवाएं विज्ञान विभाग और केन्द्रीय विज्ञान वर्कशापों के लिए उपलब्ध हुई। विशेषज्ञ मुख्यतः सामग्री बनाने में लीन थे और विशेषकर विज्ञान विषय के पाठ्यक्रम के लिए कक्षा छः से आरम्भ करके शिक्षकों की गाइड-पुस्तक (संदर्शिका) बनाने में। इस अवधि के दौरान दस अधिकारियों को विदेश में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। यूनेस्को की सहायता श्रमिक विद्यापीठ के कार्यक्रमों में कार्य करने वालों की शिक्षा, मुख्यतः व्यावसायिक क्षेत्रों में उपलब्ध हुई। एक श्रमिक विद्यापीठ बम्बई में पहले स्थापित हो गया है और दूसरा दुर्गापुर में अति शीघ्र ही काम शुरू करने वाला है, ऐसी आशा है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन मास की अवधि के लिए श्री एस० दुरैस्वामी को यू० एस० एस० आर० भेजा गया।

शिक्षा के अध्ययन के लिए श्रव्य-दृश्य के प्रयोगों का प्रचार करने के विचार से रुपए के भुगतान पर 1500 फिल्मपट्टी प्रक्षेपीयों का आयात हुआ है। यह चुने हुए स्कूलों में क्रय मूल्य पर बेचे जाएंगे। भारत में निर्मित यथोचित प्रक्षेपीयों को उचित निम्न मूल्य पर प्राप्त करने के लिए भी ध्यान दिया जा रहा है।

यूनिसेफ

परियोजना के विकास के लिए इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विशेषज्ञ विज्ञान शिक्षा विभाग के साथ काम करते रहे हैं। यूनिसेफ, कागजों के संभरण और अन्य आवश्यक वस्तुओं के रूप में सहायता देता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 2,27,000 डालर की व्यवस्था की गई है।

कोलम्बो योजना — कोलम्बो योजना के अन्तर्गत ब्रिटेन से वैज्ञानिक विषयों पर 19 फिल्में प्राप्त हुई हैं जिनकी लागत लगभग 11,000 रुपए है।

फोर्ड फाउंडेशन—फोर्ड फाउंडेशन ने व्यावसायिक शिक्षा के लिए 2,61,000 डालर की सहायता देने का प्रस्ताव रखा। इस सहायता की प्राप्ति का विस्तृत ब्यौरा बन रहा है।

विविध संपर्क

परिषद् ने ब्रिटिश परिषद और नफील्ड फाउंडेशन, यूनेस्को आदि के साथ संपर्क बनाए रखे। राष्ट्रीय परिषद् जो कि अपने अधिकारियों को भारत में तथा विदेशों में प्रशिक्षण देती है, नियमित रूप से विशेष कार्यक्रमों के अन्तर्गत उपलब्ध अवसरों के अनुसार अपने अधिकारियों को विदेशों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भेजती है और बाहर से आने वाले विदेशी विशेषज्ञों की सेवाओं का लाभ उठाती है—इस प्रकार।

(1) 1967 की ग्रीष्म में ब्रिटेन में उत्तर कैरोलिना चेपल हिल के विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण की विधियों पर हुई अन्तर्राष्ट्रीय वर्कशाप में डा० शिव० के० मित्रा और डा० प्रयाग मेहत्ता ने संकाय सदस्यों के रूप में काम किया। डा० मित्रा ने पैरिस म आयोजित प्रयोगात्मक साक्षरता परियोजना के मूल्यांकन के लिए खण्ड (पेनल) की बैठक में और स्टोकहोम (स्वेडन) में आयोजित हुई आई० ई० ए० परिषद् की बैठक में भी भाग लिया। डा० मेहता ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय के स्नातक शिक्षा स्कूलों में दो सप्ताह के लिए काम किया था और कैरों में, टोकियो विश्वविद्यालय और जापान में क्योटो विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। शिक्षा व्यवस्था के राष्ट्रीय संस्थान और प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन मास की अवधि के लिए, श्री एस० दुरैस्वामी को यू० एस० एस० आर० भेजा गया था।

(2) डा० रवीन्द्र दवे और डा० एस० एस० कुलकार्णी ने 'दी पासीबिलिटीज एण्ड लिमिटेशनस आफ एजुकेशनल टेस्टिंग' पर पेडागोमीस्चिज जैन्तरम, बर्लिन के द्वारा संगठित सम्मेलन में भाग लिया। डा० रवीन्द्र दवे ने एशिया में टोकियों में 23 अक्टूबर से 24 नवम्बर 1967 तक स्कूल पाठ्यक्रम से सम्बन्धित समस्याओं के ऊपर हुई प्रथम शैक्षिक अनुसन्धान वर्कशाप में भी भाग लिया और उन्होंने एशियाई देशों में टोकियो में 5 से 12 मार्च, 1968 तक 'पाठ्यक्रम के तुलनात्मक अध्ययन' पर अनुसन्धान प्रयोजन के लिए एक समन्वय समिति कार्यान्वित की और उसमें भाग लिया। वह पाठ्यक्रम विकास पर प्रथम एशियाई अनुसन्धान प्रयोजन के प्रयोजन निदेशक नामित हो चुके हैं। उन्होंने मास्को में 16 जनवरी से 23, 1968 तक 'सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम के विशेषज्ञों' की सभा में भी भाग लिया।

(3) डा० पी० एच० मेहता को ब्रिटेन के इयुनिने के ओरिगन विश्वविद्यालय में सह अध्यापक के हेतु 'फुलब्राइट सीनिअर स्कालरशिप' इनाम मिला।

(4) प्रो० जे० के० शुक्ला ने फिलिपाइन्स में क्यूजन शहर में 5 से 19 जुलाई, 1967 तक 'एशिया में प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण,' पर परिसंवाद में भाग लिया ।

(5) कुमारी सी० मेहरा ने फिलिपाइन्स में मनीला में एशियाई संस्थान में अगस्त, 1966 से अप्रैल, 1967 तक के नौ महीने के डिप्लोमा पाठ्यचर्या में भाग लिया ।

(6) श्री एल० सी० सी० सिंह आगे अध्ययन के लिए, अर्बन, इलिनोएस ब्रिटेन को गए ।

(7) डा० सी० एस० सुब्बा राव, प्राथमिक शिक्षा अध्ययन में दस मास के प्रशिक्षण के लिए बालदविन बैलेंस कालेज, बेरिए, ओहियो, ब्रिटेन में गए ।

(8) श्री कृष्णगोपाल रस्तोगी ने भाषा मनोविज्ञान और सिमैन्टिक पर ईरान, तेहरान में हुई कान्फ्रेंस में भाग लिया ।

(9) श्री सौरीश चं चौधरी फिलिपाइन्स विश्वविद्यालय में शिक्षकों के एशियाई संस्थान कार्य अनुभव के कार्यक्रम के अध्ययन के लिए भेजे गए ।

(10) श्री के० बी० रेगे ने डेनमार्क में 16 जुलाई से 26 अगस्त, 1967 तक के छ: मास के, 'प्रौढ़ शिक्षा पर क्षेत्रीय सेमिनार' में भाग लिया ।

बुडापेस्त, हंगरी के सांस्कृति सम्बन्धी संस्थान की कुमारी वीरा गाथी, यूनेस्को कार्यालय से श्री एस० आर० सामदी और मलेशिया, कुलमपुर में पुस्तकालय अधिकारी और प्रमुख पाठ्यपुस्तक अधिकारी ने राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान का भ्रमण किया और सम्बन्धित विभागों के अध्यक्षों और श्री पी० एन० नातू, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के साथ विचारविमर्श किया ।

परिषद् उन सब एजेन्सियों का, जिन्होंने परिषद् की प्रक्रियाओं और कार्यक्रमों में रुचि ली और सहयोग बढ़ाया, सद्भावना से धन्यवाद करती है ।

परिशिष्ट 1

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के सदस्यगण

1 डा० त्रिगुण सेन, (अध्यक्ष)
शिक्षा मंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली ।

2 श्री प्रेम किरपाल, (उपाध्यक्ष)
शिक्षा सलाहकार एवं सचिव,
भारत सरकार,
शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली ।

3 शिक्षा मंत्री,
आंध्र प्रदेश,
हैदराबाद ।

4 शिक्षा मंत्री,
असम,
शिलांग ।

5 शिक्षा मंत्री,
गुजरात,
अहमदाबाद ।

6 शिक्षा मंत्री,
हरियाणा
चंडीगढ़ ।

7 शिक्षा मंत्री,
बिहार,
पटना ।

8 शिक्षा मंत्री
जम्मू-कश्मीर,
श्रीनगर ।

9 शिक्षा मंत्री,
महाराष्ट्र,
बम्बई ।

10 शिक्षा मंत्री,
केरल,
त्रिवेन्द्रम

11 शिक्षा मंत्री,
मध्य प्रदेश,
भोपाल ।

12 शिक्षा मंत्री,
मैसूर,
बंगलौर ।

13 शिक्षा मंत्री,
उड़ीसा,
भुवनेश्वर ।

14 शिक्षा मंत्री,
पंजाब,
चंडीगढ़ ।

15 शिक्षा मंत्री,
राजस्थान,
जयपुर ।

16 शिक्षा मंत्री,
उत्तर प्रदेश,
लखनऊ ।

17 शिक्षा मंत्री,
मद्रास,
मद्रास ।

18 शिक्षा मंत्री,
पश्चिमी बंगाल,
कलकत्ता ।

19 शिक्षा मंत्री,
नागालैण्ड,
कोहिमा ।

20 मुख्य आयुक्त,
अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह,
पोर्ट ब्लेयर ।

21 लेफ्टिनेण्ट गवर्नर,
दादर और नगर हवेली,
सिलवासा ।

22 लेफ्टिनेण्ट गवर्नर,
दिल्ली प्रशासन,
दिल्ली ।

23 लेफ्टिनेण्ट गवर्नर,
गोआ, दमन और दीव
पंजिम ।

24 लेफ्टिनेण्ट गवर्नर,
हिमाचल प्रदेश
शिमला ।

25 प्रशासक,
संघीय राज्य,
लक्कादीव,
ककर्ती ।

26 प्रधान आयुक्त,
मणिपुर,
इम्फाल ।

27 सलाहकार, असम गवर्नर,
एन० ई० एफ० एजेन्सी,
शिलांग ।

28 लेफ्टिनेण्ट गवर्नर,
पांडिचेरी सरकार,
पांडिचेरी ।

29 प्रधान आयुक्त,
त्रिपुरा,
अगरतला ।

30 लेफ्टिनेण्ट गवर्नर,
चंडीगढ़ प्रशासन,
चंडीगढ़ ।

31 डा० बी० एन० गांगुली,
उप-कुलपति,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

32 डा० दौलतसिंह कोठारी, अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली ।

33 डा० (कुमारी) कौमुदी,
उप वित्त सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

34 डा० शिव के० मित्रा,
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान
और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

35 प्रो० एम० वी० माथुर,
निदेशक,
एशियाई शैक्षिक आयोजन एवं प्रशासन संस्थान,
नई दिल्ली ।

36 प्रो० शांति नारायण,
प्रिंसिपल,
हंसराज कालेज,
दिल्ली ।

37 प्रो० आर० के० दासगुप्ता,
अध्यक्ष, आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

38 श्री के० जी० सैय्यदेन,
सी 1/7, तिलक लेन,
नई दिल्ली ।

39 डा० पी० के० केलकर,
निदेशक,
भारतीय शिल्प विज्ञान संस्थान,
कानपुर ।

40 प्रो० पी० एन० धर,
निदेशक, आर्थिक विकास संस्थान,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

41 डा० एस० मित्रा,
उप-कुलपति,
उत्कल विश्वविद्यालय,
भुवनेश्वर,

42 डा० कुरुविरा जेकब,
प्रिंसिपल, हैदराबाद पब्लिक स्कूल,
बेगमपेठ, हैदराबाद,

43 डा० एम० एस० गोरे,
निदेशक, टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान,
बम्बई ।

44 प्रो० ए० आर० कामथ,
सांख्यिकी प्रोफेसर,
गोखले राजनीति एवं अर्थशास्त्र संस्थान,
पूना ।

45 श्री एन० डी० सुन्दरवडिवेलू,
संयुक्त शिक्षा सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

46 डा० वी० सी० वामन राव,
उप-कुलपति,
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,
तिरूपति ।

47 श्री एल० आर० सेठी,
अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,
नई दिल्ली ।

48 प्रो० हीरेन मुखर्जी,
संसद सदस्य,
नई दिल्ली ।

49 डा० एस० सी० जोशी,
शिक्षा सलाहकार,
नई दिल्ली

50 प्रो० ए० मुजीब,
अध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़ ।

51 श्री पी० एन० नातू (सदस्य सचिव)
सचिव,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

परिशिष्ट 2

शासी निकाय के सदस्यगण

1 डा० त्रिगुण सेन (अध्यक्ष)
शिक्षा मंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली ।

2 श्री प्रेम किरपाल (उपाध्यक्ष)
शिक्षा सलाहकार एवं सचिव,
भारत सरकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

3 डा० दौलत सिंह कोठारी,
अध्यक्ष,
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली ।

4 डा० बी० एन० गांगुली,
उप-कुलपति,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

5 डा० (कुमारी) कौमुदी,
उप वित्त सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

6 डा० शिब के० मित्रा,
संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

7 श्री के० जी० सैय्यदेन,
सी 1/7, तिलकलेन,
नई दिल्ली ।

8 प्रो० एम० वी० माथुर,
निदेशक
एशियाई शैक्षिक आयोजन एवं प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली ।

9 प्रो० शांति नारायण,
प्रिंसिपल,
हंसराज कालेज,
दिल्ली ।

10 प्रो० आर० के० दासगुप्ता,
अध्यक्ष, आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

11 स्थान रिक्त है ।

12 श्री पी० एन० नातू (सदस्य सचिव)
सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

परिशिष्ट 3

वित्त-समिति के सदस्यगण

1 निदेशक, (अध्यक्ष)
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, नई दिल्ली ।

2 डा० शिव के० मित्रा,
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद,
नई दिल्ली ।

3 डा० (कुमारी) कौमुदी,
उप वित्त सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

4 प्रो० शांति नारायण,
प्रिंसिपल,
हंसराज कालेज,
दिल्ली ।

5 प्रो० आर० के० दासगुप्ता,
अध्यक्ष,
आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

6 श्री पी० एन० नातू (सदस्य सचिव)
सचिव,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

परिशिष्ट 4

शैक्षिक अध्ययन मंडल के सदस्यगण

1 निदेशक (अध्यक्ष)
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

2 संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्,
नई दिल्ली ।

3 श्री जे० पी० नाइक,
सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

4 श्री एल० ओ० जोशी,
आयुक्त,
केन्द्रीय शिक्षण संगठन,
नई दिल्ली ।

5 श्रीमति आई० एल० सिन्हा,
प्रिंसिपल,
दौलतराम कालेज,
दिल्ली ।

6 प्रो० आर० के० दास गुप्ता
अध्यक्ष,
आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

7 प्रो० शान्तिनारायण
प्रिंसिपल,
हंसराज कालेज,
दिल्ली ।

8 श्री के० जी० सैय्यदेन,
सी. 1/7, तिलक लेन,
नई दिल्ली ।

9 अध्यक्ष,
मनोवैज्ञानिक आधार विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, नई दिल्ली ।

10 अध्यक्ष,
प्रौढ़ शिक्षा विभाग ।
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद् ।
नई दिल्ली ।

11 अध्यक्ष,
विज्ञान शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली ।

12 अध्यक्ष,
पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग,
नई दिल्ली ।

13 अध्यक्ष
श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभाग,
नई दिल्ली ।

14 अध्यक्ष,
क्षेत्र सेवा विभाग
नई दिल्ली।

15 अध्यक्ष,
केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप
नई दिल्ली।

16 अध्यक्ष,
शैक्षिक प्रशासन विभाग
नई दिल्ली।

17 अध्यक्ष,
अध्यापक विभाग
नई दिल्ली।

18 अध्यक्ष,
शिक्षा आधार विभाग
नई दिल्ली।

19 प्रिंसिपल,
केन्द्रीय शिक्षा संस्थान
नई दिल्ली।

20 श्री पी० एन० नातू,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली।

परिशिष्ट 5

स्थायी अनुसन्धान समिति के सदस्यगण

1 डा० शिव के० मित्रा, (अध्यक्ष)
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

2 श्री जे० पी० नाइक
सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

3 डा० एन० पी० पिल्लै
अध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
केरल विश्वविद्यालय,
त्रिवेन्द्रम ।

4 डा० ए० आर० कामथ,
सांख्यिकी प्रोफेसर,
गोखले राजनीति एवं अर्थशास्त्र संस्थान,
पूना ।

5 प्रो० आर० बी० माथुर,
अध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ ।

6 डा० एम० एस० गोरे,
निदेशक,
टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान,
बंबई ।

7 डा० ए० मुजीब,
अध्यक्ष,
शिक्षा-विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़ ।

8 प्रो० एस० एम० मोहसिन,
प्रोफेसर और अध्यक्ष,
मनोवैज्ञानिक विभाग,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना ।

9 डा० पी० एन० धर,
निदेशक,
अर्थशास्त्र विकास संस्थान,
दिल्ली ।

10 प्रो० एस० वी० अदावल,
अध्यक्ष,
शिक्षा-विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद ।

11 डा० आर० एच० दवे
अध्यक्ष,
पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग
नई दिल्ली ।

12 प्रो० पी० के० राय,
प्रिंसिपल,
केन्द्रीय शिक्षा संस्थान,
दिल्ली ।

13 डा० टी० ए० कोशी,
अध्यक्ष,
प्रौढ़ शिक्षा विभाग,
नई दिल्ली ।

14 प्रो० जे० के० शुक्ला,
अध्यक्ष,
अध्यापक, शिक्षण विभाग,
नई दिल्ली ।

15 विशेष कार्याधिकारी, (सदस्य सचिव)
तकनीकी कक्ष,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

परिशिष्ट 6

विस्तार एवं क्षेत्र सेवा समिति के सदस्यगण

1 श्री ए० सी० देवे गौडा (अध्यक्ष)
74, मिल्लर रोड,
बंगलोर-1,

2 श्री ए० आर० दाऊद (सदस्य)
सचिव,
अंजुमन-ए-इस्लाम,
92, डा० डी० एन० रोड,
बम्बई ।

3 श्री बी० एस० माथुर,
उप निदेशक,
शिक्षा विभाग,
हरियाणा,
चंडीगढ़ ।

4 डा० (श्रीमति) चित्रा नाइक,
निदेशक,
राज्य शिक्षा संस्थान,
महाराष्ट्र,
पूना ।

5 श्री यू० पी० सिन्हा,
निदेशक,
राज्य शिक्षा संस्थान,
बिहार,
पटना- ।

6 डा० जी० चौरासिया,
प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
भोपाल ।

7 श्री पी० डी० शर्मा,
प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
अजमेर ।

8 डा० एम० बी० बुच,
अध्यक्ष,
क्षेत्र सेवा विभाग,
नई दिल्ली ।

9 डा० आर० एच० दवे,
अध्यक्ष,
पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग,
नई दिल्ली ।

10 प्रो० जे० के० शुक्ला,
अध्यक्ष,
अध्यापक शिक्षण विभाग,
नई दिल्ली ।

11 डा० एम० सी० पन्त,
अध्यक्ष,
विज्ञान शिक्षा विभाग,
नई दिल्ली ।

12 कार्याधिकारी, (सदस्य सचिव)
तकनीकी कक्ष अनुभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

परिशिष्ट 7

केन्द्रीय शैक्षिक साहित्य समिति के सदस्यगण

1 डा० त्रिगुण सेन, (अध्यक्ष)
केन्द्रीय शिक्षा मंत्री,
नई दिल्ली ।

2 डा० दौलतसिंह कोठारी,
अध्यक्ष,
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली ।

3 निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

4 डा० बी० एन० गांगुली,
उप कुलपति
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

5 डा० डी० सी० पवाते,
राज्यपाल,
पंजाब,
चंडीगढ़ ।

6 डा० एस० पी० चैटर्जी,
निदेशक,
राष्ट्रीय एटलस संगठन,
1-आचार्य जगदीश बोस रोड,
कलकत्ता ।

7 श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी ।

8 डा० तारा चन्द,
नई दिल्ली ।

9 डा० ए० सी० जोशी,
उप-कुलपति,
बनारस हिन्दूविश्वविद्यालय,
वाराणसी ।

10 डा० (कुमारी) कौमुदी,
उप वित्त सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

11 डा० शिव के० मित्रा,
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली ।

12 शिक्षा सचिव,
आन्ध्र प्रदेश,
हैदराबाद ।

13 श्री के० आर० बैनर्जी,
प्रिंसिपल,
राजकीय शिक्षा संस्थान,
बानीपुर, 24 परगना,

14 शिक्षा सचिव,
मध्यप्रदेश सरकार,
भोपाल ।

15 श्री एस० एस० बेदी,
सार्वजनिक शिक्षण निदेशक,
चंडीगढ़ ।

16 डा० आर० एच० दवे,
अध्यक्ष,
पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

17 श्री पी० एन० नातू (सदस्य सचिव)
सचिव,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

परिशिष्ट 8

1968-69 के लिए बजट अनुमान (लाख रुपयों में)

	विभाग	योजनेत्तर	योजना
1	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् मुख्य कार्यालय	13.36	23.30
2	प्रकाशन विभाग	9.45	22.00
3	राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (अलग से दिखाए गए विभागों को छोड़कर)	28.99	43.37
4	राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभाग		
	(क) क्षेत्र सेवा विभाग	3.62	33.09
	(ख) शैक्षिक सर्वेक्षण एकक	—	1.81
	(ग) विज्ञान शिक्षा विभाग	24.08	21.64
	(घ) पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग	14.38	5.42
	(ङ) मनोवैज्ञानिक आधार विभाग	6.29	6.85
	(च) अध्यापक शिक्षा विभाग	2.42	1.23
	(छ) श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभाग	8.48	0.65
	(ज) प्रौढ़ शिक्षा विभाग	2.95	3.81
	(झ) शैक्षिक प्रशासन विभाग	1.26	0.82
	(ञ) शिक्षा आधार विभाग	0.38	2.11
5	केन्द्रीय शिक्षा संस्थान	8.31	2.95
6	क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय		
	(क) अजमेर	15.42	13.72
	(ख) भोपाल	12.70	15.30
	(ग) भुवनेश्वर	15.03	13.73
	(घ) मैसूर	13.29	15.35
	योग	180.41	227.15
	रिक्त स्थानों के लिए तदर्थ कटौती 4.41 रुपये वर्ष में प्राप्ति 20.00 लाख रुपये स्वीकृत आंकड़े	24.41	—
		156.00	227.15

परिशिष्ट 9

1967-1968 में प्रकाशित व प्रकाशनाधीन पुस्तकों की सूचि

प्रकाशित पुस्तकें

1 सामाजिक अध्ययन की कक्षा पांच के लिए पाठ्यपुस्तक
2 मध्यकालीन भारत—माध्यमिक स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक
3 पोजीशन ऑफ हिस्ट्री इन इण्डिया
4 दि टीचर स्पीकस—वॉल्यूम 3
5 दि टीचर स्पीकस—वॉल्यूम 4
6 समर इन्स्टीट्यूट्स प्रोग्राम
7 रूरल डिस्कशन ग्रुप
8 समरी ऑफ रिकमन्डेशन्स ऑफ दि एजुकेशन कमीशन 1964-66
9 सम आसपैक्ट्स ऑफ एजुकेशन इन न्यूयॉर्क
10 समर स्कूल-कम-कोरसपोन्डैन्स कोर्स फॉर दि बैचलर ऑफ एजुकेशन डिग्री
11 ए स्टडी ऑफ इन्टीग्रेटिड सिलेबी
12 पेपर्स इन दी सोश्योलोजी ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया
13 इम्प्रूवमैण्ट ऑफ आर्ट एजुकेशन
14 अन्डरस्टैन्डिग क्लास रूम विहेवियर्स
15 दि स्कूल ऑन फूड फ्रन्ट
16 दि फेसेज ऑफ करेज
17 दि कॉन्सटिट्यूशन ऑफ इण्डिया फॉर यंग रीडर्स
18 पी० एस० एस० सी० फ़िजिक्स टैक्सट बुक
19 पी० एस० एस० सी० फिजिक्स, टीचर्स रिसोर्स बुक एण्ड गाइड पार्ट 1
20 पी० एस० एस० सी० फ़िजिक्स, टीचर्स रिसोर्स बुक एंड गाइड, पार्ट 2
21 ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, पार्ट 3
22 पी० एस० सी० फिज़िक्स, स्टुडैण्टस लेबोरेटरी गाइड
23 कैमिस्ट्री फॉर क्लास 7 (पाठ्यपुस्तक)
24 जनरल साईंस फॉर प्राइमरी स्कूल्स, बुक 1
25 जनरल साइंस फॉर प्राइमरी स्कूल्स, बुक 2
26 जनरल साइंस फॉर प्राइमरी स्कूल्स : ए हैण्डबुक ऑफ एक्टिविटीज, वॉल्यूम 1
27 फिजिक्स फॉर क्लास 6 (पाठ्यपुस्तक)
28 इकोनॉमिक ज्योग्राफी
29 प्रैक्टिकल ज्योग्राफ़ी
30 ज्योमैट्री फॉर क्लास 6 (पाठ्यपुस्तक)

31 ए टैक्स्टबुक ऑफ बायोलॉजी फार मिडिल स्कूल्स

32 टीचर्स गाइड फॉर दि टैक्स्टबुक ऑफ बायोलॉजी

33 करीकुलम गाइड फॉर दि टैक्स्टबुक ऑफ बायोलॉजी

34 एलीमेन्ट्स ऑफ मेकैनिकल इन्जीनियरिंग

35 एलीमेन्टस ऑफ इलैक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग

36 इन्जीनियरिंग ड्राइंग

37 वर्कशाप कैलकुलेशन थ्रू प्रेक्टिकल प्रॉबलम्स

38 वर्कशाप प्रेक्टिस—पार्ट 1

39 सैकन्ड ऑल इण्डिया एजुकेशनल सर्वे

40 दि यूनिवर्स

41 वेपन्स : ओल्ड एण्ड न्यू

42 राष्ट्र-भारती—भाग-1 (पाठ्यपुस्तक)

43 आओ हम पढ़ें (शिक्षक संस्करण)

44 आओ पढ़ें और समझें (पाठ्यपुस्तक)

45 राष्ट्रभारती—भाग-1 (शिक्षक संस्करण)

46 जीव-विज्ञान, भाग-1 (उच्चतर माध्यमिक कक्षा की पाठ्यपुस्तक)

47 जीव विज्ञान भाग-2 (उच्चतर माध्यमिक कक्षा की पाठयपुस्तक)

48 बाल साहित्य सूची—भाग-1

49 रसायन-विज्ञान (कक्षा सात के लिए पाठ्यपुस्तक)

50 भौतिकी—भाग-2 (पाठ्यपुस्तक)

51 अंकगणित-बीजगणित—भाग-2 (पाठ्यपुस्तक)

52 रेखागणित—भाग-2 (पाठ्यपुस्तक)

53 काव्य के अंग

54 एकांकी संकलन

55 एन्युअल रिपोर्ट 1965-66

56 ,, ,, 1966 67

57 वार्षिक रिपोर्ट 1965-66

58 ,, ,, 1966 67

59 एन० आई० ई० न्यूज लैटर—मार्च, 1967, जून 1967, सितम्बर 1967, दिसम्बर 1967

60 एन० आई० ई० जर्नल, मई, 1967, जुलाई 1967, सितम्बर 1967, नवम्बर 1967, दिसम्बर 1967

61 स्कूल साइंस, जून 1967, सितम्बर 1967, दिसम्बर 1967

62 इण्डियन एजुकेशनल रिव्यू, जुलाई 1967, जनवरी 1968

63 'हमारी दिल्ली' (कक्षा 3 के लिए पाठ्यपुस्तक)

64 हमारा देश भारत (कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक)

65 भारत और संसार (कक्षा 5 की पाठ्यपुस्तक)

66 सामाजिक अध्ययन दर्शिका (कक्षा 1 और 2 के लिए 42 चार्टों के सेट सहित)
67 रिपोर्ट ऑफ दि सेमिनार ऑन टैक्स्टबुक्स हेल्ड इन 1966
68 एनालिसिस ऑफ बेसिक स्कूल सिलेबी ऑफ डिफरेन्ट स्टेट्स
69 बेसिक एजुकेशन—ए फ्रैश लुक
70 स्ट्रक्चर ऑफ एलिमैन्टरी स्कूल करिकुलम इन डिफरैन्ट कन्ट्रीज
71 एन इन्टिग्रेटेड स्कूल सिलेबस
72 एन इवैलिएटिव स्टडी ऑफ ओरिएनटेशन लैसन प्लान्स
73 चैक-लिस्ट फॉर बेसिक स्कूल्स
74 रिपोर्ट ऑफ दि सेमिनार ऑन वर्क एक्सपीरिएंस
75 बेसिक एजुकेशन एण्ड दि एजुकेशन कमीशन—ए सिम्पोसियम
76 ब्रोशर ऑन क्रीएटिव ड्रामा
77 ए रिपोर्ट ऑफ वर्कशाप्स
78 नाइन ब्रोशर्स ऑन सैम्पल क्वश्चन पेपर्स फॉर मध्य प्रदेश, मैसूर एंड राजस्थान
79 थ्री ब्रोशर्स ऑन प्रैक्टिकल इक्जामिनेशन फॉर दि राजस्थान बोर्ड
80 स्कीम ऑफ कोम्प्रिहैन्सिव इन्टरनल असैसमैन्ट एण्ड मैन्युअल ऑफ इन्सट्रक्शन फॉर दि राजस्थान बोर्ड
81 रिपोर्ट ऑफ दि सेवन्थ कान्फ्रेंस ऑफ दि चेयरमैन एण्ड सेक्रेट्रीज ऑफ दि बोर्ड ऑफ सेकेन्डरी एजुकेशन
82 एक्जामिनेशन एब्सट्रैक्ट्स-नम्बर4
83 इवैलुएशन न्यूज़—वाल्यूम 3, नम्बर 3, वाल्यूम 4, नंबर्स 1 एंड 2
84 ड्रॉफ्ट ऑफ ए स्कीम ऑफ इक्जामिनेशन रिफॉर्म इन ट्रेनिंग कालेजेज
85 'मैं जीवन दे रहा हूं, तुम क्या दोगे'—(नव-साक्षरों के लिए)
86 फन्कशनल लिटरेसी एण्ड ए फैक्ट इन इकॉनामिक डेवलपमेन्ट—ए रिपोर्ट ऑफ ए सिम्पोसियम
87 नव-साक्षरोपयोगी हिन्दी साहित्य—संकलित सूची
88 रिपोर्ट ऑफ इवैलिएटिव स्टडी ऑफ एन ऐडल्ट लिटरेसी प्रोजैक्ट इन दिल्ली
89 क्लोस्ड सरकट टी० वी० फॉर सर्जिकल आपरेशन (मोनोग्राफ)
90 आडियो-विजुअल एड्स फॉर साइन्टिफिक एण्ड टैक्नीकल एजुकेशन (मोनोग्राफ)
91 ऐफिशैन्सी ऑफ एजुकेशन इन इण्डियन स्कूल्स
92 आडो-विजुअल मोनोग्राफ सीरीज नम्बर 9
93 आडो-विजुअल मोनोग्राफ सीरीज नम्बर 10
94 मीडियम ऑफ एजुकेशन
95 आडो-विजुअल कम्युनिकेशन वाल्यूम-2
96 टाक विद चाक
97 प्रिपेअर योर ओन स्लोव्स (फिल्म पट्टियां)
98 हाऊ टू मेक इट योअरसेल्फ—चाक-कम-डिस्प्ले बोर्ड
99 आडो-विजुअल लाइब्रेरीज देअर इम्पॉर्टेन्स

100 कम्पोजीशन ऑफ फिल्म कैटालॉग

101 जनरल साइन्स सिलेबस फॉर क्लासेस 1 टू 5

102 जनरल साइन्स--टीचर्स हैन्डबुक ऑफ एक्टीविटीज (वॉल्यूम 2)

103 फ़िजिक्स फॉर क्लास 7 एक्सपेरिमेन्टल एडीशन

104 कैमिस्ट्री फॉर क्लास 7 ,, ,, ,,

105 बायोलाजी पार्ट 1 ,, ,, ,,

106 बायोलाजी पार्ट 2 ,, ,, ,,

107 मैथेमेटिक्स पार्ट 1 ,, ,, ,,

108 मैथेमेटिक्स पार्ट 2 ,, ,, ,,

109 जीव-विज्ञान भाग 2 (प्रायोगिक संस्करण)

110 अंकगणित-बीजगणित भाग 1 ,, ,,

111 अंकगणित-बीजगणित भाग 2 ,, ,,

112 दि एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ एजुकेशन इन राजस्थान

113 ,, ,, ,, हिमाचल प्रदेश

114 ,, ,, ,, मद्रास

115 ,, ,, ,, म्यूनिसिपल कार्पोरेशन ऑफ दिल्ली

116 बेनिफिट-कास्ट एनालिसिस ऑफ एजुकेशनल प्रोजेक्टस--ए रिव्यु ऑफ रिसर्च

117 थ्योरी इन एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन

118 रिपोर्ट ऑफ ट्रेनिंग कोर्स इन रिसर्च टैकनिक्स ऑफ वेस्टेज एण्ड स्टैगनेशन

119 रिपोर्ट ऑफ दि ट्रेनिंग कोर्स फॉर दि प्रिंसिपल्स ऑफ--सेकेन्डरी टीचर्स ट्रेनिंग कालेजेज, इस्टर्न जोन

प्रकाशन जो प्रेस में है

1 कैमिस्ट्री टैक्स्टबुक फॉर सेकेन्डरी स्कूल्स

2 जनरल साइन्स फॉर यू

3 संस्कृतोदयः (पाठ्यपुस्तक)

4 लीजेन्ड्स ऑफ इण्डिया

5 अकबर

6 जनरल साइन्स टैक्स्टबुक, कक्षा तीन (पुनर्मुद्रण)

7 जनरल साइन्स टैक्स्टबुक--कक्षा चार ,,

8 एंशिएंट इंडिया

9 लाइफ एण्ड वर्क ऑफ मेघनाद साहा

10 इंग्लिश टैक्स्टबुक क्लास 3

11 फूड फॉर ऑल

12 वर्कशाप प्रैक्टिस पार्ट 2

13 फिजिकल ज्योग्राफी फॉर सैकेन्डरी स्कूल्स

14 टीचिंग होम साइन्स : ए हैण्डबुक फॉर टीचर्स
15 बुक कीपिंग एण्ड एकाऊंटेन्सी
16 फर्स्ट इयर बुक ऑफ एजुकेशन—पार्ट 2 (संशोधित संस्करण)
17 थर्ड ,, ,, एजुकेशनल रिसर्च
18 कैमिस्ट्री टैक्स्टबुक फॉर क्लास 7
19 टीचर्स गाइड फॉर कैमिस्ट्री टैक्स्टबुक, क्लास 7
20 करिकुलम ,, ,, क्लास 7
21 जनरल साइन्स—ए हैण्डबुक ऑफ एक्टीविटीज फार क्लासेज 1 टू 5, वाल्यूम 3
22 फिजिक्स टेक्स्टबुक फॉर सेकेन्डरी स्कूल्स
23 अलजेब्रा टैक्स्टबुक फॉर सेकेन्डरी स्कूल्स, पार्ट 1
24 ,, ,, ,, ,, पार्ट 2
25 ऐलिमैंटस ऑफ प्रोबेबिलिटी
26 ड्रामा इन स्कूल्स
27 आओ पढ़ें और सीखें (कक्षा 4 के लिए पाठ्यपुस्तक)
28 आओ पढ़ें और खोजें (कक्षा 5 के लिए पाठ्यपुस्तक)
29 राष्ट्र-भारती—भाग-2 (कक्षा 7 के लिए पाठ्यपुस्तक)
30 राष्ट्र-भारती—भाग-3 (कक्षा 8 के लिए पाठ्यपुस्तक)
31 मेरी अभ्यास पुस्तिका—भाग-1
32 मेरी अभ्यास पुस्तिका—भाग-2
33 मेरी अभ्यास पुस्तिका भाग-3
34 गद्य संकलन (पुनर्मुद्रण)
35 काव्य संकलन (पुनर्मुद्रण)
36 एकांकी संकलन ,,
37 काव्य के अंग ,,
38 बाल साहित्य सूची भाग-2
39 हमारी दिल्ली (शिक्षक संस्करण)
40 हमारा देश भारत (शिक्षक संस्करण)
41 भारत और संसार (शिक्षक संस्करण)
42 जीवनी संकलन
43 कहानी संकलन
44 इंग्लिश ट्रानस्लेशन ऑफ सोशल स्टडीज टेक्स्टबुक फॉर क्लासेज 1 टू 5
45 सोशल स्टडीज हैण्डबुक्स फॉर क्लासेज 3 टू 5
46 सोशल स्टडीज टेक्स्टबुक फॉर हायर सेकेण्डरी क्लासेज
47 इकोनोमिक ज्योग्राफी फॉर हायर सेकेन्डरी क्लासेज
48 फिजिकल ज्योग्राफी फॉर हायर सेकेन्डरी क्लासेज
49 रीडिंग्स इन बेसिक एजुकेशन वाल्यूम 1 एण्ड 2
50 बेसिक एजुकेशन एब्स्ट्रैक्ट्स 1963-64

परिशिष्ट 10

समीक्षा समिति के सदस्यगण

1 डा० बी० डी० नाग चौधुरी (अध्यक्ष)
सदस्य (विज्ञान)
योजना आयोग,
नई दिल्ली ।

2 श्री पी० एन० किरपाल
शिक्षा सलाहकार एवं सचिव
भारत सरकार,
शिक्षा मन्त्रालय,
नई दिल्ली ।

3 श्री ए० ई० टी० बैरो
संसद सदस्य,
नई दिल्ली ।

4 प्रो० एन० वी० सुब्बा राव,
प्रिंसिपल,
विज्ञान विश्वविद्यालय कालेज,
ओस्मानिया विश्वविद्यालय,
हैदराबाद ।

5 श्री एल० एस० चन्द्रकान्त,
संयुक्त शिक्षा सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

6 डा० एम० एस० गोरे,
निदेशक,
सामाजिक विज्ञान, टाटा संस्थान,
बम्बई ।

7 श्री जे० पी० नाइक,
सलाहकार, शिक्षा मन्त्रालय
नई दिल्ली ।

8 डा० व्ही० जी० भिड़े,
उप निदेशक,
राष्ट्रीय प्रयोगशाला,
नई दिल्ली ।

9 डा० शिब० के० मित्रा (सदस्य-सचिव)
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली ।

11 समिति के संदर्भ नियम

(क) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् की क्रियाओं की प्रगति की ; विशेष रूप से ; शैक्षिक अनुसन्धान और विकसित कार्यक्रमों की, सेवाओं से पूर्व और सेवाकालीन अध्यापकों के प्रशिक्षण की, अध्यापक शिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों की और प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के लिए विस्तार सेवाओं की समीक्षा करना था ।

(ख) सामान्य रूप से और विशेष रूप से शैक्षिक समस्याओं पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् कार्यक्रमों के संघटन का मूल्यांकन, राज्य सरकारें कहाँ तक, मुख्य कार्यक्रम जैसे पाठ्यक्रम विकास, पाठ्यपुस्तकें, परीक्षा सुधार, विज्ञान शिक्षा, स्कूल शिक्षा के स्वरूप और स्तर को सुधार रहे हैं ।

(ग) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के विकास की समीक्षा और मूल्यांकन करना कि कहां तक उनके द्वारा आयोजित संगामी पाठ्यक्रम, विज्ञान, कला, व्यवसाय और दूसरे अन्य क्षेत्रों में अध्यापक शिक्षा में सुधार ला रहा है ।

(घ) परिषद् के अधीन एककों/संस्थानों के प्रशासिक और शैक्षिक संस्थापन, संगठनों के पुर्नसंगठन के लिए सिफारिशों सहित हमारी शैक्षिक आवश्यकताओं से सम्बन्धित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान, और प्रशिक्षण परिषद् के भविष्यत विकास के लिए बृहत् मार्गदर्शन रेखाओं को खींचने के लिए;

(ङ) अग्रिम पांच और दस वर्षों में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के लिए आवश्यक आर्थिक व्यवस्था के बृहत् प्राक्कलन को तैयार करने के लिए;

(च) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के वर्तमान और भविष्यत कार्यक्रमों के अन्य पहलुओं पर रिपोर्ट देने के लिए जो कि भारतीय शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण हैं ।